दैनिक

जयपुर,सीकर, झुंझुनूं, चुरू,नागौर एवं अलवर से एक साथ प्रकाशित

जयपुर टाइम्स

नई सोच नई रफ्तार

n वर्ष : 10 अंक : 191 ■ डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी / 007/2017-19 जयपुर, रविवार 3 अगस्त, 2025 ■ RNI.No.RAJHIN/2016/70162 ■ मूल्य : 2.00 रुपए ृष्ठ : 8+St

बागड़ को धार्मिक और पर्यटन सर्किट में विकसित करने की तैयारी : सीएम शर्मा

बांसवाड़ा में विपक्षी दलों पर गरजे मुख्यमंत्री और कहा युवाओं को बरगलाने वालों को छोड़ेंगे नहीं

जिनके बच्चे अच्छे स्कूलों में पढ़ते हैं वे अपने स्वार्थ के लिए युवाओं को आपस में लड़ा रहे

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने आज बांसवाड़ा में आयोजित विशाल कार्यक्रम में कांग्रेस पार्टी पर निशाना साधा और नाम लिए बिना भारत आदिवासी पार्टी की गतिविधियों को भी कटघरे में खड़ा किया और कहा कि जिनके बच्चे अच्छे स्कूलों में पढ़ते हैं, वे जाति और धर्म के नाम पर अपनी राजनीति चमकाने के लिए युवाओं को बरगला रहे हैं इसलिए उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि उन्हें उन लोगों से बचना चाहिए जो अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए युवाओं को आपस में लड़ा रहे हैं उन्होंने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार और राजस्थान सरकार दोनों मिलकर जनजाति समुदाय के लोगों के सर्वांगीण विकास के लिए युद्ध स्तर पर काम कर रही हैं उन्होंने कहा है कि प्रदेश में डबल इंजन की सरकार ने बागड़ क्षेत्र के विकास के लिए कई बड़ी योजनाएं शुरू की है, यह पूरा इलाका गुजरात की सीमा से जुड़ा हुआ है इसलिए यह पूरा इलाका गुजरात और यहां की सभ्यता संस्कृति का अद्भुत संगम है तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी गुजरात के लंबे समय तक मुख्यमंत्री रहे और मोदी भी गुजरात के रहने वाले हैं इसलिए गुजरात की सीमा से लगे राजस्थान के जिलों के लोगों की समस्याओं को अच्छी तरह से जानते हैं इसीलिए उन्होंने बागड़ क्षेत्र के विकास के लिए कई बड़े कार्यक्रम शुरू किए हैं और राजस्थान सरकार ने भी केंद्र की मोदी सरकार के निर्देशन में बागड़ क्षेत्र के विकास के लिए कई योजनाएं शुरू की है जिनका फायदा यहां की जनजाति के लोगों को मिल रहा है उन्होंने कहा कि कुछ लोग ऐसे हैं जो सिर्फ झूठ आधारित राजनीति करते हैं और कांग्रेस पार्टी ने हमेशा गरीबी मिटाने का वादा किया लेकिन गरीबी मिटाने के बजाय उन्होंने गरीबों को मिटाने का काम किया लेकिन जब से केंद्र में मोदी सरकार का गठन हुआ और नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने तब से पूरे देश में जनजाति समुदाय के लोगों के कल्याण के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएं शुरू की गई जिसका फायदा राजस्थान और अन्य राज्यों के जनजाति समुदाय के लोगों को मिल रहा है उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी गरीब, मजदूर, किसान और महिलाओं के समग्र विकास के लिए युद्ध स्तर पर काम कर रहे हैं नरेंद्र मोदी ने पहले ही कहा था कि मैं ना तो खाऊंगा और ना खाने दूंगा, इस बयान पर मोदी प्रधानमंत्री बनने के पहले दिन से ही कायम है, पहले जो पैसा गरीब मजदूर और किसानों के लिए केंद्र से जारी होता था, वह पैसा बीच में ही बिचौलिए खा जाते थे लेकिन अब किसान मजदूर और महिलाओं के लिए जारी होने वाला पैसा सीधे उनके बैंक खाते में जाता है जो मोदी सरकार की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है उन्होंने कहा कि आज भी पूरे देश में प्रधानमंत्री किसान सम्मन निधि योजना की 20वीं किस्त का पैसा किसानों के बैंक अकाउंट में सीधा जमा हुआ राजस्थान में भी 76 लाख किसानों के बैंक अकाउंट में आज प्रधानमंत्री किसान सम्मान योजना की 20वीं किस्त का पैसा जमा हुआ है मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सभा में मौजूद लोगों से कहा कि आज जिस जिस व्यक्ति की मोबाइल की घंटी किसान सम्मन निधि का पैसा जमा होने के बाद बजी है तो वह अपने दोनों हाथ ऊपर करें, यहसुनकर वहां सभा में बैठे हजारों लोगों ने अपने दोनों हाथ ऊपर किया जो यह बता रहा था कि प्रदेश के किसानों को प्रधानमंत्री किसान सम्मन निधि की 20वीं किस्त का पैसा शनिवार को मिल गया द्य

नाम लिए बिना भारत आदिवासी पार्टी के नेताओं को कटघरे में खड़ा किया

अपने भाषण के दौरान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने आदिवासी पार्टी के नेताओं का नाम तो नहीं लिया और ना ही पार्टी का नाम लिया लेकिन उन्होंने सभा में मौजूद लोगों से कहा कि आपने जिन लोगों पर विश्वास करके वोट दिया उनका चेहरा किस तरह से सामने आया वह सब अपने देख लिया, सभा में मौजूद लोगों में यह चर्चा रही की शर्मा ने यह बात भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की ओर से बीएपी आदिवासी पार्टी के एक विधायक को रिश्वत के आरोप में गिरफ्तार करने के परिपेक्ष में कही है हालांकि मुख्यमंत्री ने सभा में विधायक का नाम नहीं लिया था और ना ही पार्टी का लेकिन सभा में मौजूद लोग सब समझ गए इसी तरह से भजनलाल शर्मा ने कहा कि जिन लोगों के बच्चे अच्छे स्कूलों में पढ़ते हैं जिन सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों के बच्चे अच्छे स्कूलों में पढ़ते हैं वे सब अपने निजी स्वार्थ के लिए युवाओं को पथभ्रष्ट कर रहे हैं युवाओं को आपस में लडवा रहे हैं ताकि उनके बच्चे और उनके परिवार तो अच्छा जीवन जिए और गरीब मजदूर व्यक्ति के बच्चे पढ़ लिख कर आगे नहीं बढ़ पाए उन्होंने कहा कि जो अपने स्वार्थ के लिए युवाओं को आपस में लड़ा रहे हैं उनसे लोगों को सावधान रहना चाहिए क्योंकि ऐसे लोग गरीब मजदूर किसान और आदिवासी समाज का कल्याण नहीं चाहते वे सिर्फ अपनी राजनीति रोटियां देखना चाहते हैं उन्होंने कहा कि जो युवाओं को आपस में लड़ा रहे हैं उन्हें वे छोड़ेंगे नहीं । शर्मा के इस बयान को लेकर राजनीतिक विश्लेषकों में भी यह चर्चा है कि भारत आदिवासी पार्टी जिस तरह से भील प्रदेश के गठन की मांग कर रही है और भारत आदिवासी पार्टी के नेता भील और आदिवासी समुदाय को भी प्रदेश के गठन को लेकर एकजुट करने का प्रयास कर रहे हैं इसी परिपेक्ष में भजनलाल शर्मा ने यह बयान दिया और कहा कि केंद्र की मोदी सरकार और प्रदेश सरकार दोनों सरकारी जनजाति समुदाय के सर्वांगीण विकास के लिए कृत संकल्प हैं और कई योजनाएं संचालित की गई हैं जिनका फायदा आदिवासी समुदाय के लोगों को मिल भी रहा है

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कहना है जब तक किसान का विकास नहीं होगा तब तक देश का विकास नहीं होगा

सभा में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शुरू से ही कहते हैं कि जब तक देश में किसानों का विकास नहीं होगा तब तक देश का विकास नहीं होगा इसलिए प्रधानमंत्री बनने के पहले दिन से ही नरेंद्र मोदी ने देश के किसानों की हालत सुधारने और खेती की दशा सुधारने के लिए कई बड़े निर्णय लिए उन्होंने कहा कि खाद, कीटनाशक दवाइ अच्छे बीज इत्यादि किसानों को डबल इंजन की सरकार की ओर से सुगमता से उपलब्ध करवाई जा रहे हैं इतना ही नहीं कृषि जिंसों की लागत में 50% जोड़कर समर्थन मूल्य निर्धारित किए जा रहे हैं किसानों को उनकी उपज का अच्छा पैसा मिले इसका पूरा ध्यान रखा जा रहा है भारी सब्सिडी दी जा रही है उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री किसान सम्मन निधि योजना के तहत केंद्र सरकार की ओर से ?6000 की राशि दी जा रही है इसमें राजस्थान सरकार ने अपने स्तर पर 3000/ की राशि और दे रही है इस तरह से 9000/ राजस्थान की किसानों को किसान सम्मन निधि के राशि के तौर पर दिया जा रहा है और राजस्थान सरकार बहुत जल्दी ही किसान सम्मन निधि की राशि को 12000 रुपए तक निर्धारित करेगी उन्होंने कहा कि किसानों को सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए भी प्रेरित किया जा रहा है इसके लिए किसानों को आवश्यक उपकरण और सुविधाएं उपलब्ध करवाई जा रही है सौर ऊर्जा के माध्यम से किसान अपनी बिजली की डिमांड को पूरा कर सकेगा और अपनी डिमांड पूरी करने के बाद जो बिजली उसके पास बच जाएगी उसको बेचकर पैसा हासिल करेगी जिसकी वजह से उसकी आर्थिक हालात और मजबूत होगी उन्होंने कहा कि राजस्थान सरकार किसानों को अब अन्नदाता के बाद उन्हें ऊर्जा के क्षेत्र में भी पारंगत करना चाहती है उन्होंने कहा कि प्रदेश के कई जिलों में अभी दिन में बिजली उपलब्ध करवाई जा रही है लेकिन वर्ष 2027 तक प्रदेश के सभी किसानों को दिन में बिजली उपलब्ध करवाई जाएगी ताकि किसानों को ठंड के दिनों में रात्रि के समय खेतों में पानी देने के लिए परेशान ना होना पड़े उन्होंने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार और राजस्थान की सरकार दोनों किसान और खेती के सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता देते हैं

बांगड़ क्षेत्र को धार्मिक और पर्यटन सर्किट के रूप में विकसित करने के लिए बना रही है डीपीआर

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बांसवाड़ा में शनिवार को प्रधानमंत्री किसान सम्मन निधि योजना की 20वीं किस्त जारी करने के राज्य स्तरीय कार्यक्रम में जोड़ देकर कहा कि प्रदेश में डबल इंजन की सरकार है और केंद्र की मोदी सरकार के सहयोग से प्रदेश के पूरे बागड़ इलाके को विकसित करने के लिए और यहां के जनजाति समुदाय के लोगों के कल्याण के लिए कई योजनाएं शुरू की गई है, उन्होंने कहा कि पूरे बागड़ क्षेत्र में ऐतिहासिक धार्मिक स्थल और पर्यटक स्थल हैं जिन्हें देश और विदेश के पर्यटकों से जोड़ने के लिए सरकार युद्ध स्तर पर काम कर रही है इसके लिए पूरे क्षेत्र को धार्मिक और पर्यटन सर्किट के रूप में विकसित करने के लिए डीपीआर बनाई जा रही है जिसके माध्यम से पूरे धार्मिक स्थलों और पर्यटन स्थलों का विकास किया जाएगा ताकि यह पूरा इलाका पर्यटन के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान बना सके इस तरह से इस इलाके के पर्यटन और धार्मिक सर्किट के रूप में स्थापित होने से यहां रोजगार के अवसरों में भी जोरदार वृद्धि होगी और यह पूरा इलाका चमकउठेगा द्य

बांसवाड़ा में सभा आयोजित करने के पीछे सत्ता और संगठन की है बड़ी रणनीति, इलाके के तमाम छोटे बड़े नेता रहे मौजूद

राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि बांसवाड़ा में शनिवार को सभा आयोजित करके भजनलाल सरकार ने इलाके में अपनी लोकप्रियता और पकड़ को मजबूत करने की अच्छी कोशिश की है सभा में इलाके के सभी छोटे-बड़े नेता मौजूद थे सभा में राजस्थान सरकार के मंत्री बाबूलाल खराड़ी जोराराम कुमावत, कांग्रेस से बीजेपी में आए आदिवासी समाज के गद्दाबर नेता महेंद्रजीत सिंह मालवीय सहित इलाके के पार्टी के मौजूदा विधायक पूर्व विधायक और पूर्व सांसद भी मौजूद रहे सभा में इलाके के सभी छोटे बड़े नेता नजर आए जो यह दिखाता है कि भारत आदिवासी पार्टी की ओर से भील प्रदेश के गठन की मांग को लेकर आंदोलन की जो तैयारी की जा रही है उस आंदोलन का करारा जवाब देने के लिए भारतीय जनता पार्टी के छोटे-बड़े सभी नेता अब एक जाजम पर आ गए हैं बांसवाड़ा में राज्य स्तरीय बड़ा कार्यक्रम आयोजित करने के पीछे सत्ता और संगठन की एक यह एक बड़ी रणनीति का हिस्सा है क्योंकि भील प्रदेश की मांग का मुद्दा भारत आदिवासी पार्टी की ओर से जोरदार तरीके से उठाया हुआ है इसलिए क्षेत्र के लोगों में केंद्र सरकार और राज्य सरकार की ओर से संचालित की जा रही योजनाओं के बारे में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने खुद विस्तार से जानकारी दी एक-एक योजनाओं के बारे में बताया और लोगों से यह भी कहा कि बहुत से लोगों को केंद्र सरकार और राजस्थान सरकार की ओर से संचालित की जा रही योजनाओं की जानकारी नहीं होती इसलिए इलाके के प्रबुद्ध नागरिकों, जनप्रतिनिधियों और भारतीय जनता पार्टी के छोटे बड़े सभी नेताओं की यह जिम्मेवारी है कि जिन्हें योजनाओं की जानकारी नहीं होती है उन्हें योजनाओं के बारे में बताया जाए ताकि वह योजनाओं का फायदा उठा सके द्य

मुख्यमंत्री भजनलाल ने विकास कार्यों को गिनाया और कहा कि सरकार ने वन क्षेत्र में पट्टा देना भी किया है शुरू

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सभा में केंद्र की मोदी सरकार और प्रदेश सरकार की ओर से जनजाति समुदाय के विकास के लिए तथा पूरे बांगड़ क्षेत्र के विकास के लिए जो जो योजनाएं संपादित की जा रही है उन सभी योजनाओं का जिक्र किया और कहा कि पिछले 19 महीना में सरकार ने बागड़ क्षेत्र के विकास के लिए बड़ी-बड़ी योजनाएं समर्पित की है यहां के धार्मिक स्थलों और पर्यटन स्थलों को विकसित करने के लिए बजट में राशि सुनिश्चित की गई चाहे आंगनबाड़ी केंद्र खोलने का मामला हो चाहे छात्रावास खोलने का मामला हो चाहे शिक्षा, चिकित्सा, सड़क हर क्षेत्र में विकास कार्यों के लिए बजट में प्राथमिकता दी गई है उन्होंने यह भी कहा कि वन क्षेत्र में लोगों को पट्टे बांटे जा रहे हैं शर्मा ने यह भी कहा कि खुद नरेंद्र मोदी इस पूरे इलाके को डेवलप करने का संकल्प लिए हुए हैं और संकल्प को पूरा करने के लिए प्रदेश की डबल इंजन की सरकार तन मन से जुटी हुई है क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का इस इलाके से दिल का रिश्ता है

दिल्ली में भजनलाल शर्मा की केंद्रीय नेताओं से मुलाकात

केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी से मिले भजन लाल शर्मा

भाजपा के बड़े नेताओं सेराजनीतिक नियुक्तियों को लेकर बातचीत होने की चर्चा, मंत्रिमंडल के फेरबदल और विस्तार को लेकर भी बातचीत होने की खबर

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा शनिवार को फिर से बांसवाड़ा में सभा को संबोधित करने के बाद उदयपुर होते हुए सीधे दिल्ली पहुंचे । भजनलाल शर्मा अभी हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कई केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात करके जयपुर लौटे थे लेकिन फिर अचानक शनिवार को वे दिल्ली चले गए। शर्मा के अचानक दिल्ली जाने के बाद राजस्थान के राजनीतिक गलियारों और शासन सचिवालय के गलियारों में चर्चा होने लगी है कि अब बहुत जल्दी ही प्रदेश में राजनीतिक नियुक्तियां का काम भी शुरू होने जा रहा है इसके अलावा पहले यह माना जा रहा था कि मानसून सत्र के बाद राजस्थान मंत्रिमंडल का फेर बदल और विस्तार राजस्थान विधानसभा के मानसून सत्र के बाद ही होगा लेकिन अब यह माना जा रहा हैकि मंत्रिमंडल का विस्तार मानसून सत्र के पहले ही हो सकता है

जानकारी के अनुसार भजन लाल शर्मा अपने पिछले दिल्ली दौरे में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री जेपी नड्डा सहित

कुछ और केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात नहीं कर पाए थे इसलिए इस बार भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा से उनकी मुलाकात होने जा रही है, राष्ट्रीय अध्यक्ष से भजनलाल शर्मा की यह मुलाकात कहीं ना कहीं राजस्थान में राजनीतिक नीतियों के संदर्भ में खास मानी जा रही है प्रदेश भाजपा के उच्च सदस्य सूत्रों के अनुसार भी जानकारी मिली है कि भजनलाल शर्मा कुछ बड़े पार्टी के नेताओं को बड़ी राजनीतिक नियुक्तियां देना चाहते हैं, उनमें राजेंद्र राठौड़ और सतीश पूनिया सहित कई नेताओं के नाम चर्चा में है हालांकि सतीश पूनिया को भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष की नई टीम में जगह मिलने की पूरी संभावना है इसलिए शायद सतीश पूनिया को राजनीतिक नियुक्ति नहीं मिले राजेंद्र सिंह राठौर जैसे नेताओं को बड़े पदों पर नियुक्ति देकर सीनियर नेताओं के अनुभव का फायदा उठाने का प्रयास प्रदेश सरकार जरूर करना चाहेगी इसी सिलसिले में भजनलाल शर्मा का यह दिल्ली दौरा बताया जा रहा है हालांकि कहा यह भी जा रहा है कि पिछले दौर में जिन केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात नहीं हो पाई थी उन मंत्रियों से मुलाकात करके राजस्थान के लिए उनसे मदद मांग सकते हैं इसलिए मुख्यमंत्री के इस दिल्ली दौरे के बाद राजनीतिक नियुक्तियों के लिए प्रदेश भाजपा के जो नेता मन में सपना सजोए हुए हैं और जो अपने-अपने पार्टी के केंद्रीय संपर्क सूत्रों के माध्यम से राजनीतिक नियुक्ति हासिल करने के प्रयास में पिछले कुछ दिनों से जुटे हुए हैं उनकी निगाहें अब दिल्ली दौरे में भजनलाल शर्मा की जिन-जिन नेताओं से बातचीत हो रही है उस बातचीत पर जरूर टिक गई है अब यह आने वाला समय ही बताएगा की प्रदेश में राजनीतिक नियुक्तियां का दौरा कब शुरू होगा लेकिन संगठन से जुड़े बड़े नेताओं का भी मानना है कि प्रदेश में राजनीतिक नियुक्तियों का दौर भी जल्दी से जल्दी शुरू होना चाहिए ताकि पार्टी के संगठन से जुड़े नेताओं और पार्टी के कार्यकर्ताओं को भी यह महसूस होगा कि संगठन में काम करने वाले नेताओं को सरकार प्रोत्साहित और इनाम दे रही है ।

केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी से मिले भजन लाल शर्मा

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने दिल्ली पहुंचने के बाद सबसे पहले केंद्रीय मंत्री हरदीप सिंह पुरी से मुलाकात की है हरदीप सिंह पुरी के पास केंद्रीय आवास और शहरी विकास कार्य तथा प्राकृतिक गैस जैसे बड़े मंत्रालय हैं इसलिए भजनलाल शर्मा की इस मुलाकात को प्रदेश के विकास के लिए काफी अच्छा माना जा रहा है, बातचीत के दौरान मुख्यमंत्री शर्मा ने राजस्थान सरकार की ओर से शहरों के विकास के लिए केंद्र सरकार के सहयोग से जो परियोजनाएं चल रही है उनके बारे में विस्तार से जानकारी दी और प्रत्येक परियोजना की प्रगति की रिपोर्ट पुरी के समक्ष रखी है तथा वित्त संबंधी आवश्यकताओं के बारे में भी पूरी को अवगत करवाया गया है मुलाकात के दौरान राजस्थान के विकास को लेकर पूरे ने हर संभव मदद देने का भरोसा दिलाया है इसलिए जिस मकसद से भजन लाल शर्मा ने पुरी से मुलाकात की उनका वह मकसद कहीं ना कहीं पूरा हो गया है । शनिवार की रात भजन लाल शर्मा कुछ और केंद्रीय मंत्रियों से और पार्टी के संगठन से जुड़े बड़े नेताओं से मुलाकात करने वाले हैं ।

राजस्थान पर्यटन को टीटीएफ में मिला उत्कृष्टता पुरस्कार, डिप्टी सीएम दिया कुमारी की रणनीति रंग ला रही

जयपुर(कासं.) गांधीनगर (अहमदाबाद) स्थित गांधी एक्सहिबिशन और कन्वेंशन सेंटर में आयोजित ट्रेवल एंड टूरिज्म फेस्टिवल में राजस्थान पर्यटन विभाग को डिजाइन एवं सजावट के लिए उत्कृष्टता पुरस्कार से नवाजा गया। यह पुरस्कार फेयरफेस्ट मीडिया लिमिटेड के अध्यक्ष एवं सीईओ संजीव अग्रवाल ने राजस्थान पर्यटन के अतिरिक्त निदेशक आनंद त्रिपाठी और सोनिया यादव को प्रदान किया। तीन दिवसीय इस मेले का आयोजन 31 जुलाई से 2 अगस्त तक हुआ, जिसमें देशभर के पर्यटन से जुड़े प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। भारत के सबसे बड़े ट्रैवल शो नेटवर्क द्वारा आयोजित इस महोत्सव में राजस्थान मंडप की भव्यता, सांस्कृतिक प्रस्तुति और पेशेवर साज-सज्जा ने सबका ध्यान आकर्षित किया। राजस्थान के प्रमुख शासन सचिव पर्यटन, कला एवं संस्कृति राजेश यादव ने बताया कि उप मुख्यमंत्री एवं पर्यटन मंत्री दिया कुमारी के नेतृत्व में राज्य सरकार घरेलू पर्यटन को प्रोत्साहित करने की नीति पर लगातार कार्य कर रही है। उन्होंने बताया कि टीटीएफ जैसे आयोजनों में भागीदारी कर राजस्थान देशभर के प्रमुख शहरों में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रहा है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि इस वर्ष राजस्थान मंडप में राज्य के 42 निजी ट्रैवल ट्रेड प्रतिनिधियों ने भाग लेकर प्रदेश की पर्यटन क्षमता को राष्ट्रीय मंच पर प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। यह भागीदारी निजी और सरकारी क्षेत्र के बीच सहयोग की मिसाल है। राज्य सरकार का मानना है कि इस तरह के सम्मेलनों में सहभागिता और पुरस्कार राज्य की अंतरराष्ट्रीय पहचान को मजबूत करते हैं और आने वाले समय में राजस्थान को वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर सिरमौर बनाने के लिए यह कदम मील का पत्थर साबित होंगे।

अलवर जयपुर टाइम्स

जयपुर, रविवार
3 अगस्त, 2025

केंद्रीय वन मंत्री ने 50 ऑटो टिपर (कचरा संग्रहण वाहन) का किया लोकार्पण

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में शुरु हुआ स्वच्छ भारत मिशन अभियान सामाजिक परिवर्तन की मिसाल

स्वच्छता व स्वच्छ परिवेश ही समृद्धि का मार्ग है - केंद्रीय मंत्री यादव

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री एवं अलवर सांसद भूपेन्द्र यादव शनिवार को प्रताप ऑडिटोरियम से नगर निगम द्वारा शहर की स्वच्छता को बेहतर करने के उद्देश्य से पर्यावरण संरक्षण शुल्क निधि के अंतर्गत घर-घर कचरा संग्रहण हेतु क्रय किए गए नए 50 ऑटो टिपर (कचरा संग्रहण वाहन) का लोकार्पण कर उन्हें हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने अभिनव पहल करते हुए नगर निगम की सफाई कर्मचारी पूनम चावरिया से ऑटो टिपर का पूजन करवाया तथा 5 स्वच्छता सखियों को स्वच्छता किट भेंट किए एवं उपस्थित जनसमूह को स्वच्छता की शपथ दिलाई।

स्वच्छ भारत मिशन सामाजिक परिवर्तन का बडा सूत्रापात

केंद्रीय वन मंत्री यादव ने अपने संबोधन में कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2014 में कार्यभार संभालते ही गांधी जयन्ती 2 अक्टूबर से स्वच्छ भारत मिशन का आगाज किया था, जिसके सार्थक परिणाम दृष्टिगोचर हो रहे हैं। इस अभियान की प्रशंसा विश्व स्वास्थ्य संगठन ने करते हुए कहा कि यह भारत में सामाजिक परिवर्तन का बहुत बडा सूत्रपात है।

एनसीआर का सबसे साफ-सुथरा शहर बनने की दिशा में बढा अलवर

उन्होंने कहा कि स्वच्छता और स्वच्छ शहर समृद्धि का मार्ग है, इसको मध्यनजर रखते हुए अलवर शहर को स्वच्छ व साफ-सुथरा शहर बनाने व एनसीआर क्षेत्र में स्वच्छता में टॉप रैंकिंग लाने के लिए सार्थक प्रयास किए जा रहे हैं जिसके तहत केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने पर्यावरण संरक्षण शुल्क निधि (ईपीसी फण्ड) की 4.50 करोड रूपये की राशि से नगर निगम अलवर को 50 ऑटो टिपर (कचरा संग्रहण वाहन) उपलब्ध कराए गए हैं। इनकी क्षमता शहर में संचालित ऑटो टिपरों से डेढ गुना अधिक है। इससे शहर की साफ-सफाई व्यवस्था में कचरे को पृथक-पृथक संग्रहण करने में सुविधा मिलेगी।

स्वच्छता को संस्कार में लाने के लिए जन सहभागिता जरूरी

उन्होंने कहा कि शहर के कचरा प्रबंधन में सार्वजनिक भागीदारी पर बल देते हुए कहा कि घर व प्रतिष्ठान से गीला व सूखा कचरा पृथक-पृथक होगा तो कचरे की रिसाइकिलिंग से जैविक खाद व बायोगैस प्लांट आदि लगाए जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि अब अलवर को स्वच्छता में एक ब्रांड के रूप में स्थापित करने में शासन व प्रशासन के साथ शहर के सामाजिक व व्यापारिक संगठनों, स्वयं सहायता संस्थाओं व आम नागरिक की जागरूकता के साथ भागीदारी की महती आवश्यकता है। इसके लिए सितम्बर-अक्टूबर माह में शहर के स्कूलों एवं कॉलेजों में विभिन्न एसोसिएशनों के साथ जागरूकता, श्रमदान व प्रशिक्षण आयोजित कर इसे जन आन्दोलन बनाने का प्रयास किया जाएगा।

पार्क गोद लेने में आगे आएं संस्थाएं

उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन के द्वारा माई सिटी माई पार्क अभियान शुरू किया गया है जिसके अंतर्गत माई सिटी माई पार्क वेब पोर्टल बनाया गया है जिसके माध्यम से शहर के व्यापारिक संगठन, सामाजिक संगठन आदि जुडकर पार्क को गोद ले सकते हैं। उन्होंने विश्वास जताया कि इस अभियान से शहर में स्थित 166 पार्कों का कायाकल्प हो सकेगा। इसी प्रकार जिला प्रशासन द्वारा क्लीन अलवर पोर्टल प्रारम्भ किया गया है जिसमें स्वच्छता व रोड लाइट संबंधी शिकायतें की जा सकती है। उन्होंने कहा कि शहर की साफ-सफाई व्यवस्था में आमजन का सहयोग लेने के साथ-साथ सख्ती भी बरती जाए। रामगढ विधायक सुखवन्त सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि अलवर सांसद व केंद्रीय मंत्री भूपेन्द्र यादव के कुशल मार्गदर्शन में कम समय में ही अलवर में विकास ने रफ्तार पकडी है। उन्होंने कहा कि अग्यारा रामगढ के निवासी वर्षों से दुर्गन्ध झेल रहे थे। भूपेन्द्र यादव ने अपने वायदे के अनुरूप सांसद बनते ही सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट को शुरू कराकर आसपास के क्षेत्र को दुर्गन्ध मुक्त कराया है। नगर निगम आयुक्त जितेन्द्र सिंह नरूका ने बताया कि नवम्बर 2024 में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने पर्यावरण संरक्षण शुल्क निधि (ईपीसी फण्ड) से नगर निगम अलवर को 50 ऑटो टिपर (कचरा संग्रहण वाहन) खरीदने के लिए 4 करोड 50 लाख रूपये की राशि स्वीकृत की जिससे निगम द्वारा 50 नए ऑटो टिपर क्रय किए हैं। उन्होंने बताया कि वर्तमान में क्रय किए ऑटो टिपर की क्षमता (3.3 घन मीटर) पूर्व में शहर में संचालित ऑटो टिपर की क्षमता (2.0 घन मीटर) से लगभग डेढ गुणा अधिक है जिससे गीला व सूखा कचरा को पृथक-पृथक करने एवं अधिक कचरा संग्रहण करने की सुविधा मिलेगी। उन्होंने बताया कि क्रय किए गए नए 50 ऑटो टिपर से अलवर शहर में घर-घर कचरा संग्रहण व्यवस्था में सुधार होगा और आगामी स्वच्छ सर्वेक्षण में अलवर शहर की रैंकिंग और भी बेहतर होगी। मंच संचालन शिक्षाविद् दिनेश शर्मा ने किया। इस दौरान जिला प्रमुख बलबीर सिंह छिल्लर, जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक मुख्यालय डॉ तेजपाल सिंह, पूर्व विधायक बनवारी लाल सिंघल बन्नाराम मीणा, पूर्व महापौर घनश्याम गुर्जर, संजय नरूका, पूर्व सभापति अशोक खन्ना व सुनीता खामरा, महेश निहालवानी, जीतू सैनी, प्रेम पटेल, सीताराम चौधरी, अरूण जैन, लक्ष्मीनाराण गुप्ता, हेतप्रकाश, शीला जांगिड, हरमिन्दर सिंह, राकेश शर्मा, सुरेश मेहता, आनन्द बेनीवाल, नरेश धानावत, मनोज चौहान, जितेन्द्र राठौड, जितेन्द्र सैनी, सतीश यादव, दुल्ली चंद, घनश्याम सोनी, अंजू शर्मा, सुनील चौधरी, गोवर्धन सिंह सिसोदिया, जितेन्द्र शर्मा, हरमीत मेहंदीरत्ता, राजेन्द्र कसाना, सहित प्रबुद्ध व्यक्ति एवं बडी संख्या में आमजन मौजूद रहे

राज ऋषि अभय समाज रामलीला एवं नाटक महाराजा भर्तृहरि के पूर्वाभ्यास का विधिवत हुआ शुभारंभ

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की लीलाओं का एवं महान सामाजिक धार्मिक एवं ऐतिहासिक नाटक महाराजा भर्तृहरि के पूर्व अभ्यास का विधिवत हुआ शुभारंभ इस अवसर पर शुभारंभ करने से पूर्व महानिदेशक मनोज कुमार गोयल ने विधि विधान से स्वरूपों को राम लक्ष्मण भरत शत्रुघ्न सीता एवं हनुमान जी को तिलक करके विधिवत पूजन करके आज यहां भर्तृहरि धाम मंदिर में स्थित राम दरबार के समक्ष श्री रामलीला एवं नाटक महाराजा भर्तृहरि के पूर्वाभ्यास का शुभारंभ किया महानिदेशक ने जानकारी देते हुए बताया कि इस वर्ष के होने वाले प्रदर्शन में भाग लेने के इच्छुक नए कलाकार भी जो अभिनय करने में रुचि रखते हैं वह भी आकर संपर्क कर सकते हैं और उन्होंने बताया कि 3 अगस्त 2025 रविवार से नियमित पूर्वाभ्यास अभय समाज के विशाल रंगमंच पर नित्य प्रति शाम 7.30 बजे से रात्रि 10.00 बजे तक होगा सभी कलाकार समय पर रंगमंच पर नियमितआए ओर अपनी अपनी भूमिका का पूर्वाभ्यास करें एवं प्रदर्शन को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में अपना योगदान दे। इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष पंडित धर्मवीर शर्मा, महामंत्री राजेंद्र प्रसाद शर्मा, संगीत निर्देशक जितेंद्र कुमार गुप्ता, प्रेक्षा ग्रह प्रभारी ओम प्रकाश गुप्ता एवं उपप्रेक्षा ग्रह प्रभारी आचार्य राजेंद्र प्रसाद शर्मा एवं पूर्व महामंत्री तथा वरिष्ठ कलाकार महेश चंद शर्मा तथा कार्यकारिणी के पदाधिकारी और कलाकार सदस्य एवं बाल कलाकार इस कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

कृषि विज्ञान केंद्र नौगांवा में भव्य किसान सम्मान समारोह का हुआ आयोजन

प्रधानमंत्री ने प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 20वीं किश्त लाभार्थियों को की हस्तांतरित

जयपुर टाइम्स

अलवर(निसं.)। कृषि विज्ञान केंद्र नौगावां (अलवर) में जिला स्तरीय पीएम किसान उत्सव दिवस का समारोह कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के वाराणसी से प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 20वीं किश्त के रूप में देश के 9 करोड़ 70 लाख से अधिक लाभार्थियों किसानों को 20,500 करोड़ जिसमें से जिले के 1 लाख 56 हजार 413 किसानों के खाते में 31.28 करोड रूपये अधिक की किसान सम्मान निधि की राशि डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) के माध्यम हस्तांतरित की तथा लाइव टेलीकास्ट के माध्यम से प्रधानमंत्री मोदी ने किसानों को संबोधित किया और सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रामगढ़ विधायक सुखवंत सिंह ने बताया कि किसान सम्मान निधि जो किसानों को वित्तीय सहायता 2019 से मिल रही है, राज्य सरकार द्वारा भी किसान सम्मान निधि को प्रोत्साहन मिल रहा है। अब इस राशि को 6000 से बढ़कर 9000 कर दिया गया है।उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजन किसानों में विश्वास और सशक्तिकरण की भावना को बढ़ावा देते हैं और देश के कृषि क्षेत्र को मजबूती प्रदान करते हैं। उन्होंने कृषि शोध के नवाचारों की सराहना करते की तथा कृषि विभाग द्वारा विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को चेक वितरित किए। जिला स्तरीय कार्यक्रम में किसानों ने खुशी और उत्साह के साथ इस आर्थिक सहायता का स्वागत किया। किसानों के चेहरों पर मुस्कान यह दर्शा रही थी कि यह योजना वास्तव में उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला रही है। कार्यक्रम के नोडल अधिकारी एवं अतिरिक्त जिला कलक्टर द्वितीय योगेश डागुर ने बताया कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 20वीं किश्त के रूप में अलवर जिले के 1 लाख 78 हजार 800 लाभार्थी किसानों 35.76 करोड से अधिक की राशि का डीबीटी के माध्यम से हस्तांतरण किया गया है।

पीएम किसान सम्मान निधि की 20वीं किश्त का हुआ हस्तांतरण

जिला सचिवालय खैरथल के सभागार में राष्ट्रीय स्तरीय कार्यक्रम का हुआ आयोजन

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा(निसं.)। राज्य नोडल अधिकारी (पीएम-किसान) एवं रजिस्ट्रार सहकारिता विभाग राजस्थान, जयपुर के निर्देशानुसार शनिवार को जिले में पीएम किसान उत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया। सुबह 11 बजे से ही वाराणसी, उत्तर प्रदेश से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 20 वीं किस्त जारी किये जाने के अवसर पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से खैरथल-तिजारा जिले सहित पूरे राज्य के किसानों को संबोधित कर रहे थे। इसी कड़ी में जिला स्तर, ब्लॉक स्तर तथा ग्राम पंचायत स्तर पर भी कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस दौरान बांसवाड़ा से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का भी उद्बोधन का सीधा प्रसारण हुआ। कार्यक्रम में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 20 वीं किस्त के तहत जिले के 77 हजार 47 लाभार्थियों के खाते में 15 करोड़ 40 लाख 94 हज़ार रुपए हस्तांतरित किए गए। कार्यक्रम में राष्ट्रीय परिषद सदस्य पूर्व विधायक रामहेत सिंह यादव ने बताया कि

अधिकारी पात्र किसानों को कृषि एवं पशुपालन विभाग से जुड़ी समस्त योजनाओं सहित अन्य कल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुंचाएं और योजना के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान कर हरसंभव सहायता प्रदान की जाए। उन्होंने किसानों से अपने परिचित किसानों को भी राज्य सरकार की योजनाओं के बारे में जानकारी देने को कहा एवं बताया कि किसान रजिस्ट्री, एग्रीस्टैक परियोजना के तहत कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार की एक पहल है जिसके माध्यम से कृषक विवरण, उसके द्वारा धारित कृषि भूमि का विवरण, प्रत्येक कृषि भूखण्ड के जीपीएस निर्देशांक, उस पर बोई गई फसलों का विवरण आदि को डिजिटल रूप में संकलित किया जाकर, प्रदेश के प्रत्येक किसान को एक 11 अंकों की एक यूनिक आईडी (विशिष्ट किसान आईडी) आवंटित की जाएगी, जिससे किसान डिजिटल रूप से अपनी पहचान प्रमाणित कर सकेंगे। जिला कलेक्टर किशोर कुमार ने अधिकारियों को ज्यादा से ज्यादा किसानों को केंद्र और राज्य सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं से लाभान्वित करने के निर्देश दिए। उन्होंने राजस्व ग्रामों के लक्ष्यानुरूप पीएम किसान सम्मान निधि योजना के समस्त किसानों का पंजीकरण करने हेतु व्यापक प्रचार प्रसार व व्यक्तिगत संपर्क के माध्यम से अधिकाधिक पंजीकरण सुनिश्चित करने को कहा। कार्यक्रम के दौरान जिला कलेक्टर किशोर कुमार, राष्ट्रीय परिषद सदस्य पूर्व विधायक रामहेत सिंह यादव, जिला प्रमुख बलबीर छिल्लर, अतिरिक्त जिला कलेक्टर सुमित्रा मिश्र, उपखंड अधिकारी मनीष कुमार जाटव, जिलाध्यक्ष महासिंह चौधरी, जिला उपाध्यक्ष राजेश बटवाड़ा, जिला महामंत्री पवन यादव, मंडल अध्यक्ष मनीष शर्मा, पूर्व चेयरमैन अशोक डाटा, पार्षद सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण एंव अधिकारी मौजूद रहे।

स्तनपानः मां और बच्चे के बीच आत्मीयता का प्रतीक

जयपुर टाइम्स

मां के अपने नवजात शिशुओं को दूध पिलाने की प्रक्रिया को कहा जाता है। मां का दूध बच्चे के लिए सर्वोत्तम है क्योंकि यह बच्चे की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। बच्चे में दमा, नाक कान की बीमारियां भी नियंत्रित रहती हैं। यह बच्चे के लिए सुपाच्य है अतः पेट की गड़बड़ियों से भी बचाता है।स्तनपान करने से मां और बच्चे के बीच आत्मीयता बढ़ती है एवं बच्चे का अच्छा शारीरिक और मानसिक विकास होता है। लेकिन कई बार महिलाएं विज्ञापन देखकर भ्रमित हो जाती है कि डब्बे का दूध बच्चे के लिए अच्छा है। यह सही नहीं है केवल माता का दूध हे बच्चे की सेहत के लिए अनुकूल होता है। कई बार महिलाएं अपने स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने के डर से भी स्तनपान नहीं करवाती। यह भ्रांति भी गलत है। स्तनपान करवाने से प्रसूता की बच्चेदानी सिकुड़ती है तथा बच्चेदानी से रक्त स्राव को कम करती है जिससे मां मैं खून की कमी नहीं होती है। बच्चे को स्तनपान करवाने से गर्भधारण से भी बचा जा सकता है, यह माहवारी आने से भी रोकता है तथा मां के शरीर को पुनः पहले जैसा करने मे सहायक है। स्तनपान करवाने से छाती एवं अंडाशय के कैंसर की संभावना भी कम होती है। अपने बच्चे के सम्पूर्ण विकास के लिए हर मां का दायित्व है के वह 2 वर्ष तक अपने बच्चे को स्तनपान करवाए। कामकाजी महिलाएं अपना दूध निकालकर कुछ घंटों के लिए फ्रिज में स्टोर कर सकती है। अलवर में एक मिल्क बैंक है जिसमें महिलाएं अपना दूध दान करती है जो उन बच्चों के काम आता है जिनकी माताएं स्तनपान करवाने में असमर्थ है। यह प्रदेश का द्वितीय मिल्क बैंक है। हमारी गायनिक सोसायटी सदैव ही स्तनपान को प्रोत्साहन देने का कार्य करती रहती है। हमारा ध्येय है कि हर माता अपने बच्चे को कम से कम 2 वर्ष तक स्तनपान करवाए जिससे बच्चे का सम्पूर्ण विकास हो तथा राष्ट्र का विकास हो।

डॉ देवयानी राणावत
MD
देवयानी हॉस्पिटल, अलवर।
यह लेखक के निजी विचार है।

खैरथल-तिजारा जिला स्थापना दिवस की तैयारियों को लेकर जिला कलेक्टर ने ली अधिकारियों की बैठक

जयपुर टाइम्स

खैरथल-तिजारा। जिला कलक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में जिला सचिवालय खैरथल-तिजारा में जिले के स्थापना दिवस (07 अगस्त 2025) के सफल आयोजन हेतु बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में आगामी स्थापना दिवस के सभी कार्यक्रमों के सुव्यवस्थित संचालन पर विस्तार से चर्चा की गई। जिला कलक्टर ने निर्देश दिए कि स्थापना दिवस का आयोजन गरिमामय व आकर्षक बनाया जाए। इसके लिए अतिरिक्त जिला कलक्टर, खैरथल-तिजारा को समग्र प्रभारी अधिकारी नियुक्त किया गया है। साथ ही विभिन्न व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करने हेतु अधिकारियों को प्रशासनिक एवं नोडल अधिकारी के रूप में जिम्मेदारी सौंपी गई। जिला कलेक्टर ने नगर परिषद खैरथल एंव सहायक निदेशक पर्यटन को टेंट, लाइट, साउंड, लोक कलाकारों से समन्वय कर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कराने के निर्देश दिए। बैठक के दौरान उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी कार्यक्रमों की तैयारियां समयबद्ध और उच्च स्तर की हों ताकि जिला स्थापना दिवस खैरथल-तिजारा हर्षोल्लास से मनाया जाए। सहायक निदेशक, पर्यटन विभाग संजय ने बताया कि स्थापना दिवस पर प्रातः 10.00 बजे से रंगोली, मेंहदी एवं पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन पीएमश्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, खैरथल में किया जाएगा। सायं 7.00 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन लक्ष्मीनारायण मंदिर, खैरथल प्रांगण में किया जाएगा।

संघर्ष का दूसरा नाम "राजेंद्र" राठौड़, बन गए राजस्थान भाजपा के दबंग योद्धा

आरएएस अधिकारी का बेटा जो बन गया भाजपा की आवाज

ऐसा प्रखर वक्ता जिसे सुनने के लिए सदन में भी विधायक रहते हैं उत्सुक, जिसकी जितनी संघर्ष की कठिन गाथा उसकी उतनी ही है बेमिसाल सफलता की गाथा

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान विधानसभा में आजकल सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों पक्ष के सदस्य भाजपा नेता राजेंद्र सिंह राठौड़ को निश्चित रूप से मिस कर रहे हैं क्योंकि 1990 के बाद यह पहली बार है जब राठौर राजस्थान विधानसभा के सदस्य नहीं है इसलिए राठौर की भाषण शैली, उनके बोलने का अंदाज, हर विषय पर तथ्यात्मक तरीके से पक्ष रखना और बीच-बीच में व्यंग्य कस देना जैसी उनकी हर अदा उन्हें सदन में सबसे अलग राजनेता बना देती थी जिस पर सदन में हर किसी की निगाहें टिकी रहती थी और हर कोई राजेंद्र राठौड़ को सुनने के लिए बेताब रहता था लेकिन पिछले विधानसभा चुनाव में पराजय मिलने की वजह से राठौर अभी राजस्थान विधानसभा में नहीं पहुंच पाए लेकिन उनकी पर्सनैलिटी और उनकी पॉलिटिकल हैसियत में बिल्कुल भी कमी नहीं आई है उनका जो रुतबा पार्टी में पहले बना हुआ था वह रुतबा आज भी बरकरार है वह आज भी राजस्थान भाजपा के छोटे-बड़े सभी नेताओं में काफी लोकप्रिय हैं, अपने पुराने निर्वाचन क्षेत्र तारानगर और चुरु की पब्लिक के दिलों पर तो राज करते ही हैं लेकिन भारतीय जनता पार्टी के दूर दराज के छोटे-बड़े सभी नेताओं में उनकी पकड़ अब भी पहले की तरह ही है, राजस्थान भाजपा के दबंग, प्रखर वक्ता और जोशीले राजनेताओं की अग्रिम पंक्ति में शामिलहै जिन्होंने खुद को एक श्रेष्ठ मंत्री के रूप में साबित करके दिखाया ही इसके अलावा पार्टी के कुशल रणनीतिकारों में शीर्ष पर है और इनकी पॉलिटिकल कुशलता से भाजपा का दिल्ली दरबार भी बहुत पहले से परिचित है इसलिए अब इस तरह की चर्चा है कि हो सकता है प्रदेश में राजनीतिक नियुक्तियों की प्रक्रिया शुरू होगी तो राजेंद्र राठौड़ को किसी बड़े पद पर राजनीतिक नियुक्ति दी जा सकती है और उनके अनुभव का फायदा उठाया जा सकता है

शुरू के दो चुनाव हारने के बाद वर्ष 1990 से 2018 तक लगातार विधायक चुने गए

राजेंद्र राठौड़ ने अपना पहला विधानसभा चुनाव 1980 में जनता दल के टिकट से लड़ा था लेकिन चुनाव नहीं जीत पाए, 1985 में जनता दल ने फिर उन्हें टिकट दिया लेकिन इस बार भी उन्हें सफलता नहीं मिली इसके बाद 1990 में फिर उन्हें जनता दल ने टिकट दिया और इस बार उन्होंने चुनाव जीता लेकिन चुनाव जीतने के बाद उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के सदस्यता ग्रहण की और फिर 1993 से 2018 तक लगातार विधायक चुने गए, इस दौरान तारानगर और चुरु विधानसभा क्षेत्र से चुने गए लेकिन पिछला विधानसभा चुनाव तारानगर से हार गए ।बड़ी बात यह है कि राजस्थान विधानसभा के इतने लंबे सफर में राजेंद्र सिंह राठौड़ प्रदेश में भैरव सिंह शेखावत सरकार में भी मंत्री रहे और वसुंधरा राजे के दोनों शासनकाल में मंत्री रहे बाद में पिछली गहलोत सरकार में गुलाबचंद कटारिया के असम का राज्यपाल बनने के बाद राजेंद्र राठौड़ को सदन में प्रतिपक्ष के नेता की भूमिका भी मिली । जानकार लोगों का कहना है कि वसुंधरा राजे के मुख्यमंत्री बनने से पहले भारतीय जनता पार्टी को कभी भी पूर्ण बहुमत नहीं मिला था हालांकि हालांकि भैरों सिंह शेखावत तीन बार मुख्यमंत्री रहे लेकिन उन्हें समर्थन के लिए निर्दलीय विधायकों की ओर देखना पड़ा था और इस काम में राजेंद्र सिंह राठौड़ ने एक बार बहुत बड़ी भूमिका निभाई थी जब उन्होंने अपनी कुशल रणनीति से कई निर्दलीय विधायकों को भैरों सिंह शेखावत सरकार का समर्थन देने के लिए राजी कर लिया था इसके बाद से ही राजेंद्र राठौड़ का राजस्थान भाजपा में जबरदस्त प्रभाव होने लगा था हालांकि उस समय राजस्थान भाजपा में कई सीनियर नेता थे जो राजेंद्र राठौड़ से उम्र में काफी बड़े थे लेकिन तमाम सीनियर नेताओं के बीच राजेंद्र राठौड़ ने अपना जोरदार रुतबा कायम कर लिया था जिसकी वजह से भैरव सिंह शेखावत की राठौर को काफी पसंद किया करते थे बाद में 2003 में वसुंधरा राजे के नेतृत्व में जब सरकार बनी तो 2003 से 2008 तक राजेंद्र राठौड़ वसुंधरा सरकार में नंबर दो मंत्री माने जाते थे

राजस्थान विधानसभा में पार्टी के विधायकों को एकजुट बनाए रखने में हमेशा बड़ी भूमिका निभाई

जानकार लोगों का कहना है कि राजेंद्र राठौड़ जब तक राजस्थान विधानसभा के सदस्य रहे तब तक उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के विधायकों को सदन के अंदर और सदन के बाहर एकजुट बनाए रखने में हमेशा बड़ी भूमिका निभाई, चाहे बीजेपी के विधायक विपक्ष की गैलरी में बैठे हो या फिर सत्ता पक्ष में हो राठौर ने हमेशा सदन में पार्टी का झंडा बुलंद रखने के लिए विधायकों को एकजुट रखा, अगर बीजेपी को विपक्ष की भूमिका मिली तो उन्होंने सरकार को कैसे और किस तरह से घेरना है और किन मुद्दों को लेकर घेरना है इन सब की रणनीति तैयार करने में राठौर हमेशा आगे नजर आए भले ही उन्हें विपक्ष के नेता पद की भूमिका काफी विलंब से मिली हो लेकिन सदन में उन्होंने विपक्ष में रहते हुए भी भाजपा के विधायकों को एकजुट रखा ताकि सत्ता पक्ष की ठीक तरह से घेराबंदी की जा सके, जब वसुंधरा राजे और गुलाबचंद कटारिया विपक्ष के नेता रहा करते थे तब भी विधानसभा में पार्टी से जुड़े तमाम कामों की जिम्मेदारी राठौर ही संभाल करते थे राठौर की राय को ही सर्वोपरि माना जाता था और राठौर ही विधायकों से नियमित रूप से संपर्क में रहकर उन्हें आवश्यक दिशा निर्देश भी देते रहते थे इसलिए राजस्थान विधानसभा में भाजपा की आवाज को बुलंद करने में राठौर हर तरह से हमेशा आगे रहे

पार्टी के नए विधायक राठौर से हमेशा रहे प्रभावित

वर्ष 1990 से 2018 तक भाजपा के विधायक रहने के दौरान राजस्थान विधानसभा में हमेशा बड़ी संख्या में भाजपा के नए विधायक भी चुनकर आए, वसुंधरा राजे के पहले शासन काल और वसुंधरा राजे के दूसरे शासनकाल में भी कई नए विधायक चुनकर आए, इस दौरान गहलोत सरकार के शासनकाल में भी भाजपा के कई नए विधायक चुनकर राजस्थान विधानसभा में पहुंचे और नए विधायकों को राजस्थान विधानसभा की कार्रवाई से अवगत करवाने के लिए तथा नए विधायक कैसे और किस तरह से सदन में अपनी बात रखें इन सब के बारे में राठौर हमेशा नए विधायकों को सलाह और राय देते रहे और उन्हें पूरी तरह से गाइड करते रहे जिसकी वजह से नए विधायकों पर भी राजेंद्र राठौड़ का हमेशा अच्छा प्रभाव रहा और नए विधायक भी राजेंद्र राठौड़ का काफी सम्मान करते थे इतना ही नहीं कांग्रेस पार्टी के नए विधायक भी कई बार राजेंद्र राठौड़ से आवश्यक सलाह और मार्गदर्शन लेते रहते थे जिसकी वजह से भाजपा और कांग्रेस दोनों दलों के नए विधायक राठौर को श्रेष्ठ राजनेता के रूप में मानते थे और उनका भाषण भी बड़े ध्यान से सुना करते थे, कई नए विधायकों ने राठौर से काफी कुछ सीख भी और राठौर ने भी कभी भी नए विधायकों के सामने खुद को वरिष्ठ नहीं माना उन्हें अपना छोटा भाई मानकर उनका मार्गदर्शन करते रहे

राजनीतिक साजिश के तहत राठौर को दारिया एनकाउंटर मामले में फसाया गया लेकिन कोर्ट ने उन्हें निर्दोष पाया

वर्ष 2006 में जयपुर के राजेंद्र नगर में पुलिस की मुठभेड़ में शराब तस्कर दरिया की मौत हो गई थी बाद में दरिया की पत्नी ने इसे फर्जी एनकाउंटर बताया और इस मामले में राजेंद्र राठौड़ को भी आरोपी बनाया गया, कोर्ट के आदेश पर इस मामले की जांच सीबीआई ने की और सीबीआई ने भी अपनी जांच में राजेंद्र राठौड़ को दोषी माना और वर्ष 2012 में सीबीआई ने राजेंद्र राठौड़ को गिरफ्तार किया उस समय प्रदेश में कांग्रेस की सरकार थी और अशोक गहलोत मुख्यमंत्री थे तथा राजेंद्र सिंह राठौड़ विधायक थे हालांकि राठौर के समर्थकों ने और भाजपा के कार्यकर्ताओं ने राठौर की गिरफ्तारी पर कड़ी आपत्ति जताई और कहा कि यह राजनीतिक साजिश के तहत ऐसा किया जा रहा है लेकिन राठौर ने अपने समर्थकों को संदेश दिया कि मैं निर्दोष हूं और एक दिन सत्य की जीत होगी आप सब शांत रहें अपना काम करें बाद में 51 दिन तक राठौर जेल में भी रहे लेकिन फिर बाद में कोर्ट ने उन्हें और इस मामले में सभी आरोपियों को निर्दोष कोर्ट के राजेंद्र राठौड़ को निर्दोष करार देने के बाद हर कोई कहने लगा कि यह एक उच्च स्तर पर राजनीतिक साजिश थी उस समय राजस्थान और केंद्र दोनों जगह पर कांग्रेस की सरकार थी ।

राजस्थान विश्वविद्यालय को आज तक राजेंद्र सिंह राठौड़ जैसा छात्र संघ अध्यक्ष नहीं मिला

राजस्थान विश्वविद्यालय के गलियारों में भी अक्सर यह चर्चा सुनने को मिल जाती है कि राजेंद्र रोड राठौर जैसा छात्र संघ अध्यक्ष आज तक राजस्थान विश्वविद्यालय को नहीं मिल पाया है, प्रदेश की दो बड़ी राजनीतिक पार्टियों भाजपा और कांग्रेस इन दोनों ही दलों में कई बड़े नेता ऐसे हैं जो पहले राजस्थान विश्वविद्यालय छात्र संघ का अध्यक्ष रह चुके हैं, राजेंद्र सिंह राठौड़ 1979 में राजस्थान विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष चुने गए थे उस समय राठौर ने छात्र हितों की रक्षा के लिए कई बड़े-बड़े छात्र आंदोलन की अगुवाई की जिसकी वजह से राजस्थान विश्वविद्यालय और इनसे जुड़ी सभी सरकारी कॉलेज के छात्र छात्रों में राठौर काफी लोकप्रिय छात्र नेता के रूप में जाने जाते थे राठौर के बारे में कहा जाता था कि जो भी मुद्दे छात्र हितों को लेकर उठाते थे उनके प्रभाव और उनकी लोकप्रियता की वजह से यूनिवर्सिटी प्रशासन को उनकी बात को मानना ही पड़ता था, ऐसा कभी नहीं हुआ जब राठौर ने कोई मांग यूनिवर्सिटी प्रशासन से की हो और यूनिवर्सिटी प्रशासन ने उस मांग को नहीं माना हो, छात्र राजनीति में ही राठौर अपनी दबंग छवि के रूप में जाने जाते थे और वह छवि सक्रिय राजनीति में आने के बाद अब तक कायम है, राजेंद्र राठौड़ ने राजस्थान विश्वविद्यालय से पॉलिटिकल साइंस में एमए किया और एलएलबी और डी एल एल की डिग्री भी हासिल की, राठौर की युवाओं में और छात्रों में गजब की लोकप्रियता देखकर और उनकी दबंग छवि से प्रभावित होकर जनता दल ने उन्हें 1980 में चूरू जिले की विधानसभा सीट से चुनाव मैदान में उतारा लेकिन राठौर अपना पहला चुनाव नहीं जीत पाए थे

जेल में महिपाल मदेरणा के साथ कोटडी में रहे और हमेशा हनुमान चालीसा का पाठ करते रहे

जानकारी के अनुसार दारिया एनकाउंटर मामले में राठौर को उस जेल में ही रखा गया जहां पर पूर्व मंत्री और कांग्रेस के नेता महिपाल मदेरणा को भंवरी देवी अपहरण हत्याकांड के मामले में जेल में रखा गया था, राजेंद्र राठौड़ और महिपाल मदेरणा दोनों जेल की एक ही बैरक में रहे और आपस में एक दूसरे से बातें करके अपना दुख हल्का करते रहे लेकिन राजेंद्र राठौड़ भगवान हनुमान जी के परम भक्त हैं और वे जेल में हनुमान चालीसा और धार्मिक पुस्तक पढ़ने में ही अपना अधिकांश समय बिताया करते थे, कठिन और विपरीत परिस्थितियों में इंसान को कैसे खुद को तरोताजा रखता है इस तरह की पुस्तक ज्यादा पढ़ा करते थे और महिपाल मदेरणा को भी हिम्मत बांधते रहते थे, जानकार लोगों का कहना है कि राजेंद्र राठौड़ की पत्नी काफी धार्मिक प्रवृत्ति की महिला हैं और घर पर सुबह काफी देर तक नियमित रूप से पूजा पाठ का कार्यक्रम संचालित होता है व्रत उपवास में राठौर की पत्नी की दिनचर्या का अहम हिस्सा है इसलिए राठौर की पूरी फैमिली का ईश्वर के प्रति अटूट रिश्ता और आस्था है यही वजह है कि कठिन और विपरीत परिस्थितियों में भी राजेंद्र राठौड़ बिल्कुल भी नहीं टूटे और जब जेल से बाहर आए तो समर्थक और भारतीय जनता पार्टी के हजारों कार्यकर्ताओं ने उन्हें इस तरह से प्यार और सम्मान दिया जैसे पहले दिया करते थे द्य

पार्टी से कभी भी नहीं की गद्दारी, हमेशा पार्टी के प्रति समर्पित रहे राठौर

जिस दिन से राजेंद्र सिंह राठौड़ भाजपा में शामिल हुए उस दिन से ही राठौर पूरी तरह से भाजपा के प्रति समर्पित रहे, हालांकि इस दौरान भाजपा ने भी उन्हें खूब मान सम्मान दिया और अच्छे पदों पर बिठाया भी लेकिन कुछ मौके ऐसे भी आए जब पार्टी के बड़े नेताओं की आपस की लड़ाई में राठौर को बेवजह बीच में घसीटा गया जिसकी वजह से उन्हें भी जहर का घूंट पीना पड़ा लेकिन इसके बावजूद भी राजेंद्र राठौड़ ने पार्टी के संगठन को मजबूत करने के प्रयासों में अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी और तन मन धन से पार्टी की सेवा करते रहे, विपक्षीदलों के नेताओं की बयान बाजी को उन्हीं के अंदाज में राठौर ने पलट कर जवाब भी दिया, चाहे पार्टी के संगठन से जुड़ा मामला हो या फिर अपनी पार्टी की सरकार से जुड़ा कोई मामला हो जब भी पार्टी को राठौर की जरूरत महसूस हुई राठौर दौड़कर आए और पार्टी ने जो भी उन्हें जिम्मेवारी दी उस जिम्मेवारी को निभाया, विधानसभा चुनाव, लोकसभा चुनाव, नगर निकाय चुनाव, पंचायत राज चुनाव हर चुनाव में पार्टी ने जो भी जिम्मेदारी दी अब तक उस जिम्मेदारी को बखूबी से निभाया है, हमेशा पार्टी के स्टार प्रचारक रहे और स्टार प्रचारक के दौरान भी पार्टी के उम्मीदवारों की जीत को सुनिश्चित करने में दिन-रात एक कर दिए इसीलिए राजेंद्र राठौर को काफी भाग दौड़ और मेहनत करने वाला नेता माना जाता है, राठौर ने कभी भी पार्टी की लाइन से ऊपर उठकर काम नहीं किया हमेशा पार्टी के नियमों और सिद्धांतों के अनुसार ही राजनीति की, पिछले लोकसभा चुनाव में राठौर को टिकट मिलने की चर्चा थी राठौर ने भी कह दिया था कि अगर पार्टी उन्हें टिकट देगी तो चुनाव लड़ लेंगे हालांकि से पहले उन्होंने चुनाव लड़ने से मना भी कर दिया था लेकिन पार्टी ने जब उन्हें लोकसभा चुनाव का टिकट नहीं दिया उसके बाद भी राठौर ने किसी भी तरह की कोई नाराजगी प्रकट नहीं की और लोकसभा चुनाव में भी भाजपा की उम्मीदवारों को जीतने के लिए दिन-रात मेहनत की, यही वजह है कि राठौर को निष्ठावान पार्टी का नेता माना जाता है

राठौर को विरासत में नहीं मिली राजनीति, पिता उत्तम सिंह राठौड़ थे आरएएस अधिकारी

आज राजेंद्र सिंह राठौर की गिनती भाजपा के टॉप नेताओं में होती है, राठौर ने सिर्फ अपने बूते पर कठिन संघर्ष और बुलंद हौसलों से राजस्थान की राजनीति में जो नाम कमाया है और भाजपा में खुद को साबित किया है वह अपने आप में बेमिसाल है क्योंकि राजेंद्र राठौड़ को विरासत में राजनीति नहीं मिली थी और शुरू के दो विधानसभा चुनाव हारने के बाद भी उन्होंने हिम्मत नहीं आ रही उनकी जगह अगर और कोई राजनेता होता और शुरू के दो चुनाव हार जाता तो फिर शायद वह तीसरा चुनाव नहीं लड़ता लेकिन राठौर ने तीसरा चुनाव भी लड़ा और फिर चुनाव जीते और फिर लगातार सात बार चुनाव जीते इस दौरान झूठे मुकदमों में जेल में भी गए लेकिन टूटे नहीं अपने हौसलों को बुलंद रखा और सच्चाई पर चलते रहे।समय निकालकर राठौर वकालत भी करते हैं हालांकि वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव में पराजय मिलने के बाद राठौर के पास इस समय पार्टी की कोई बड़ी जिम्मेवारी नहीं है लेकिन कहा जा रहा है कि या तो राठौर को आने वाले दिनों में कोई बड़ी राजनीतिक नियुक्ति मिल सकती है या फिर भाजपा की केंद्रीय की नई टीम में उन्हें बड़ी भूमिका में रखा जा सकता है।

अपनी पार्टी की सरकार में हर मुख्यमंत्री का दिल से दिया साथ

राजेंद्र सिंह राठौर के भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने के बाद जब-जब प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनी तब तब राजेंद्र राठौड़ ने हर मुख्यमंत्री का दिल से पूरा सपोर्ट किया, भैरव सिंह शेखावत सरकार में भी एक बार निर्दलीय विधायकों का समर्थन दिलवाने में राजेंद्र राठौड़ का बहुत बड़ा हाथ रहा था इसी तरह से वसुंधरा राजे पूर्ण बहुमत के साथ मुख्यमंत्री बनी तो वसुंधरा राजे के दोनों शासनकाल में राजेंद्र राठौड़ कैबिनेट मंत्री बने लेकिन सरकार से जुड़े हर विषयों को लेकर वसुंधरा राजे राजेंद्र राठौड़ से चर्चा करके ही कोई निर्णय लेती थी, राजस्थान विधानसभा में अपनी सरकार का बचाव करने के लिए राजेंद्र राठौड़ काफी दौड़ धूप और मेहनत किया करते थे राजस्थान विधानसभा में सरकार को नीचा नहीं देखना पड़े इसके लिए अपनी सरकार के मंत्रियों के साथ भी विचार विमर्श करके उन्हें आवश्यक सलाह देते रहते थे उनके मन में यह भाव कभी भी नहीं आया कि मुझे भी मुख्यमंत्री की कुर्सी तक पहुंचना है वह हमेशा समर्पित भाव से अपनी सरकार के मुख्यमंत्री के समर्थन में ढाल बनकर खड़े नजर आए और वर्तमान में भी प्रदेश की भजनलाल सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर हर तरह से अपना सहयोग दे रहे हैं हालांकि अभी राठौर विधायक नहीं है लेकिन जरूरत पड़ने पर सरकार से जुड़े लोगों के साथ जरूरी विषय पर बातचीत करते रहते हैं और अपनी सलाह और राय भी देते रहते हैं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के साथ ही राजेंद्र राठौड़ के बहुत अच्छे रिश्ते हैं ।

मंत्री रहने के दौरान भी बड़े विभागों का कुशलता से किया संचालन, खुद को श्रेष्ठ मंत्री के रूप में साबित किया

वसुंधरा राजे के दोनों शासनकाल में राजेंद्र राठौड़ कैबिनेट मंत्री रहे और कई बड़े-बड़े विभागों की जिम्मेवारी राठौर को दी गई ग्रामीण विकास और पंचायत राज विभाग, चिकित्सा विभाग और संसदीय कार्य मंत्री जैसे कई बड़े विभाग उन्हें दिए गए और इन सभी विभागों में उन्होंने बहुत शानदार और बेमिसाल काम करके दिखाया कई बड़ी योजनाएं और कई बड़े-बड़े निर्णय लिए जिनकी वजह से विभागों के कामकाज की तो खूब तारीफ हुई इसके अलावा प्रदेश के लोगों को भी खूब फायदा हुआ, राजेंद्र राठौड़ के बारे में कहा जाता है कि शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्र की समस्याओं की जानकारी उन्हें बखूबी से थी जितनी गांव की समस्याओं के बारे में वे जानकारी रखते हैं उतनी ही बड़े शहरों की समस्याओं को भी अच्छी तरह से समझते हैं इसीलिए जनता से जुड़े विषयों के बारे में उन्हें बहुत अच्छी जानकारी थी इसी वजह से राजस्थान विधानसभा के अंदर उनके जो भाषण हुआ करते थे वह काफी दमदार और तथ्यात्मक हुआ करते थे जिन्हें हर कोई सुनना पसंद करता था इसी वजह से राठौर जब राजस्थान विधानसभा में किसी भी विषय पर अपना भाषण देते थे तो सत्ता पक्ष और विपक्ष के सदस्य चुपचाप उनकी बातों को सुना करते थे क्योंकि वे जो भी बात बोलते थे पूरी तैयारी के साथ रात भर स्टडी करके आते थे और फिर धारा प्रवाह हर विषय पर बारीकी से जानकारी दिया करते थे जिसकी वजह से उनकी बातों को हमेशा विधानसभा सचिवालय और सरकार दोनों काफी गंभीरता से लेती थी ।

भाजपा 14 अगस्त को मनाएगी विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस, 15 को चलेगा हर घर तिरंगा अभियान: मदन राठौड़

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने घोषणा की है कि भारतीय जनता पार्टी 14 अगस्त को 'विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस' के रूप में मनाएगी और 15 अगस्त को 'हर घर तिरंगा' अभियान चलाकर प्रत्येक घर में राष्ट्रध्वज फहराने का आह्वान करेगी। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता से ठीक एक दिन पहले हुए विभाजन में लाखों लोगों को

अपने प्राण, घर और सम्मान खोना पड़ा था। इस दिन पार्टी उन सभी पीड़ितों को श्रद्धांजलि अर्पित करेगी जिन्होंने विभाजन की पीड़ा झेली और फिर से जीवन को खड़ा किया। राठौड़ ने कहा, "विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस हमें यह संकल्प लेने का अवसर देता है कि हम देश की एकता, अखंडता और भाईचारे को बनाए रखेंगे।" उन्होंने बताया कि 15 अगस्त को भाजपा कार्यकर्ता घर-घर जाकर तिरंगा बांटेंगे और नागरिकों से राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्रध्वज फहराने की अपील करेंगे। राजनीतिक सवालों पर प्रतिक्रिया देते हुए राठौड़ ने कांग्रेस पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि "गहलोत जी बार-बार मानेसर की बात कर रहे हैं, लेकिन जब मैं विभाजन को याद कर भावुक हो जाता हूं, तो क्या सचिन पायलट उन्हें 'निकम्मा-नकारा' कहने की बात भूल पाएंगे?" उन्होंने कांग्रेस पर 'भगवा आतंकवाद' के नाम पर निर्दोषों को जेल में डालने और संघ के खिलाफ साजिशें रचने का आरोप लगाया। मतदाता सूची की शुद्धता पर जोर देते हुए राठौड़ ने कहा, "देश का नागरिक ही देश का भविष्य तय करे, यह जरूरी है। रोहिंग्या, बांग्लादेशी या इटली से आया व्यक्ति भारत में वोट न डाल सके, इसके लिए मतदाता सूची का नियमित पुनरीक्षण आवश्यक है।" उन्होंने अंत में कहा कि भाजपा 'राष्ट्र प्रथम' की भावना के साथ कार्य करती है और सभी वर्गों में सौहार्द्र बनाए रखने को संकल्पबद्ध है।

चिकित्सा शिक्षा को लगा पैसे का रोग

इस प्रकार चिकित्सा शिक्षा का अंधा विस्तार मात्र करके हम अपने यहां की स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान नहीं पा सकते। चिकित्सा महाविद्यालयों की संख्या में वृद्धि करना वास्तव में एक भोथरी रणनीति ही कहा जाएगा। इस रणनीति पर चल कर आप इस देश में स्वास्थ्य सेवाओं की मांग और आपूर्ति के बीच की खाई को नहीं पाट सकते और तब तो खासकर इस अंतराल को नहीं भरा जा सकता जब आप चिकित्सा शिक्षा को पूरी तरह से निजी क्षेत्र के रहमोकरम पर छोड़ देते हैं। अब तक के अनुभव हमें बताते हैं कि चिकित्सा शिक्षा प्रदान करने वाले निजी महाविद्यालय का शुल्क ढांचा एक आम नागरिक के बच्चे की पहुंच से बहुत बाहर होता है। एक अंग्रेजी अखबार में छब्बीस अगस्त को छपी खबर के मुताबिक तमिलनाडु में चिकित्सा स्नातक पाठ्यक्रम चलाने वाले निजी संस्थानों का औसत शुल्क लगभग दो करोड़ तक पहुंच गया है। परास्नातक और अन्य प्रकार की चिकित्सा

निजी क्षेत्र को चिकित्सा शिक्षा में उतरने की छूट देने के पीछे तर्क दिया गया कि सरकारी महाविद्यालय उतने चिकित्सक तैयार नहीं कर सकते, जितनी जरूरत है। दूसरे,प्रतिस्पर्धा बढ़ने पर शुल्क स्वत कम हो जाएंगे। लेकिन चिकित्सा शिक्षा के निजी महाविद्यालयों की संख्या करीब पांच सौ तक पहुंच जाने पर भी क्या शुल्कों में गिरावट आई है?

भारत सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं की वस्तुस्थिति जानने के लिए समय-समय पर जो आयोग और समितियां गठित की हैं, उन सबकी रिपोर्टों में समान रूप से बार-बार एक ही तथ्य उभर कर आता है कि बहुसंख्यक भारतीय समुचित और यथेष्ट स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित हैं। वर्तमान समय में देश की स्वास्थ्य सेवाओं पर दोहरा बोझ है। एक तो आम जनता संक्रामक और मौसमी बीमारियों से सतत रूप से आक्रांत रहती ही है। दूसरे, पेशेवर चिकित्सकों की जमात शहरों में ही केंद्रित होती जा रही है। इन दोनों प्रकार की चुनौतियों का सामना करने के लिए जहां हमें प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में कार्यरत चिकित्सकों की संख्या में गुणात्मक वृद्धि करनी होगी, वहीं पेशेवर चिकित्सकों का प्रशिक्षण इस प्रकार से करना होगा कि वे जहां हमारे देश की प्राथमिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करने में सक्षम बनें, वहीं मानसिक रूप से भी यह जिम्मेदारी उठाने के लिए स्वयं को तैयार कर सकें। ऐसा देखा गया है कि वर्तमान चिकित्सा शिक्षा ऐसे स्नातक चिकित्सक तैयार नहीं कर पा रही जो गांवों और कस्बों में रह कर आम जनता की स्वास्थ्य विषयक तकलीफों का निदान कर सकें। इस प्रकार चिकित्सा शिक्षा का अंधा विस्तार मात्र करके हम अपने यहां की स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान नहीं पा सकते। चिकित्सा महाविद्यालयों की संख्या में वृद्धि करना वास्तव में एक भोथरी रणनीति ही कहा जाएगा। इस रणनीति पर चल कर आप इस देश में स्वास्थ्य सेवाओं की मांग और आपूर्ति के बीच की खाई को नहीं पाट सकते और तब तो खासकर इस अंतराल को नहीं भरा जा सकता जब आप चिकित्सा शिक्षा को पूरी तरह से निजी क्षेत्र के रहमोकरम पर छोड़ देते हैं। अब तक के अनुभव हमें बताते हैं कि चिकित्सा शिक्षा प्रदान करने वाले निजी महाविद्यालय का शुल्क ढांचा एक आम नागरिक के बच्चे की पहुंच से बहुत बाहर होता है। एक अंग्रेजी अखबार में छब्बीस अगस्त को छपी खबर के मुताबिक तमिलनाडु में चिकित्सा स्नातक पाठ्यक्रम चलाने वाले निजी संस्थानों का औसत शुल्क लगभग दो करोड़ तक पहुंच गया है। परास्नातक और अन्य प्रकार की चिकित्सा उपाधियों वाले पाठ्यक्रमों के शुल्क निजी महाविद्यालयों और डीम्ड विश्वविद्यालयों में और भी ज्यादा ऊंचाई तक पहुंच चुके हैं। और हम जानते हैं कि एक आम आदमी का बच्चा दो करोड़ देकर डॉक्टर नहीं बन सकता। वर्तमान व्यवस्था ने चिकित्सा शिक्षा तंत्र को वह औपचारिक रूप दे डाला है जहां आर्थिक स्तर और वर्गीय विशेषाधिकारों के आधार पर विद्यार्थियों में भेद पैदा हो गया है, श्रेणीकरण हो गया है। वैसे तो ऐसा स्तर भेद होना किसी भी क्षेत्र में अवांछनीय है लेकिन भावी चिकित्सकों के बीच इस प्रकार का भेदभाव बिल्कुल स्वीकार्य नहीं है क्योंकि यह एक ऐसा पेशा है जहां आपको भगवान का दर्जा दिया जाता है। चिकित्सक में सहानुभूति, परोपकार और सेवाभाव की आम जनता बड़ी इज्जत करती है अत इन गुणों को प्रोत्साहन दिए जाने की जरूरत है। लेकिन क्या निजी क्षेत्र से आप इन चीजों की उम्मीद कर सकते हैं? चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में मची इस अंधी लूट और तमाम तरह के भ्रष्टाचार और अव्यवस्था का संज्ञान लेकर मई में सर्वोच्च अदालत ने केंद्र सरकार को हिदायत दी थी कि संसद की स्थायी समिति के सुझाव के अनुसार एक निगरानी समिति बनाई जाए जो भारतीय चिकित्सा परिषद के कार्यों पर निगरानी रख सके। यहां गौरतलब है कि देश में चिकित्सा शिक्षा के नियमन का काम यही परिषद देखती है लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं कि स्वयं यह संस्था आज निर्जीव और निष्प्रभ हो चुकी है। न तो भारतीय चिकित्सा परिषद देश भर में चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण के स्तर पर कोई गुणवत्तापूर्ण मानक निर्धारित कर पाई है और न ही इसने मेडिकल शिक्षा को सुलभ और सस्ता बनाने की दिशा में कोई मुकम्मल कदम ही कभी उठाया है। उलटे लोकहित के नाम पर निजी न्यासों और अन्य संस्थानों को चिकित्सा महाविद्यालय आदि खोलने का मौका देकर परिषद ने पहले ही चिकित्सा शिक्षा को आम आदमी की जेब से बाहर कर दिया है।निजी क्षेत्र को चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में उतरने की छूट देने के पीछे तर्क दिया गया कि सरकारी महाविद्यालय उतनी संख्या में चिकित्सक तैयार नहीं कर सकते, जितनी जरूरत है। यह भी कहा गया कि प्रतिस्पर्धा बढ़ने पर निजी महाविद्यालयों के शुल्क स्वत ही कम हो जाएंगे। लेकिन आज चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत निजी महाविद्यालयों की संख्या लगभग पांच सौ तक पहुंच जाने पर भी क्या चिकित्सा पाठ्यक्रमों के शुल्कों में गिरावट आई है? इसका जवाब ना में ही होगा। यही कारण है कि सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जवाब तलब किए जाने पर सरकार के निर्देश पर नीति आयोग ने अपनी रिपोर्ट के साथ राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग विधेयक का जो मसौदा सरकार को सौंपा है वह विवाद के घेरे में आ गया है।

सम्पादकीय

मालेगांव बम विस्फोट केस में 17 साल बाद बरी

यह एक विचित्र विडंबना है कि आतंकवाद जैसे जटिल मसलों पर भी किसी खास घटना की जांच, उसकी समूची प्रक्रिया और उसके निष्कर्ष अदालत के कठघरे में ढह जाते हैं और वर्षों से जेल में बंद या फिर आतंकवाद के आरोपों में मुकदमा झेल रहे लोग बरी हो जाते हैं। यह स्वाभाविक प्रक्रिया है कि किसी मामले में कार्रवाई के क्रम में कुछ लोगों को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ सबूतों के आधार पर अदालत में मुकदमा चलाया जाए। मगर समूचे मामले की सुनवाई के बाद अगर सभी आरोपी बरी कर दिए जाएं, आरोप साबित करने के लिए पेश सबूतों पर सवाल उठें, तो यह किस तरह की कार्यप्रणाली का सबूत है? गौरतलब है कि पिछले सत्रह वर्षों से सुर्खियों में रहे मालेगांव बम विस्फोट के मामले में गुरुवार को मुंबई की विशेष एनआइए अदालत ने फैसला सुनाया और भाजपा की पूर्व सांसद साध्वी प्रज्ञा सिंह ठाकुर सहित सात लोगों को आरोपों से बरी कर दिया। सन 2008 में हुई उस घटना के संदर्भ में अदालत ने कहा कि केवल शक के आधार पर आरोप सिद्ध नहीं किए जा सकते। अदालत के इस फैसले से एक बार फिर कई सवाल उठे हैं। आतंकवादी वारदात जैसे किसी सबसे संवेदनशील मामले की पड़ताल करते हुए कोई एजंसी इतनी लापरवाह कैसे हो सकती है कि आरोप और आरोपियों को लेकर उसकी मुख्य स्थापनाएं खारिज कर दी जाएं। मालेगांव बम विस्फोट से जुड़े मुकदमे में विशेष अदालत के न्यायाधीश ने सभी अभियुक्तों को निर्दोष करार देते हुए कहा कि यह एक बेहद गंभीर मामला है, जिसमें आम नागरिक मारे गए, लेकिन अभियोजन पक्ष आरोप साबित करने के लिए निर्णायक सबूत पेश नहीं कर पाया। हैरानी की बात है कि एक ओर जिन सबूतों के आधार पर यह मुकदमा सत्रह वर्षों तक चलता रहा, वे इतने निराधार थे कि सभी आरोपियों को निर्दोष करार दिया गया, दूसरी ओर उन सबूतों के गलत साबित होने में इतने वर्ष लग गए! इसी तरह, मुंबई में सन 2006 में सिलसिलेवार विस्फोटों के उन्नीस वर्ष के बाद हाई कोर्ट ने सभी बारह आरोपियों को बरी कर दिया। उस मामले में भी अदालत ने यही कहा कि अभियोजन पक्ष आरोपों को साबित करने में नाकाम रहा। मुंबई में ट्रेनों में सिलसिलेवार हुए बम विस्फोटों की घटना में तब एक सौ नवासी यात्रियों की जान चली गई थी और आठ सौ चौबीस लोग घायल हो गए थे। सवाल है कि देश की शीर्ष जांच एजंसियों की कार्यप्रणाली और छानबीन का स्तर अगर यह है कि पकड़े गए आरोपियों को अदालत बरी कर देती है, तो आखिर उतनी बड़ी आतंकी घटना को अंजाम देने वाले कौन थे और उन्हें नहीं पकड़ पाने के लिए किसकी जिम्मेदारी तय की जाएगी। ऐसा कैसे संभव हो पाता है कि जो जांच एजंसियां आतंकवाद जैसे संवेदनशील मामलों में पूरी पड़ताल के बाद आरोपियों को कठघरे में खड़ा करती हैं, उनकी जांच अदालत में खामियों से भरी पाई जाती है, गवाहों के बयानों में विरोधाभास होते हैं, कई अपने बयान से मुकर जाते हैं और आखिर आरोपी बरी हो जाते हैं। इसके अलावा, एक ही मामले की जांच करते हुए अगर राष्ट्रीय जांच एजंसी और आतंक निरोधक दस्ते के आरोपपत्र में विरोधाभास होते हैं, तो यह किस तरह की कार्यप्रणाली और तालमेल को दर्शाता है?

जड़ धारणा

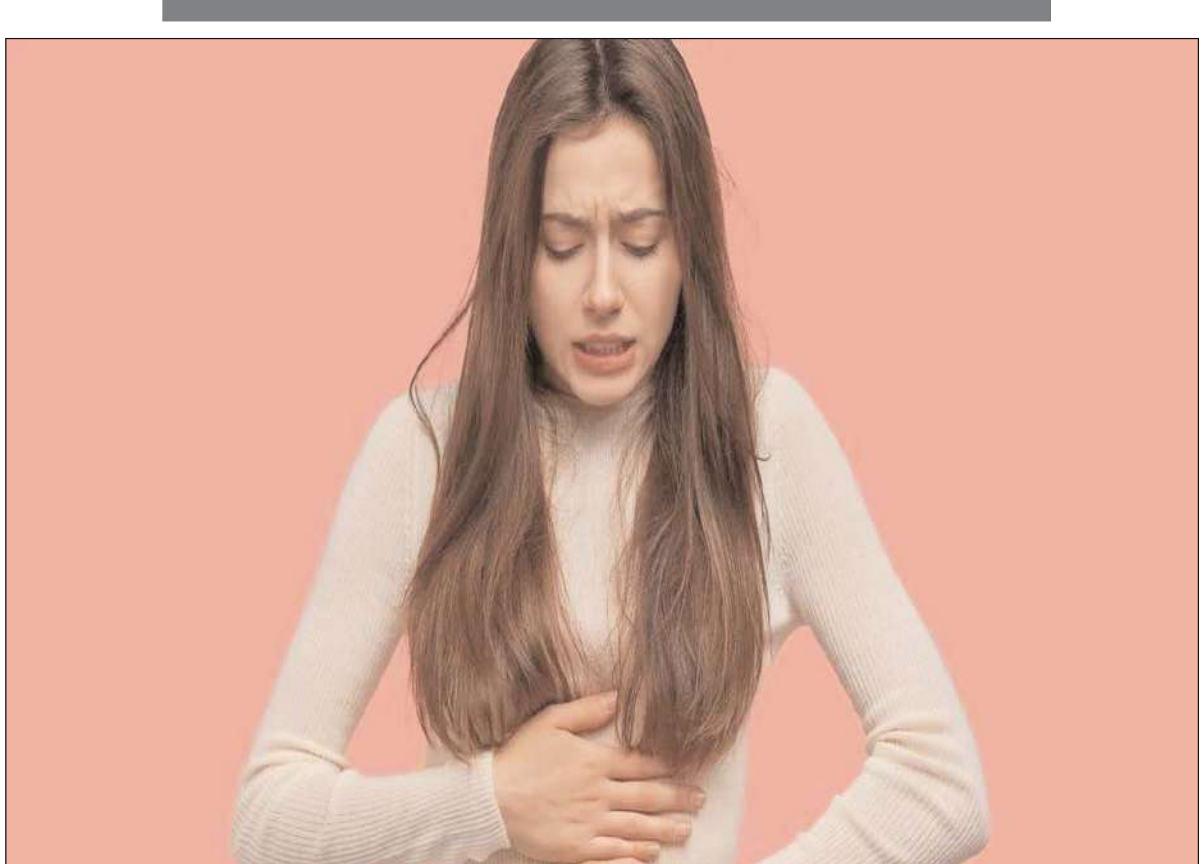

हर महीने दुनियाभर में लाखों महिलाओं को माहवारी आने पर पेट दर्द, बेचैनी, शर्म, चिंता और दयनीय चक्र का सामना करना पड़ता है। आम जनजीवन में यह हमेशा उन वर्जनाओं और मिथकों से घिरा रहा है जो महिलाओं को सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन के कई पहलुओं से बाहर करता है। भारत में आमतौर पर इस विषय पर बात करना सहज नहीं माना जाता है। आज भी इस विषय पर ज्ञान की उन्नति के लिए सामाजिक प्रभाव एक बाधा प्रतीत होता है। भारत के कई हिस्सों में सांस्कृतिक रूप से माहवारी को गंदा और अशुद्ध माना जाता है। इस दौर से गुजरती महिलाओं और लड़कियों को कई तरह के काम, रसोईघर और मंदिरों से दूर रखा जाता है। माहवारी के असुरक्षित हालात कई बार महिलाओं को गर्भाशय के कैंसर की ओर धकेल देते हैं। देश में आज भी कुछ ऐसे इलाके हैं, जहां पर मासिक धर्म वाली महिलाओं को नहाने की अनुमति नहीं होती। जबकि यह गलत है। यों यह मिथक बहुत पुराना है, जो हमारे यहां की कथाओं के जरिए जड़ पकड़ता रहा। जड़ धारणाओं ने इस प्राकृतिक चक्र को महिलाओं के लिए एक तकलीफदेह दौर बना दिया है। जबकि इससे संबंधित जितने भी तथ्य सामने आ चुके हैं, उसकी सामान्य जानकारी भी महिलाओं के प्रति धारणा को बदल दे सकता है। लेकिन समाज में पसरी कुंठित और स्त्री विरोधी सोच ने अमूमन हर बहाने से महिलाओं को कैद करके रखने का इंतजाम किया है। हालांकि महिलाओं की इस स्थिति का खमियाजा समाज को ही भुगतना पड़ा है, जिसमें उसका कोई विकास का चेहरा आईने में आधा-अधूरा दिखता है। शेयर बाजार की उठापटक से आज हर कोई असमंजस में है। अल्पकाल में ही ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाने का लालच, निवेशकों को जोखिम लेने के लिए उत्साहित कर रहा है। दुनिया भर में आर्थिक मंदी के चलते स्थिति खराब है। भारतीय बाजार भी इससे अछूता नहीं रहा। सेंसेक्स व निफ्टी दोनों सूचकांक नीचे हैं। निवेशकों को समझना होगा कि अच्छे मुनाफे की लिए दीर्घकालीन निवेश ही बेहतर विकल्प है। अनेक टीवी चैनलों पर निवेश के नुस्खे दिए जा रहे हैं, जिनमें से ज्यादातर कोरी कल्पना पर आधारित होते हैं। निवेशकों को अपनी सूझबूझ पर भरोसा करना चाहिए, जिससे बड़े नुकसान से बचा जा सके।

बोली की मार

क्या हम कभी इस पर विचार करते हैं कि अपने विरोधियों के लिए जिस तरह की भाषा का इस्तेमाल अखबारों में, समाचार चैनलों पर और सोशल मीडिया में किया जाता है, उसका समाज पर और खास कर बच्चों पर क्या दुष्परिणाम होगा? क्या अपने विरोधियों को धराशायी कर किसी भी कीमत पर सत्ता हासिल करना ही राजनीति का एक मात्र लक्ष्य रह गया है? क्या हमारे यहां लोकतंत्र की परंपरा अब यह नया मानक रचेगी कि हमारे भीतर की लोकतांत्रिक भावनाएं और विचार को खत्म होना होगा?

बचपन में हमें सिखाया गया था कि वाणी का एक पर्यायवाची शब्द 'सरस्वती' भी होता है। वैसे तो भारतीय संस्कृति की हिंदू परंपरा में किसी भी काम की शुरुआत 'गणेश' का नाम ले कर करने की परंपरा रही है। तुलसीदास अपने ग्रंथ 'रामचरितमानस' के आरंभ में वाणी यानी सरस्वती की आराधना गणेश से भी पहले करते हैं। इस काव्य के पहले श्लोक में तुलसीदास लिखते हैं- 'वंदे वाणीविनायकौ', यानी मैं सरस्वती और गणेश की वंदना करता हूं। भाषा और सरस्वती का यह विनिमेय न केवल भारतीय संस्कृति में भाषा की महत्ता को रेखांकित करता है, बल्कि आज के चुनावी दौर में काफी प्रासंगिक है। यह छिपा नहीं है कि भाषा का स्तर चुनावी सरगर्मी के बीच गिरता जा रहा है और कोई भी राजनीतिक दल इससे अछूता नहीं है।

जिस देश में आज से पांच सौ साल पहले से ही ऐसे ग्रंथों की रचना होती आई है, सामान्य व्यवहार में अक्सर 'मीठी वाणी' को बहुत महत्त्व दिया गया है, बोलने के लहजे को बेहतर या कमतर मनुष्य होने का रूपक माना गया, अक्सर दुश्मनों और नकारात्मक प्रवृत्ति वाले लोगों के लिए भी सम्मानपूर्ण भाषा का इस्तेमाल किया जाता रहा हो, उसी देश के सार्वजनिक जीवन में भाषा का गिरता स्तर आखिरकार क्या दर्शाता है! ब्रिटिश लेखक जॉर्ज ऑरवेल ने अपने प्रसिद्ध आलेख 'पॉलिटिक्स एंड द इंग्लिश लैंग्वेज' (1946) में कहा था कि अंग्रेजी भाषा के गिरते स्तर का सीधा संबंध राजनीतिक और सामाजिक मूल्यों में गिरावट से है। ऐसा लगता है कि हमारे राजनेताओं और बुद्धिजीवियों की नजर में इस तरह की बातों का कोई मूल्य नहीं है। क्या हम कभी इस पर विचार करते हैं कि अपने विरोधियों के लिए जिस तरह की भाषा का इस्तेमाल अखबारों में, समाचार चैनलों पर और सोशल मीडिया में किया जाता है, उसका समाज पर और खास कर बच्चों पर क्या दुष्परिणाम होगा? क्या अपने विरोधियों को धराशायी कर किसी भी कीमत पर सत्ता हासिल करना ही राजनीति का एक मात्र लक्ष्य रह गया है? क्या हमारे यहां लोकतंत्र की परंपरा अब यह नया मानक रचेगी कि हमारे भीतर की लोकतांत्रिक भावनाएं और विचार को खत्म होना होगा? क्या हम सभ्यता के उस दौर में कदम रखने जा रहे हैं जहां अपने से भिन्न मत रखने वाले और कमजोर तबकों के लोगों के अधिकारों के लिए कोई जगह नहीं होगी? ब्रिटिश पत्रकार और उपन्यासकार रॉबर्ट हैरिस के ऐतिहासिक उपन्यास 'डिक्टेटर' में प्राचीन रोम के प्रसिद्ध राजनेता और कुशल वक्ता सिसरो का कहना है कि राजनेता का प्रमुख लक्ष्य अपने देश की खुशी होनी चाहिए, न कि यश हासिल करने की लालसा। लेकिन जब किसी भी कीमत पर सत्ता, वैभव और धन पहली प्राथमिकता बन जाए तो भाषा और नैतिकता दोनों का पतन आश्चर्य की बात नहीं। आज के राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य में भाषा के गिरते हुए स्तर को देखते हुए दिनकर की 'रश्मिरथी' से ये पंक्तियां बरबस याद आती हैं। इन पंक्तियों में कर्ण कृष्ण से कहते हैं- 'वृथा है पूछना, था दोष किसका/ खुला पहले गरल का कोष किसका/ जहर अब तो सभी का खुल रहा है/ हलाहल से हलाहल धुल रहा है।' जिस तरह से महाभारत के युद्ध में धर्म का उल्लंघन दोनों तरफ से हुआ था, ठीक उसी प्रकार किसी एक राजनेता या दल को भाषा के गिरावट के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। न जाने भाषा के स्तर पर हलाहल से हलाहल धोने की प्रवृत्ति भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में कब और कैसे आ गई और कब तक रहेगी? प्रश्न यह उठता है कि इस नैतिक पतन के परिणाम कितने दूरगामी होंगे? ऑरवेल ने यह भी कहा था कि अगर हमारे विचार हमारी भाषा को भ्रष्ट कर सकते हैं तो हमारी भाषा भी हमारे विचारों को भ्रष्ट कर सकती है। अपरिष्कृत विचार अपरिष्कृत भाषा की जननी है या इसके विपरीत अनैतिक भाषा अनैतिक विचार को जन्म देती है। यह एक विचारणीय प्रश्न हो सकता है। लेकिन इस बात पर कोई दो मत नहीं हो सकता कि हमें अपने विरोधियों का भी सम्मान करना चाहिए। सुभाषचंद्र बोस और महात्मा गांधी में वैचारिक मतभेद थे, लेकिन दोनों ही एक दूसरे का सम्मान करते थे। भाषा में गिरावट का एक प्रमुख कारण है हाल के दिनों में किताब पढ़ने की संस्कृति में लगातार गिरावट। जब ज्ञान का स्रोत मानक किताबें न हो कर सोशल मीडिया के हल्के-फुल्के के संवाद हो जाएं तो वाद-विवाद की संस्कृति का पतन तो अवश्यंभावी है।

मुश्किल में फंसी तृप्ति डिमरी की 'धड़क 2

पिछले साल सिद्धांत चतुर्वेदी और तृप्ति डिमरी की फिल्म 'धड़क 2' की घोषणा की गई थी। फिल्म नवंबर 2024 में रिलीज होने वाली थी। हालांकि, बाद में इसे साल 2025 तक के लिए टाल दिया गया। इस बीच चर्चा थी कि यह फिल्म इस साल होली के त्यौहार के आस-पास रिलीज हो सकती है। होली तो नजदीक आ रही है, लेकिन फिल्म का प्रमोशन अभी तक शुरू नहीं हुआ है। बॉलीवुड हंगामा की एक रिपोर्ट के मुताबिक 'धड़क 2' को सीबीएफसी से प्रमाणन प्राप्त करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। आइए जानते हैं विस्तार सेज किस समस्या का करना पड़ रहा सामना? बॉलीवुड हंगामा की एक रिपोर्ट के अनुसार पोर्टल को एक सूत्र ने बताया, धड़क 2 जाति के मुद्दों पर आधारित है और एक चौंकाने वाली कहानी है। सीबीएफसी की जांच समिति ने इस तरह की फिल्म के लिए निर्माताओं की सराहना की, लेकिन इसके कंटेंट की वजह से वह इस बात पर विचार कर रहे हैं कि फिल्म को क्या रेटिंग दी जानी चाहिए और कौन से सीन काटे जाने चाहिए, यदि कोई ऐसा सीन हो।

सेंसर की मंजूरी के बाद शुरू होगा प्रमोशन?

रिपोर्ट्स के मुताबिक एक ट्रेड एक्सपर्ट ने पोर्टल को बताया कि 'धड़क 2' के निर्माता सेंसर की प्रक्रिया पूरी होने के बाद ही फिल्म का प्रमोशन शुरू करेंगे। इसलिए, अगर उन्हें सीबीएफसी से मंजूरी मिल जाती है, तो 'धड़क 2' 14 मार्च को रिलीज हो सकती है या इसके डेट को आगे बढ़ाया जा सकता है।

तमिल वर्जन पास तो 'धड़क 2' पर क्यों सवाल?

कहा जा रहा है कि 'धड़क 2' तमिल फिल्म 'परीयेरुम पेरुमल' का रीमेक है और इस फिल्म को सीबीएफसी के साथ किसी भी मुश्किल का सामना नहीं करना पड़ा था। ऐसे में यह सवाल भी उठता है कि इसकी कहानी भी वही होगी तो फिर इस फिल्म पर सवाल क्यों उठ रहे हैं? साल 2018 में रिलीज हुई फिल्म 'धड़क' भी इसी विषय पर आधारित थी। जान्हवी कपूर और ईशान खट्टर की फिल्म मराठी फिल्म सैराट की रीमेक थी। फिल्म का मोशन पोस्टर जब रिलीज हुआ था, तो उस पर लिखा था, एक था राजा, एक थी रानी। जात अलग थी खतम कहानी। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि फिल्म जातीय मुद्दों पर आधारित होगी।

निजी जिंदगी पर ट्रोल करने वालों को सबा ने दिया करारा जवाब

बॉलीवुड की अभिनेत्री सबा आजाद अकसर ऋतिक रोशन की गर्लफ्रेंड होने को लेकर सोशल मीडिया पर ट्रोल होती हैं। हाल ही में उन्होंने स्क्रीन को दिए इंटरव्यू में खुलासा किया है कि वह सोशल मीडिया पर असहज होती हैं। जब भी उन्हें सोशल मीडिया पर कोई ट्रोल करता है, तो वह इससे प्रभावित होती हैं।

सोशल मीडिया से नहीं रह सकते दूर सबा आजाद ने कहा कि सोशल मीडिया थोड़ा अजीब है। उन्होंने कहा कि मैं लगातार तीन दिन तक पोस्ट करती हूं और फिर एक महीने के लिए गायब हो जाती हूं। यह कलाकारों के लिए एक तरह का पोर्टफोलियो बन गया है। इससे ऐसे रिश्ता है कि इसके साथ नहीं रह सकते न ही इसके बिना रह सकते हैं। जैसे-जैसे लोगों में असंतोष बढ़ता है, वैसे-वैसे ऑनलाइन इस तरह का व्यवहार भी बढ़ता है।

चमड़ी मोटी हो गई है

सबा ने आगे कहा कि अगर आप खुश इंसान हैं तो आप एक फेक अकाउंट बनाकर किसी को ट्रोल नहीं करेंगे। हम उस इंसान की फिक्र क्यों करें जो बिना नाम, बिना चेहरे का है और अपनी जिंदगी से निराश है। सबा ने आगे कहा कि उन्हें इतना ट्रोल किया गया है कि अब उनकी चमड़ी मोटी हो गई है। सबा ने बताया कि नाराज होने के बजाए दूसरा रास्ता यह है कि इसे देखा जाए। मैं दुखी हूं कि ट्रोलर्स को ये सब करना पड़ा रहा है। सबा ने आगे कहा शुरूआत में मैंने सोचा कि अगर मैं अपने काम पर ध्यान दे रही हूं, तो आपको क्या दिक्कत है? लेकिन फिर, जब मैंने इस पर विचार किया, तो मुझे एहसास हुआ कि यह सिर्फ दुखद है, और इसके लिए अपनी नींद खराब करना जरूरी नहीं है। लेकिन अब मेरी चमड़ी मोटी हो गई है। मैंने भले ही लंबे वक्त तक दूसरा गाल आगे कर रखा हो, लेकिन कभी-कभी मुझे लगता है कि मुझमें अभी भी जवाब देने की ताकत है। अब आप मुझसे ये उम्मीद नहीं कर सकते कि मैं खामोश रहूं। मुझे परवाह नहीं कि अब लोग मुझे क्या कहेंगे। हाल ही में जब हू इज योर गाइनैक के दूसरे सीजन का शो रिलीज किया गया तब किसी ने कहा कि वह ऋतिक की गर्लफ्रेंड हैं इसलिए उन्हें काम करने की जरूरत नहीं है। इस पर सबा ने ट्रोलर को जवाब दिया था।

रिश्ते के बारे में

सबा और ऋतिक रोशन ने साल 2022 में एक दूसरे को डेटिंग करना शुरू किया। दोनों ने अपने रिश्ते का ऐलान अक्टूबर 2022 में किया। तब ऋतिक ने सबा के साथ तस्वीर शेयर की थी। तभी से सबा को ऋतिक की गर्लफ्रेंड होने के लिए ट्रोल किया जा रहा है। हाल ही में सबा आजाद को क्राइम बीट में देखा गया। इस फिल्म में सबा के अलावा सुधीर मिश्रा और संजीव कौल हैं। इसमें साकिब सलीम, राहुल भट्ट के अलावा दानिश हुसैन हैं। यह फिल्म सोमनाथ बताब्याल की नॉवेल द प्राइस यू पे पर आधारित है। इसमें खोजी पत्रकारिता और रिपोर्टिंग के बारे में दिखाया गया है।

क्या शाहरुख खान की 'पठान' का बनेगा प्रीक्वल? जॉन अब्राहम ने कहानी को लेकर हिंट दिया

इन दिनों जॉन अब्राहम अपनी फिल्म 'डिप्लौमेट' को लेकर चर्चा में हैं। इस फिल्म में जॉन ने असल डिप्लौमेट रहे जेपी सिंह का रोल किया है। फिल्म की कहानी पाकिस्तानी में फंसी, भारत की एक बेटी को सुरक्षित घर वापस लाने की है। इस फिल्म को लेकर तो जॉन खुश हैं। साथ ही वह चाहते हैं कि प्रोड्यूसर आदित्य चोपड़ा फिल्म 'पठान' का प्रीक्वल भी बनाएं।

बनना चाहिए 'पठान' का प्रीक्वल

हॉलीवुड रिपोर्टर को दिए गए एक इंटरव्यू में एक्टर जॉन अब्राहम कहते हैं, 'मैं किसी फ्रैंचाइजी फिल्म का हिस्सा तभी बनता हूं, जब उसमें मेरा किरदार खास होता है। जैसे फिल्म 'पठान' में जिम का मेरा रोल बहुत ही कूल, स्पेशल था।' आगे वह कहते हैं, 'आदित्य चोपड़ा को पठान का प्रीक्वल बनाना ही चाहिए। इसमें मेरे किरदार जिम की बैक स्टोरी क्या है, इसे दिखाया जा सकता है। उम्मीद है कि हम इस फिल्म का प्रीक्वल करेंगे।

कहानी को लेकर क्या बोले जॉन

फिल्म 'पठानी' की कहानी को लेकर भी जॉन बताते हैं कि उनके किरदार जिम के पास्ट के बारे में दर्शकों को पता होना चाहिए। दरअसल, वह मानते हैं कि जिम के किरदार में दम है, उसकी कहानी अच्छी बन सकती है। साथ ही जब उनसे पूछा गया कि क्या वह यशराज यूनिवर्स की फिल्म 'वॉर' में उनके किरदार जिम के लिए कोई संभावना बन सकती है। तो इस पर भी जॉन का कहना है कि कुछ भी संभव हो सकता है।

पठान में विलेन बने थे जॉन

शाहरुख खान की फिल्म 'पठान' में जॉन अब्राहम विलेन के रोल में थे, इस किरदार में कई लेयर्स देखी गईं। शाहरुख के किरदार पठान को यह किरदार अच्छी खासी टक्कर देता है। फिल्म में दीपिका पादुकोण भी एक अहम रोल नजर आईं।

इन फिल्मों में भी आएंगे नजर

जॉन अब्राहम फिल्म 'डिप्लौमेट' के अलावा कुछ और फिल्मों में भी अभिनय कर रहे हैं। इसमें 'तेहरान' और 'तारिक' जैसी फिल्में भी शामिल हैं। इन फिल्मों से जॉन बतौर प्रोड्यूसर भी जुड़े हुए हैं।

तंडेल की सफलता के बाद डीजे बने नागा चैतन्य

नागा चैतन्य इन दिनों अपनी फिल्म तंडेल की सफलता का जश्न मना रहे हैं। अब नागा चैतन्य की एक प्यारी तस्वीर सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। शोभिता धुलिपाला ने हाल ही में अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर अपने पति की एक तस्वीर शेयर की है, जिसमें वे डीजे बन गए हैं। नागा चैतन्य ने डीजे की भूमिका निभाई और अपने अंदर के संगीतकार को डेक पर उतारा। फोटो में नागा चैतन्य को प्रोफेशनल सेटअप के साथ म्यूजिक मिक्सिंग में व्यस्त दिखे। स्वेटर के साथ कैजुअल कपड़े पहने वह अपने गले में हेडफोन लटकाए डीजे की तरह ध्यान केंद्रित करते हुए दिख रहे थे। शोभिता ने तस्वीर साझा करते हुए चैतन्य को टैग किया और दिल वाले इमोजी भी बनाए।

करण जौहर के धर्मा प्रोडक्शंस ने मार्को निर्देशक के साथ मिलाया हाथ, एक्शन फिल्म पर साथ करेंगे काम

मलयालम सिनेमा के एक्शन स्टार हनीफ अदेनी बॉलीवुड में आने की तैयारी कर रहे हैं और वह इसे अपने स्टाइल में कर रहे हैं। मार्को की भूमिका में धमाल मचाने के बाद फिल्म निर्माता को किसी और ने नहीं, बल्कि करण जौहर के धर्मा प्रोडक्शंस ने एक धमाकेदार एक्शन फिल्म के लिए साइन किया है, जो जितनी दमदार है, उतनी ही मजेदार भी है। द ग्रेट फादर (2017) और मिखेल (2019) जैसी फिल्मों से अपनी अलग पहचान बनाने वाले हनीफ अदेनी ने एक बार फिर मार्को के साथ अपनी प्रतिभा साबित की, जो एक क्रूर और अथक एक्शन से भरपूर फिल्म है। अब, वह अपनी सिग्नेचर हाई-इम्पैक्ट स्टोरीटेलिंग को हिंदी सिनेमा में लाने के लिए तैयार हैं। कथित तौर पर आगामी प्रोजेक्ट को बहुभाषी रिलीज के लिए प्लान किया जा रहा है। फिल्म के बारे में विवरण अभी भी गुप्त रखा गया है।

आधिकारिक एलान का इंतजार

हनीफ अदेनी के जुड़ने से धर्मा प्रोडक्शंस बैनर बड़े पर्दे पर एक्शन की उम्मीद जगा रहा है। दूसरी ओर इसके आधिकारिक एलान का इंतजार है। साथ ही कलाकारों की घोषणा होनी भी बाकी है। हनीफ अदेनी एक फिल्म निर्देशक और पटकथा लेखक हैं, जो मलयालम सिनेमा में काम करते हैं। उन्होंने 2017 की फिल्म द ग्रेट फादर से निर्देशन की दुनिया में कदम रखा था। पटकथा लेखक के रूप में उनका अगला काम अमीर है, जिसमें ममूटी मुख्य भूमिका में हैं। धर्मा प्रोडक्शंस अब कई प्रोजेक्ट्स की रिलीज की तैयारी कर रहा है, जिनमें से एक है- केसरी- चैप्टर 2, जो जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद की घटनाओं पर आधारित है। यह फिल्म अक्षय कुमार, आर. माधवन और अनन्या पांडे स्टारर यह फिल्म राजनेता और वकील सी. शंकरन नायर के इर्द-गिर्द घूमती वास्तविक जीवन की घटनाओं पर आधारित है। इसके साथ ही, धड़क 2 भी है, जो 2018 की तमिल फिल्म परियेरम पेरुमल पर आधारित एक शक्तिशाली लव ड्रामा है, जिसमें तृप्ति डिमरी और सिद्धांत चतुर्वेदी मुख्य भूमिका में हैं।

संजय दत्त ने बताया, कब तांडव मचाएगी 'द भूतनी'

अभिनेता संजय दत्त अपनी अपकमिंग फिल्म 'द भूतनी' की रिलीज को लेकर उत्साहित हैं। अभिनेता ने बुधवार को महाशिवरात्रि के मौके पर सोशल मीडिया पर अपकमिंग एक्शन-हॉरर कॉमेडी के टाइटल के साथ ही रिलीज की तारीख भी बताई। इंस्टाग्राम पर एक्टर का पोस्ट शेयर करते हुए सोहम रॉकस्टार एंटरटेनमेंट और थ्री डायमेंशन मोशन पिक्चर ने बताया कि उनकी अपकमिंग फिल्म का नाम 'द भूतनी' रखा गया है। यह फिल्म 18 अप्रैल 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। अभिनेता संजय दत्त ने लिखा, इस गुड फ्राइडे, डर को एक नई डेट मिल गई है। पहले से कहीं ज्यादा हॉरर, एक्शन और कॉमेडी के लिए तैयार हो जाइए! 'द भूतनी' मचाएगी तांडव।

बता दें, पहले अपकमिंग फिल्म का नाम 'द वर्जिन ट्री' था, लेकिन अब इसका नाम बदलकर 'द भूतनी' रख दिया गया है। निर्माताओं ने फिल्म का एक छोटा टीजर भी शेयर किया, जो हमें रहस्यमयी दुनिया की झलक दिखाती है, जहां प्यार, अंधकार में बदल जाता है। सिद्धांत सचदेव के निर्देशन में बनी इस फिल्म में संजय दत्त, मौनी रॉय, पलक तिवारी, सनी सिंह और आसिफ खान जैसे सितारे प्रमुख भूमिकाओं में हैं। सोहम रॉकस्टार एंटरटेनमेंट और थ्री डायमेंशन मोशन पिक्चर्स के तहत दीपक मुकुट, संजय दत्त, हुनर मुकुट और मान्यता दत्त ने फिल्म का निर्माण किया है। निर्माताओं ने मंगलवार को सोशल मीडिया पर फिल्म का एक डरावना पोस्टर शेयर किया था, जिसमें घोषणा की थी कि प्रोजेक्ट का टाइटल और रिलीज की तारीख 26 फरवरी को महाशिवरात्रि के अवसर पर सामने आएगी। पोस्टर को शेयर करते हुए निर्माताओं ने लिखा, महादेव की भक्ति में शक्ति है! बहुत हुआ इंतजार! बाबा तारीख तय कर रहे हैं! वर्कफ्रंट की बात करें तो संजय दत्त के पास बहुप्रतीक्षित सीक्वल 'वेलकम टू द जंगल' भी है। अहमद खान के निर्देशन में बनी इस फिल्म में संजय दत्त के साथ अक्षय कुमार, रवीना टंडन, दिशा पटानी, सुनील शेट्टी, लारा दत्ता, बॉबी देओल, जैकलीन फर्नांडीज, परेश रावल, अरशद वारसी, राजपाल यादव, जॉनी लीवर, श्रेयस तलपड़े और तुषार कपूर जैसे कलाकार अहम भूमिकाओं में हैं। इसके अलावा, संजय दत्त के पास 'सन ऑफ सरदार 2' भी है, जिसमें वह अजय देवगन और मृणाल ठाकुर के साथ मुख्य भूमिका में हैं। विजय कुमार अरोड़ा के निर्देशन में तैयार इस फिल्म का निर्माण अजय देवगन ने जियो स्टूडियो के सहयोग से देवगन फिल्म्स के बैनर तले किया है।

निर्देशक अरुण माथेश्वरन की फिल्म में दिखेंगे अक्षय

अक्षय कुमार पिछली बार फिल्म स्काई फोर्स में नजर आए थे, जिसने बॉक्स ऑफिस पर औसत कमाई की थी। हालांकि, अक्षय ने फिल्म में अपने अभिनय के जरिए खूब वाहवाही लूटी थी। आने वाले दिनों में अक्षय की कई फिल्में रिलीज होने वाली हैं और अब उनके खाते से एक नई फिल्म जुड़ गई है। दरअसल अक्षय निर्देशक अरुण माथेश्वरन की अगली फिल्म में मुख्य भूमिका निभाने वाले हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक अरुण बॉलीवुड में आने की तैयारी कर रहे हैं और अपनी पहली हिंदी फिल्म के लिए वह अक्षय के साथ बातचीत कर रहे हैं।

अक्षय को उनकी फिल्म की कहानी पसंद आई है और वह इसका हिस्सा बनने के लिए अपनी रजामंदी भी दे चुके हैं। फिल्म एक्शन थ्रिलर होने वाली है। फिल्म काफी बड़े स्तर पर बनने वाली है।

दीवार तोड़ दुकान में घुसे चोर, 20 हजार उड़ाए

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। कस्बे की सबसे व्यस्ततम जगह स्टेशन बाजार में देर रात चोरों ने दहशत फैलाई। चोरों ने चाय-नाश्ते की दुकान के पीछे की दीवार तोड़ दी और करीब 20 हजार रुपए नकद सहित हजारों रुपए का सामान चोरी करके ले गए। दुकानदार राजेश बगड़िया ने सुबह दुकान खोली तो चोरी की घटना का पता लगा। दुकानदार राजेश बगड़िया ने आरोप लगाया कि पुलिस को चोरी की सूचना देने के 5 घंटे बाद भी मौका देखने नहीं पहुंची। जिसको लेकर व्यापारियों में आक्रोश है। चोरों ने घटनास्थल के पास स्थित ज्वैलरी की दुकान को भी निशाना बनाने का प्रयास किया। चोरों ने ज्वैलरी की दुकान की दीवार तोड़ने की भी कोशिश की।

सोशल मीडिया पर थाने की रील डालने पर युवक गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। सोशल मीडिया का गलत उपयोग व्यक्ति को परेशानी में डाल देता है, ऐसा ही मामला रींगस में देखने को मिला जहां पर एक युवक की ओर से पुलिस थाने से पिकअप निकालते हुए रील बनाकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर वायरल कर दी। युवक ने रील के साथ एक आक्रामक गाना जोड़ कर दहशत फैलाने का प्रयास किया जिस पर रींगस पुलिस ने कार्रवाई करते हुए युवक को गिरफ्तार किया। थानाधिकारी सुरेश कुमार ने बताया कि सोशल मीडिया पर निगरानी के दौरान एक रींगस पुलिस थाने का वीडियो मिला जिसमें कुछ दिनों पहले एमवी एक्ट में जब्त की गई पिकअप कोर्ट से रिलीज होने के बाद थाने से निकालते हुए रील बनाई गई थी और उस पर एक आक्रामक गाना लगाकर वायरल किया गया था। जिस पर मुकेश कुमार (26) पुत्र माधुराम यादव निवासी ढाणी हीरा की तन मंढा को गिरफ्तार किया गया। गौरतलब है कि रींगस पुलिस की ओर से 27 मई 2025 को युवक की पिकअप को एमवी एक्ट में जब्त किया गया था, इसके 4 दिन बाद न्यायालय से रिलीज आदेश लाने पर पिकअप को छोड़ा गया था, थाने से पिकअप निकालते हुए युवक ने रील बनाई और उस पर आक्रामक गाना जोड़ कर वायरल किया था।

राज्यसभा सांसद मदन राठौड़ को संसद रत्न अवॉर्ड मिलने पर बधाई

जयपुर टाइम्स

मण्डावा(निस)। भाजपा युवा नेता अनूप शर्मा व उनकी टीम ने शनिवार को जयपुर स्थित प्रदेश भाजपा मुख्यालय पर राज्यसभा सांसद और भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ को संसद रत्न अवॉर्ड मिलने पर बधाई दी। अनूप शर्मा ने कहा कि मदन राठौड़ को राज्यसभा की ओवरऑल कैटेगरी में सक्रिय भूमिका निभाने पर यह सम्मान प्रदेश की जनता की सेवा का परिणाम है। ये अवॉर्ड उन्हें जनहित के काम करने में सदैव प्रोत्साहित करता रहेगा।

कोटपूतली विधायक पटेल ने किया 'पॉलीथीन मुक्त ग्राम' अभियान का शुभारंभ

गांवों में पॉलीथीन प्रतिबंध से कृषि और पशुपालन को मिलेगा बढ़ावा

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली,(निस) कोटपूतली विधायक हंसराज पटेल ने राजस्थान पशु चिकित्सा कर्मचारी संघ द्वारा प्रदेशभर में शुरू किए गए पॉलीथीन मुक्त ग्राम अभियान के तहत पोस्टर का विमोचन कर अपने विधानसभा क्षेत्र में इस पहल का आगाज किया। पटेल ने कहा कि यदि गांवों में पॉलीथीन और प्लास्टिक का उपयोग बंद किया जाए, तो इससे पशुपालन व कृषि कार्यों में किसानों को बड़ी राहत मिलेगी। साथ ही यह कदम पशुधन की सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी महत्वपूर्ण रहेगा। इस अवसर पर प्रदेश मंत्री बुधराम कसाना, दिनेश शर्मा, बृजेश वशिष्ठ, रोशन लाल गुर्जर समेत अनेक पदाधिकारियों व कर्मचारियों ने विधायक पटेल का चांदी का मुकुट पहनाकर व माल्यार्पण कर स्वागत किया। पॉलीथीन खाने से पशुओं की अकाल मृत्यु हो जाती है, जिससे किसानों को आर्थिक नुकसान होता है। यह नालियों को अवरुद्ध करता है, गंदगी और किचड़ फैलाता है और कई बीमारियों का कारण बनता है।

हाईटेंशन लाइन भूमि अधिग्रहण का मुआवजा देने की मांग तहसीलदार को सौंपा ज्ञापन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। उपखंड क्षेत्र के गांव बिल्यू बास रामपुरा व मेहरी के किसानों ने हाईटेंशन लाइन का भूमि अधिग्रहण सहित अन्य मुआवजा देने की मांग को लेकर अखिल भारतीय किसान सभा के नेतृत्व में शनिवार को भानीपुरा तहसीलदार अनिल मीणा को ज्ञापन देकर मांग की है। बिल्यू बास रामपुरा के पंचायत मुख्यालय पर भानीपुरा तहसीलदार अनील मीणा, हाईटेंशन लाइन के ठेकेदार, कर्मचारी व बिजली विभाग के कर्मचारियों के साथ किसानों की वार्ता हुई। जिसमें किसी तरीके का समाधान नहीं निकला। किसानों ने टावर लगाने से हुए भूमि अधिग्रहण का बाजार मूल्य से चार गुना मूल्य दिया जाए। टावर पर तार कसने से उसका मुआवजा व फसल नुकसान का मुआवजा दिया जाए। खेत में फसल, कुंड, पेड़ इत्यादि की क्षति हुई उसका मुआवजा दिया जाए। फसल नुकसान का एमएसपी रेट पर मुआवजा दिया जाए आदि मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपा है। किसान सभा के रामकृष्ण छिम्पा ने बताया सरकार और प्रशासन मिलकर किसानों के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। हाईटेंशन लाइन के जब खंबे लगाए गए थे तो उनका भी भूमि अधिग्रहण का मुआवजा बकाया चल रहा है। वर्तमान में किसानों की खड़ी फसलों में गाड़ियों से तार खींचे जा रहे हैं। जिससे किसानों की फसलें खराब हो रही है। किसान भगतूराम सहारण ने बताया कि हाई टेंशन लाइन के तार खींचे जा रहे है। जिससे खेतों में खड़ी फसलें खराब हो रही है। भूमि अधिग्रहण का मुआवजा किसानों को दिया जाए नहीं तो बड़ा आंदोलन करेंगे। इस दौरान ज्ञापन देने वालों में किसान सभा के काशीराम सारण, रामकरण भांभू, रामचंद्र स्वामी, मुखराम, मनीराम, रामस्वरूप सारण, लालचंद, अमर सिंह राजपुरोहित, छोटू सिंह, बाबूलाल, बालू राम, मदन सिंह पुरोहित, ओम प्रकाश, सुरेंद्र सहित बिल्यू बास रामपुरा व मेहरीक्षेत्र के किसान मौजूद रहे। भानीपुरा तहसीलदार अनिल मीणा ने बताया कि किसानों की मांगो उच्च अधिकारियों को अवगत करवाएंगे और किसानों के हक की बात रखेंगे।

बाईक असंतुलित होकर डिवाईडर से टकराई, दो घायल

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली, (निस) कस्बे से होकर गुजर रहे दिल्ली-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर ग्राम रघुनाथपुरा के पास शुक्रवार दोपहर एक बाईक असंतुलित होकर डिवाईडर से टकरा गई। जिसमें दो जने गंभीर रूप से घायल हो गये। राजकीय बीडीएम जिला अस्पताल ट्रोमा सैंटर के नर्सिंग अधिकारी श्रीराम सराधना ने बताया कि दुर्घटना में घायल बागावास अहीरान निवासी असलम (40) पुत्र मामदीन खान व ग्राम बड़नगर निवासी कालू (50) पुत्र असलम खान को उपचार के लिये गंभीरावस्था में राजकीय बीडीएम जिला अस्पताल में भर्ती करवाया गया, जहां उनका उपचार जारी है।

श्री श्याम मंदिर कमेटी ने पीएम श्री राजकीय विद्यालय खाटू में नए भवन बनाने का सहमति पत्र किया भेट

मंत्री और मंदिर कमेटी का संस्था प्रधान ने जताया आभार

जयपुर टाइम्स

खाटूश्यामजी (निस)। श्याम की नगरी खाटूश्याम जी में पीएम श्री राजकीय विद्यालय में नए भवन की जांच रिपोर्ट में सार्वजनिक निर्माण विभाग ने भवन को पूर्ण रूप से जीर्ण शीर्ण घोषित कर दिया जिसके बाद खाटूश्यामजी के स्थानीय कस्बेवासियों और विद्यालय स्टाफ की मांग पर श्री श्याम मंदिर कमेटी ने पीएमश्री राजकीय विद्यालय की संस्था प्रधान रंजना जांगिड़ को कमेटी अध्यक्ष बुलाकर कमेटी मंत्री मानवेंद्र सिंह चौहान ने नए भवन बनाने का सहमति पत्र भेंट किया। इस प्रकार की सेवा कार्य के लिए सभी ने सराहना की। जनहित को देखते हुए कमेटी की ओर से की गई सराहनीय पहल के लिए विद्यालय परिवार ने श्री श्याम मंदिर कमेटी का आभार व्यक्त किया। इस दौरान संस्था प्रधान रंजना जांगिड़, व्यवस्थापक संतोष शर्मा, विकास शर्मा, भानु प्रकाश सरोज सहित मंदिर कमेटी का स्टाफ मौजूद रहे।

पौधारोपण कर प्रकृति का संरक्षण का दिया संदेश

पंचायत बीलवा वार्ड नंबर 7 में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत किया पौधारोपण

जयपुर टाईम्स

जयपुर/सांगानेर (निस) उपखंड क्षेत्र में ग्राम पंचायत बीलवा वार्ड नंबर 7 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चल रहे एक पेड़ मां के नाम अभियान और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के हरियालो राजस्थान कार्यक्रम के तहत ग्राम पंचायत बीलवा वार्ड नं 7 में पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें आलोक पारीक ने बताया कि प्रकृति मानव जाति के लिए एक वरदान है और इसका संरक्षण आवश्यक है वर्षा रोपण अभियान एक सराहनीय पहल है उन्हें लोगों से इस मुहीम में बढ़ चढ़कर भाग लेने के अपील की। साथ ही कहा कि हर व्यक्ति को मां के नाम पर एक पेड़ जरूर लगाना चाहिए।पर्यावरण की सुरक्षा से ही जीवन संभव है। आज 1100 पेड़ों का वितरण किया गया है और हर वर्ष में इसी तरह से कार्यक्रम आयोजित करते रहते। जिसमें मुख्य अतिथि भाजपा नेता आलोक पारीक, डॉक्टर लक्ष्मण प्रसाद शर्मा, प्रधानाचार्य एमजीजीएस स्कूल बीलवा ,कमलेश कुमार शर्मा, वार्ड पंचलक्ष्मी नारायण बागड़ा, सुरेश कुमार बागड़ा, रामगोपाल, विमलेश शर्मा ,रोहित बागड़ा, विष्णु शर्मा, विकास ,राम अवतार , वार्ड पंच मोहित भूरा ,वह वार्ड नंबर 7 के सभी लोग उपस्थित रहे हैं।

जिला स्तरीय किसान समारोह का आयोजन

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली,(निस) प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना की 20 वीं किश्त के अंतरण के अवसर पर शनिवार को यहां के राजकीय सरदार उच्च माध्यमिक विद्यालय में जिला स्तरीय किसान समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में जिला स्तरीय अधिकारी एवं आमजन उपस्थित रहे। जिला स्तर के कार्यक्रम राष्ट्र स्तर पर वाराणसी में आयोजित एवं राज्य स्तर पर बांसवाड़ा में आयोजित कार्यक्रम से वर्चुअली जुड़े। इस दौरान वर्चुअल माध्यम से किसानों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लाईव संबोधन को सुना और देखा। पीएम ने इस दौरान किसानों के कल्याण के लिए केंद्र सरकार की प्रतिबद्धता को दोहराते हुये कहा कि देश का अन्नदाता ही राष्ट्र की रीढ़ है। हमारी सरकार किसानों की आर्थिक सशक्तता और समग्र उन्नति के लिये निरंतर प्रतिबद्ध है। कार्यक्रम के दौरान बांसवाड़ा से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा का भी उद्बोधन वर्चुअल रूप में प्रसारित किया गया। कार्यक्रम में लाभार्थी किसान उपस्थित रहें। सभी ने इस योजना के तहत समय पर मिलने वाली राशि को किसानों की वित्तीय स्थिरता में महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि योजना उनके लिए ना सिर्फ आर्थिक सहायता है, बल्कि खेती के प्रति उनका मनोबल भी बढ़ाती है। मौसमी अनिश्चितताओं और लागत वृद्धि के बीच यह रकम उन्हें बीज, खाद और सिंचाई जैसी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने में मदद करती है।

दिन के समय सुने मकान में चोरी करने वाला नाबालिग निरूद्ध

चोरी किया गया घरेलू सामान बरामद

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली,(निस) स्थानीय थाना पुलिस ने दिन के समय में एक सुने मकान में चोरी की वारदात को अन्जाम देने वाले विधि से संघर्षरत नाबालिग बालक को निरूद्ध किया है। एसएचओ राजेश शर्मा ने जानकारी देते हुये बताया कि इस सम्बंध में परिवादी ने दर्ज करवाया था कि विगत 20 जुलाई की शाम करीब 06 बजे ग्राम खेड़की बीरभान स्थित अपने मकान की देखभाल के लिये गया था। मकान के पीछे के दरवाजे का ताला टुटा हुआ था। जब घर का सामान चेक किया तो घरेलू सामान व कपड़े इधर उधर पड़े हुये थे एवं कमरे का सामान चेक किया तो उसमें रखे लोहे के बक्से में से सोने की दो लेडिज व दो पुरूष अंगुठी, दो चांदी की चैन, दो चांदी की पायजेब जोड़ी, चांदी के कड़े, चांदी के 07 सिक्के, घर में लगा पंखा, कूलर में लगी मोटर, पानी के नल व बिजली फिटिंग का सामान व लोहे की कॉलम की 150 रिंग आदि अज्ञात व्यक्ति द्वारा चोरी कर ली गई थी। इस सम्बंध में थाना पुलिस ने विषेष टीम का गठन करते हुये सीसीटीवी फुटेज की तकनीकी सहायता से वारदात को अन्जाम देने वाले विधि से संघर्षरत नाबालिग बालक को निरूद्ध करते हुये उक्त मकान से चोरी किया गया घरेलू सामान बरामद किया हैं। पुलिस प्रकरण में गहनता से अनुसंधान कर रही हैं।

राजस्थान पीड़ित प्रतिकर योजना के तहत 47.75 लाख की सहायता राशि स्वीकृत

जयपुर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की बैठक में 30 प्रकरणों का हुआ निस्तारण

जयपुर टाइम्स

जयपुर,(निस) राजस्थान पीड़ित प्रतिकर योजना के तहत जयपुर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा 47 लाख 75 हजार रुपये की प्रतिकर राशि स्वीकृत की गई। यह निर्णय प्राधिकरण की अध्यक्ष एवं जिला एवं सेशन न्यायाधीश अजीत कुमार हिंगर की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में लिया गया। बैठक में कुल 30 प्रार्थना पत्रों का निस्तारण करते हुए पीड़ितों को राहत देने हेतु यह राशि मंजूर की गई। बैठक में कुटुम्ब न्यायालय क्रम-2 की न्यायाधीश तस्मीन खान, विशिष्ट न्यायाधीश रूपचंद सुथार, सचिव पवन कुमार जीनवाल, अतिरिक्त जिला कलक्टर (तृतीय) कुंतल विश्नोई, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (एसआईयूसीएडब्ल्यू) बृजमोहन मीणा, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट सरिता यादव, बार एसोसिएशन अध्यक्ष संदीप लुहाड़िया तथा लोक अभियोजक सुरेश कुमार शर्मा सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे। इस योजना के तहत पीड़ितों को त्वरित न्याय और वित्तीय सहयोग देना का उद्देश्य है, ताकि वे मानसिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से पुनःस्थापित हो सकें। बैठक में पारदर्शी और न्यायसंगत प्रक्रिया अपनाते हुए पात्र प्रकरणों में प्रतिकर राशि स्वीकृत की गई।

नवीन आपराधिक कानूनों (विधियों) को लेकर एसपी ने ली अनुसंधान अधिकारियों की बैठक

विधियों के क्रियान्वयन के सम्बंध में विस्तार से दी जानकारी

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली, (निस) हाल ही में भारत सरकार द्वारा देष भर में लागू की गई भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की नवीन आपराधिक विधियों (कानूनों) व प्रावधानों को लेकर जिला पुलिस अधीक्षक देवेन्द्र कुमार बिश्नोई ने शनिवार को पुलिस अधीक्षक कार्यालय में कोटपूतली सीओ सर्किल के अनुसंधान अधिकारियों की बैठक ली। एसपी बिश्नोई ने सभी को नये कानूनों व उनके क्रियान्वयन के सम्बंध में आवष्यक जानकारी दी। साथ ही अनुसंधान अधिकारियों के प्रश्नों के जवाब देते हुये उन्हें कानूनों को लेकर विस्तार से समझाया। उन्होंने अनुसंधान में गुणवत्ता व तेजी लाने के निर्देष देते हुये विभिन्न मामलों की समीक्षा की। बैठक का आयोजन लम्बित प्रकरणों, समकालीन अपराध प्रवृत्तियों व नवीन आपराधिक गतिविधियों के क्रियान्वयन की प्रभावी समीक्षा को लेकर आयोजित की गई थी। एसपी बिश्नोई ने अनुसंधान की गुणवत्ता में सुधार, तकनीकी साधनों के उपयोग, सीसीटीवी विश्लेषण, साईबर साक्ष्य के समुचित संकलन व अभियुक्तों की शीघ्र गिरफ्तारी के सम्बंध में विषेष निर्देष दिये। एसपी ने कहा कि अपराधों की रोकथाम के लिये सिर्फ तत्काल कार्यवाही नहीं बल्कि मजबूत अनुसंधान व वैज्ञानिक साक्ष्य का संकलन जरूरी हैं। उन्होंने लम्बित मामलों की प्रगति पर नाराजगी व्यक्त करते हुये कहा कि अपराधियों को सजा दिलवाने के लिये जांच को समयबद्ध व सुसंगठित बनाना आवष्यक हैं। साथ ही सभी थानाध्यक्षों को निर्देषित किया कि वे गंभीर अपराधों में स्वयं निगरानी रखते हुये तकनीकी विषेषज्ञता का बेहतर उपयोग करें। एसपी ने अनुसंधान अधिकारियों से क्षेत्र में आपराधिक प्रकरणों की जानकारी लेते हुये प्रत्येक प्रकरण में निष्पक्ष, प्रमाणिक व संवेदनशील जांच का संदेश देते हुये कहा कि पुलिस की जनता में भरोसेमंद व सक्ष्क्त छवि बने इसके लिये पारदर्शिता, अनुशासन व संवेदनशीलता को अपनी कार्यशैली का हिस्सा बनायें। कानून व्यवस्था को प्रभावी बनाये रखने के लिये निरन्तर फिल्ड विजिट, रात्रि गश्त व सूचना संकलन की प्रक्रिया को मजबूत किया जायें।

प्रतिभा एवं भामाशाह सम्मान समारोह 16 अगस्त को

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली,(निस) यादव महासभा कोटपूतली कार्यकारणी की बैठक शनिवार को अध्यक्ष रामावतार यादव की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में प्रतिभा एवं भामाशाह सम्मान समारोह आगामी 16 अगस्त को श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर आयोजित किये जाने का निर्णय लिया गया। समारोह में माध्यमिक व उच्च माध्यमिक बोर्ड परीक्षा में 90 प्रतिषत व उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों, नीट व जेईई में चयनित अभ्यर्थी, 01 जुलाई 2024 के बाद केन्द्र व राज्य सेवा में चयनित अभ्यर्थी, 26 अगस्त 2024 के बाद छात्रावास के विकास में या गरीब, असहाय बालिकाओं की सहायतार्थ राषि देने वाले भामाषाह आदि का सम्मान किया जायेगा। इस दौरान जिलाध्यक्ष रामनिवास गिरदावर, पूर्व अध्यक्ष गिरधारी लाल गुरूजी, लालाराम यादव कोषाध्यक्ष, सुरेश चन्द यादव वार्डन, सरपंच प्रतिनिधि रघुवीर सिंह यादव, राजेन्द्र यादव ऑडिटर, जगदीश सरपंच, प्रकाश चन्द यादव, रामावतार यादव, अरविन्द यादव, विक्रम लीडर, सत्यवीर यादव, रामकरण यादव, रामसिंह यादव, बलबीर सिंह यादव, धोलाराम हवलदार, मोहन लाल, हरिराम यादव, अमरसिंह यादव समेत बड़ी संख्या में समाज के लोग मौजूद रहें।

एलआईसी जयपुर मंडलों की ओबीसी कल्याण संघ की आम सभा सम्पन्न, नई कार्यकारिणी गठित

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं) भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) के जयपुर प्रथम एवं द्वितीय मंडलों की अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) कल्याण संघ की द्विवार्षिक मंडल स्तरीय आम सभा का आयोजन सम्पन्न हुआ। इस महत्वपूर्ण आयोजन में दोनों मंडलों की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया तथा ओबीसी वर्ग से जुड़े मुद्दों पर व्यापक चर्चा की गई। सभा में वक्ताओं ने ओबीसी कर्मचारियों के हितों की सुरक्षा और उनके संवैधानिक अधिकारों के लिए और अधिक संगठित होकर कार्य करने का आह्वान किया। साथ ही सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि अखिल भारतीय अन्य पिछड़ा वर्ग कल्याण संघ का आगामी द्विवार्षिक अधिवेशन नवंबर माह में जयपुर में आयोजित किया जाएगा। जयपुर प्रथम मंडल की नई कार्यकारिणी में राधेश्याम जांगिड़ को संरक्षक, बी.एल. मंडीवाल को अध्यक्ष, गिरीश सोनी को उपाध्यक्ष, सुरेश कुमार दूत को सचिव, रामेश्वर लाल कुमावत को रेजिडेंट सचिव, पूनम यादव को सह सचिव तथा श्रवण सैनी को कोषाध्यक्ष नियुक्त किया गया। कार्यकारी सदस्य के रूप में राजेश कुमार, नीरज सैनी, पिंकू सोनी एवं राजेश बुडानिया को चुना गया। वहीं, जयपुर द्वितीय मंडल की कार्यकारिणी में शंभूलाल को अध्यक्ष और के.सी. सैनी को सचिव नियुक्त किया गया। आम सभा में जयपुर प्रथम और द्वितीय मंडलों की 30 से अधिक शाखाओं के लगभग 200 सदस्यों ने भाग लिया। इस दौरान क्षेत्रीय महासचिव देवनारायण गुर्जर, क्षेत्रीय कोषाध्यक्ष मथुरेस गुर्जर, क्षेत्रीय कार्यकारी अध्यक्ष राकेश यादव तथा अजमेर मंडल अध्यक्ष राजेंद्र बागवाल सहित कई वरिष्ठ पदाधिकारी भी उपस्थित रहे। सभा के अंत में सभी सदस्यों ने एकजुटता के साथ संगठन को मजबूत करने और आगामी अधिवेशन को सफल बनाने का संकल्प लिया।

शक्तियाँ एवं कार्य

अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों को संविधान या किसी अन्य कानून के तहत प्रदत्त संरक्षण उपायों के कार्यान्वयन का मूल्यांकन करने हेतु संबंधित सभी मामलों की जाँच एवं निगरानी करता है। सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में भाग लेता है तथा सलाह देता है और संघ एवं किसी भी राज्य के अंतर्गत उनके विकास की प्रगति का मूल्यांकन करता है। यह आयोग सुरक्षापायों के कार्यान्वयन पर अपनी वार्षिक रिपोर्ट राष्ट्रपति को प्रस्तुत करता है। इसके अलावा आयोग जब भी उचित समझे अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को प्रस्तुत कर सकता है। राष्ट्रपति द्वारा संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष यह रिपोर्ट प्रस्तुत की जाती है। इस तरह की कोई भी रिपोर्ट या उसका कोई हिस्सा, जो किसी भी राज्य सरकार से संबंधित हो, की एक प्रति राज्य सरकार को भेजी जाएगी। एनसीबीसी सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों के संरक्षण, कल्याण एवं विकास तथा उन्नति के संबंध में ऐसे अन्य कार्यों का भी निर्वहन करता है, जिन्हें संसद द्वारा बनाए गए कानून के प्रावधानों के अधीन राष्ट्रपति द्वारा विशेष रूप से उल्लिखित किया गया हो। किसी भी मामले पर सुनवाई के दौरान इसे दीवानी न्यायालय के समान शक्तियाँ प्राप्त होती हैं। एनसीबीसी के तहत ही ओबीसी वर्ग के कर्मचारियों के हितों की ऱक्षार्थ भारतीय जीवन बीमा निगम कर्मचारी अखिल भारतीय पिछड़ा वर्ग कर्मचारी कल्याण संघ का गठन किया गया है।

अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) एवं राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग (एनसीबीसी) क्या है

अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) भारतीय नागरिकों का एक वर्ग है, इस वर्ग में आने वाली जातियाँ सामाजिक और शिक्षा के रूप में पिछड़ी होती हैं. इस प्रकार की सामाजिक और शैक्षणिक रूप से समस्त पिछड़ी जातियों को सामुहिक रूप से भारत सरकार ने अन्य पिछड़ा वर्ग के रुप में वर्गीकृत किया है। राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग (एनसीबीसी) एक संस्था है जिसे भारतीय संविधान के 102वाँ संविधान संशोधन (2018) अधिनियम द्वारा संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया है। इसे सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों के बारे में शिकायतों तथा कल्याणकारी उपायों की जाँच करने का अधिकार प्राप्त है। इससे पहले एनसीबीसी सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के तहत एक सांविधिक निकाय था। वर्ष 2017 में 123वाँ संविधान संशोधन विधेयक संसद में प्रस्तुत किया गया ताकि पिछड़े वर्गों के हितों को अधिक प्रभावी ढंग से संरक्षित किया जा सके। अगस्त 2018 में इस विधेयक को राष्ट्रपति की सहमति मिली और एनसीबीसी को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया।

संवैधानिक प्रावधान

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 340 अन्य बातों के साथ-साथ "सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों" की पहचान करने, उनके पिछड़ेपन की स्थितियों को समझने और उनके सामने आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिये सिफारिशें करने की आवश्यकता से संबंधित है। 102वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा भारतीय संविधान में दो नए अनुच्छेदों 338 B और 342 को जोड़ा गया। यह संशोधन अनुच्छेद 366 में भी कुछ परिवर्तन करता है। अनुच्छेद 338 B सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों से संबंधित शिकायतों और कल्याणकारी उपायों की जाँच करने के लिये एनसीबीसी को अधिकार प्रदान करता है। अनुच्छेद 342 A राष्ट्रपति को विभिन्न राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों में सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े वर्गों को निर्दिष्ट करने का अधिकार प्रदान करता है। इन वर्गों को निर्दिष्ट करने के लिये वह संबंधित राज्य के राज्यपाल से परामर्श कर सकता है। हालाँकि यदि पिछड़े वर्गों की सूची में संशोधन किया जाना है तो इसके लिये संसद द्वारा अधिनियमित कानून की आवश्यकता होगी।

गोड्डा से दौराई तक नई साप्ताहिक ट्रेन सेवा की शुरुआत, अजमेर क्षेत्र को बड़ी सौगात

जयपुर टाइम्स

किशनगढ़/अजमेर(कासं) केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री और अजमेर सांसद भागीरथ चौधरी की अनुशंसा पर रेल मंत्रालय ने गोड्डा (झारखंड) से दौराई (अजमेर) तक एक नई साप्ताहिक एक्सप्रेस ट्रेन सेवा शुरू की है। इस सेवा का औपचारिक उद्घाटन 27 जुलाई को गोड्डा रेलवे स्टेशन से ट्रेन संख्या 19604 द्वारा किया गया, जो 33 घंटे 30 मिनट की यात्रा के बाद दौराई पहुंची। अजमेर से इसका नियमित संचालन 3 अगस्त से प्रारंभ होगा। यह नई ट्रेन सेवा झारखंड, बिहार, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा होते हुए राजस्थान के अजमेर संसदीय क्षेत्र में प्रवेश करती है और किशनगढ़, मदार, अजमेर एवं दौराई स्टेशनों पर ठहराव के साथ इस क्षेत्र के यात्रियों को सीधा लाभ पहुंचाएगी। भागीरथ चौधरी ने बताया कि यह ट्रेन क्षेत्रीय यात्रियों के लिए सुविधाजनक होगी और व्यापार, रोजगार, तीर्थयात्रा तथा पर्यटन को भी गति प्रदान करेगी। ट्रेन का नियमित संचालन 3 अगस्त से (दौराई से गोड्डा - ट्रेन संख्या 19603) हर रविवार और 5 अगस्त से (गोड्डा से दौराई - ट्रेन संख्या 19604) हर मंगलवार को होगा। यह ट्रेन 1666 किलोमीटर की दूरी तय करेगी और 35 से अधिक स्टेशनों पर रुकेगी। ट्रेन में 22 अत्याधुनिक एलएचबी कोच होंगे, जिनमें स्लीपर, थर्ड एसी, सेकंड एसी और जनरल कोच शामिल हैं। संचालन इलेक्ट्रिक लोकोमोटिव द्वारा किया जाएगा और रख-रखाव मदार यार्ड, अजमेर के जिम्मे रहेगा। केंद्रीय मंत्री चौधरी ने इस सुविधा के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव का आभार व्यक्त करते हुए इसे क्षेत्र के नागरिकों के लिए वर्षों पुरानी मांग की पूर्ति बताया।

प्रदेश में अब शनिवार और रविवार को भी हो सकेगी रजिस्ट्रियां, लोगों को मिली राहत

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। प्रदेश में अब छुट्टी के दिन शनिवार और रविवार को भी रजिस्ट्री का काम संपादित हो सकेगा इसके लिए अजमेर स्थित महान निरीक्षक पंजीयन एवं मुद्रांक विभाग की ओर से आदेश जारी कर दिया गया है आदेश के तहत प्रदेश में 58 डिप्टी पंजीयन दफ्तर कार्यालय रविवार और शनिवार को भी अग्रिम आदेश तक खुले रहेंगे इसके अलावा जयपुर स्थित 6 डिप्टी रजिस्ट्रार कार्यालय भी अग्रिम आदेश तक शनिवार और रविवार को भी खोले जाने के आदेश जारी हुए हैं शनिवार और रविवार को रजिस्ट्री संबंधी कामकाज होने के आदेश से प्रदेश के लोगों को काफी राहत मिलेगी क्योंकि इस आदेश से उन सरकारी कर्मचारियों को ज्यादा फायदा मिलेगा जो अपनी नौकरी की वजह से रजिस्ट्री संबंधी कामकाज के लिए परेशान होते रहते थे क्योंकि उनकी छुट्टी के दिन रजिस्ट्री संबंधी सरकारी दफ्तर भी छुट्टी की वजह से बंद रहते थे लेकिन अब नए आदेश से शनिवार और रविवार को भी छुट्टी के दिन रजिस्ट्री संबंधी कार्यालय खुलेंगे तो यह नया आदेश सरकारी कर्मचारियों के लिए काफी फायदेमंद साबित होगा इसके अलावा निजी कंपनियों में नौकरियां करने वाले लोगों को भी इस नए आदेश से काफी राहत मिलेगी

खाद्य मंत्री सुमित गोदारा ने की जनसुनवाई

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निसं.)। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री सुमित गोदारा ने शनिवार को सार्दुलगंज स्थित अपने आवास पर जनसुनवाई की। इस दौरान जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आए ग्रामीणों ने श्री गोदारा से मुलाकात की। लूणकरणसर क्षेत्र के नागरिकों ने विकास कार्यों की सतत सौगातें देने के लिए मंत्री श्री गोदारा का आभार जताया। मंत्री श्री गोदारा ने कहा कि लूणकरणसर क्षेत्र का विकास उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसमें किसी प्रकार की कमी नहीं आने दी जाएगी। गोदारा ने आमजन की समस्याओं के समाधान के लिए सम्बंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार द्वारा आमजन की समस्याओं के समाधान के लिए विभिन्न स्तरों पर जनसुनवाईयां की जा रही हैं। जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों को इसके लिए निर्देशित किया गया है। उन्होंने राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया और कहा कि प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक इसका लाभ पहुंचाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार अन्त्योदय को भावना के साथ काम कर रही है।

फुलेरा में चोरों का तांडव

मंदिर से चांदी के छत्र मुकुट त्रिशूल और दो मकानों से जेवरात समेत कीमती सामान ले उड़े बदमाश

जयपुर टाइम्स

फुलेरा(निसं.)। कस्बे में दो दिन में चोरी की यह पांचवीं वारदात है जिससे आमजन के मन में भय और प्रशासन के प्रति गहरी नाराजगी देखने को मिल रही है बीती रात मायला बाजार और न्यू कॉलोनी क्षेत्र में चोरों ने पहले एक मंदिर को निशाना बनाया फिर दो मकानों में सेंध लगाकर नकदी जेवरात व अन्य घरेलू सामान पार कर दिया सुबह चोरी की जानकारी मिलते ही क्षेत्रवासियों में हड़कंप मच गया और बड़ी संख्या में लोग घटनास्थल पर एकत्र हो गए ग्रामीणों ने पुलिस गश्त की पोल खोलते हुए आक्रोश जताया और लगातार हो रही वारदातों को लेकर असुरक्षा का माहौल बताया व्यापार महासंघ अध्यक्ष आहूजा ने भी पुलिस की कार्यशैली पर सवाल उठाते हुए तीखी प्रतिक्रिया दी और आरोप लगाया कि पुलिस केवल खानापूर्ति कर रही है जबकि अपराधियों के हौसले बुलंद हैं पुलिस मौके पर पहुंची और मंदिर सहित दोनों मकानों का मौका मुआयना किया तथा आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालना शुरू कर दिया है लेकिन सवाल यह है कि जब पिछले चौबीस घंटों में पहले भी चोरी की चार वारदातें हो चुकी थीं तो पुलिस ने अतिरिक्त सतर्कता क्यों नहीं बरती मंदिर जैसे सार्वजनिक धार्मिक स्थल भी अगर सुरक्षित नहीं हैं तो आम आदमी के घरों की सुरक्षा की कल्पना करना मुश्किल है कस्बेवासियों का कहना है कि पुलिस की निष्क्रियता और ढीली गश्त ने चोरों को खुलेआम वारदातें करने का अवसर दे दिया है वहीं स्थानीय जनप्रतिनिधियों की चुप्पी भी लोगों को खटक रही है क्योंकि जनभावनाओं को न तो कोई सुन रहा है और न ही गंभीरता से ले रहा है जिससे लोगों में कानून व्यवस्था को लेकर भरोसा डगमगाने लगा है अब देखना यह होगा कि पुलिस इन वारदातों का खुलासा कर पाती है या आने वाले दिनों में फुलेरा चोरी की घटनाओं से और अधिक दहशत में डूब जाएगा

राजस्थान विश्वविद्यालय में रैंगिंग से छात्रों में आक्रोश, बंद कमरे में जूनियर छात्रों को नचाया

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। राजस्थान विश्वविद्यालय में सीनियर छात्रों की ओर से जूनियर छात्रों को बंद कमरे में कई देर तक नृत्य करवाने और उनसे अभद्र व्यवहार करने की घटना से छात्र और छात्राओं में जोरदार आक्रोश छा गया घटना के विरोध में और आरोपी छात्रों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग को लेकर पीड़ित छात्रों ने विभागीय अध्यक्ष के दफ्तर के सामने प्रदर्शन किया और नारेबाजी की इस घटना को लेकर राजस्थान विश्वविद्यालय में पढ़ रहे अन्य छात्र-छात्राओं में भी काफी नाराजगी देखने को मिली है और कई छात्र नेता पीड़ित छात्रों के समर्थन में यूनिवर्सिटी कैंपस में उतर भी गए और यूनिवर्सिटी प्रशासन से जुड़े अधिकारियों से इस पूरे मामले में दोषी छात्रों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की मांग भी की गई है

जानकारी के अनुसार केमिस्ट्री थर्ड सेमेस्टर के छात्रों की ओर से केमिस्ट्री फर्स्ट सेमेस्टर छात्रों को एक कमरे में बंद किया गया और फिर उनसे सामूहिक डांस करवाया गया और उनके साथ कई तरह की गलत हरकतें भी की गई इसकी वजह से छात्रों में घबराहट छा गई, सीनियर छात्रों की दादागिरी और उनके प्रभाव को देखकर छात्रों ने जैसा उन्होंने कहा वैसा ही किया लेकिन बाद में पीढ़ी छात्रों ने एकजुट होकर डिपार्टमेंट हेड के दफ्तर का घेराव किया और दोषी छात्रों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने की मांग की उल्लेखनीय है कि राजस्थान विश्वविद्यालय ही नहीं बल्कि देश के अन्य सभी विश्वविद्यालय और कॉलेज में रिंगिंग की घटनाएं पूरी तरह से निषेध है कानून भी इस तरह की घटनाएं पूरी तरह से निषेध है लेकिन इसके बावजूद भी देश में कई जगहों पर शिक्षण संस्थानों में सीनियर देश में कई जगहों पर कॉलेज और विश्वविद्यालय में सीनियर छात्रों की ओर से जूनियर छात्रों को एडमिशन के दौरान या फिर एडमिशन के बाद प्रताड़ित और परेशान किया जाता है, इस तरह की घटनाओं को रोकने को लेकर राजस्थान विश्वविद्यालय प्रशासन की ओर से अपने स्तर पर भी प्रबंध जरूर किए गए हैं लेकिन इसके बावजूद भी जिस तरह से केमिस्ट्री सेमेस्टर थर्ड के छात्रों ने जो हरकत की है वह राजस्थान विश्वविद्यालय कैंपस में चर्चा का विषय बनी हुई है, हालांकि दो बड़े छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद और एनएसयूआई के बड़े पदाधिकारी इस तरह की घटनाओं को ठीक नहीं मानते लेकिन फिर भी समय-समय पर इस तरह की घटनाएं उजागर हो रही है जो नए छात्रों के लिए ठीक नहीं है इस तरह की घटनाओं से नए छात्रों का शारीरिक और मानसिक शोषण होना उनके स्वास्थ्य के लिए और उनकी पढ़ाई के लिए ठीक नहीं है इसलिए इस विषय को यूनिवर्सिटी प्रशासन को काफी गंभीरता से लेना ही होगा द्य

ई-रिक्षा को पिकअप ने टक्कर मारी, गंभीरावस्था में दो जने जयपुर रैफर

जयपुर टाइम्स

***कोटपूतली** (निसं)कस्बे के डाबला रोड़ पर ग्राम सरूण्ड के पास एक ई-रिक्षा को पिकअप चालक ने लापरवाहीपूर्वक टक्कर मार दी। राजकीय बीडीएम जिला अस्पताल ट्रौमा सैंटर के नर्सिंग अधिकारी श्रीराम सराधना ने बताया कि ई-रिक्षा में सवार फतेहपुरा कलां निवासी मनोज (40) पुत्र सुन्दर लाल व नांगल चौधरी निवासी मातादीन सिंह (30) पुत्र शेरसिंह को गंभीरावस्था में घायल होने पर राजकीय अस्पताल से प्राथमिक उपचार देकर जयपुर रैफर किया गया।*

गौ माता को राष्ट्रीय माता का दर्जा दिलवाने के लिये पैदल निकले गौ भगत इंद्राज गुर्जर

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं) गौ माता को राष्ट्रीय माता का दर्जा दिलवाने के लिये हरिद्वार से पैदल मधुपुरी जयपुर गौ शाला के लिये निकले गौ भगत इंद्राज गुर्जर का गौ रक्षक दल कोटपूतली द्वारा पूतली कट पर माला एवं साफा पहनाकर स्वागत अभिनंदन किया गया। इस मौके पर राष्ट्रीय गौ रक्षक संघ जिला अध्यक्ष धर्मवीर पहलवान, बजरंग दल अध्यक्ष राहुल पटेल, गौ सेवक संतु सुंदरपुरा, गौ सेवक मोहित सैनी, गौ भगत शंकर बालाश, लाला मीणा, लीलू टापरी, जेबी, मोनू बालाश, कमल गुर्जर, अभिषेक गुर्जर, छोटू पहलवान, प्रवीण पहलवान, सचिन गुर्जर, उदयसिंह, प्रवीण, डॉ. मुंशी, गौ सेवक राजू, राजेश टापरी, राकेश जाट समेत अन्य मौजूद रहें।

अपराध पर नकेल कसने को भाबरू थाना पुलिस का एक्शन मोड

एसपी देवेंद्र विश्नोई के सख्त निर्देश के बाद थानाधिकारी अंकित सांमरिया के नेतृत्व में निकाला गया फ्लैग मार्च

कस्बे और आसपास के गांवों में पुलिस की पैदल गश्त, आमजन में बढ़ा विश्वास, बदमाशों में खौफ

जयपुर टाइम्स

विराटनगर(निसं.)। जिला पुलिस अधीक्षक देवेंद्र कुमार विश्नोई के निर्देशों की पालना में शनिवार को भाबरू थाना पुलिस पूरी तरह एक्शन मोड में नजर आई। थानाधिकारी अंकित सांमरिया के नेतृत्व में कस्बा भाबरू सहित आंतेला, जवानपुरा, जयसिंहपुरा, किशनपुरा और खतौलाई जैसे संवेदनशील गांवों में पैदल फ्लैग मार्च निकाला गया।इस फ्लैग मार्च का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र में अपराधों पर अंकुश लगाना, असामाजिक तत्वों पर निगरानी रखना और आमजन में पुलिस के प्रति विश्वास कायम करना रहा। पैदल गश्त के दौरान पुलिस जवान पूरी मुस्तैदी से इलाके में भ्रमण करते नजर आए। हर गली, हर नुक्कड़ पर पुलिस की उपस्थिति ने न सिर्फ अपराधियों के हौसले पस्त किए, बल्कि आम जनता को भी सुरक्षा का एहसास कराया।थानाधिकारी अंकित सांमरिया ने बताया कि यह अभियान एसपी विश्नोई के निर्देशानुसार चलाया गया, जिसके तहत पूरे क्षेत्र में सक्रिय निगरानी रखी गई। उन्होंने कहा कि पुलिस जनता के सहयोग से ही कानून व्यवस्था को मजबूत बना सकती है। इसलिए लोगों से अपील की गई कि वे किसी भी संदिग्ध गतिविधि की तुरंत सूचना पुलिस को दें।

फ्लैग मार्च के दौरान स्थानीय निवासियों से संवाद भी स्थापित किया गया। लोगों ने थाना पुलिस की सक्रियता की सराहना की और सहयोग का भरोसा दिलाया।यह फ्लैग मार्च न केवल अपराधियों के लिए चेतावनी साबित हुआ, बल्कि यह क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और विश्वास का प्रतीक भी बनकर उभरा।

श्री बालाजी महाराज के वार्षिक भण्डारे का आयोजन

जयपुर टाइम्स

कोटपूतली(निसं) निकटवर्ती ग्राम रघुनाथपुरा में शनिवार को श्री बालाजी महाराज के वार्षिक भण्डारे का आयोजन किया गया। इस मौके पर भजन गायक रतन फौजी ने बालाजी महाराज के एक से बढ़कर एक भजनों की प्रस्तुती देकर श्रोताओं का मन मोह लिया। उन्होंने भजनों के माध्यम से बताया कि इस कलयुग में हरि कीर्तन के सहारे से ही इंसान अपने जीवन को सफल बना सकता है। मंच संचालन एड. दिनेश कुमार अग्रवाल ने किया। इस दौरान एड. प्रेमप्रकाश शर्मा, हरिसिंह यादव, एड. राजेश यादव, एड. रामनिवास यादव, एड. महेश यादव, संदीप सनवाल, दयाराम यादव, रोहिताश यादव, भूपेन्द्र यादव, मुकेश यादव, शिम्भूदयाल मीणा, राकेष खोला, एड. विकास अग्रवाल, धर्मपाल यादव, विकास सनवाल, शीशराम यादव, राकेश शर्मा, भूपसिंह यादव समेत बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहें।

नाम परिवर्तन

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा पुत्र अभिजीत चौधरी कक्षा 6वी में अध्ययनरत है। मेरे पुत्र के विद्यालय में प्रवेश के समय भूल से उसका नाम अभिजीत खीचड़ पुत्र राजेंद्र प्रसाद अंकित करवा दिया था, जो गलत है।
मै मेरे पुत्र के विद्यालय रिकॉर्ड में सही नाम अभिजीत चौधरी पुत्र राजेंद्र प्रसाद (ABHIJEET CHOUDHARY S/O RAJENDAR PRASAD)अंकित करवाना चाहता हूं, जिसके नाम के परिवर्तन की भविष्य में सम्पूर्ण जिम्मेदारी मेरी होगी।

पता- राजेंद्र प्रसाद पुत्र राम नारायण जाट निवासी लुहार तहसील बीदासर जिला चुरू राजस्थान

सार्वजनिक सूचना पत्र

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि हमारी पुत्री जमना कुमारी प्रजापत पुत्री केशाराम प्रजापत, निवासी ग्राम गुडावड़ी, तहसील सुजानगढ़, जिला चूरू, जो कि काफी समय से हमारे एवं परिवार के कहने सुनने में नहीं है। जिसका आचरण हमारे परिवार के लिए अत्यंत ही अपमानजनक, अनुशासनहीन, अशोभनीय, निंदनीय रहा है एवं सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ परिवार के वातावरण को दूषित करने एवं कलंकित करने वाला रहा है। जिसके व्यवहार से परिवार समाज में तनाव एवं मानसिक कष्ट उत्पन्न हुआ है। जो कि हमारी हर प्रकार की आज्ञा का उल्लंघन कर रही है एवं परिवार की खिलाफत कर रही है। जमना अपनी मर्जी से शैलेन्द्र कुमार पुत्र हरी मोहन ब्राह्मण बस्ती नयागांव माफी भरतपुर के साथ अपनी मर्जी से एवं हमारी इच्छा के विरूद्ध रह रही है। इसलिए हम अपनी पुत्री जमना कुमारी के साथ हर प्रकार के रिश्ते नाते, सम्बंध, उत्तराधिकारी, उत्तरदायित्व एवं पारिवारिक सम्बंधों का पूर्व रूप से समाप्त करते हैं। भविष्य में जमना देवी के साथ हमारा किसी प्रकार का कोई रिश्ता नहीं रहेगा। हम अपनी पुत्री जमना कुमारी के साथ समस्त प्रकार के सम्बंध समाप्त करते हैं। जमना देवी का हमारी एवं हमारे परिवार की किसी भी प्रकार की चल / अचल सम्पति, नाम, पहचान या परिवार का कोई लेना देना नहीं है। उसको हमारी हर प्रकार की चल एवं अचल सम्पति से बेदखल किया जाता है। जिसका हमारे जीवनकाल में एवं हमारे देहावसान के बाद किसी प्रकार से विरासत में कोई हक हिस्सा नहीं होगा। यदि कोई व्यक्ति जमना देवी के साथ हमारे नाम का उपयोग करके किसी प्रकार से कोई लेना देना या संव्यवहार करता है या कोई अन्य कार्य करता है, तो उसके लिए हम किसी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। यह सूचना सार्वजनिक रूप से दी जा रही है, ताकि सम्बंधित व्यक्ति या सर्वसाधारण को सूचित रहे ।
दिनांक 02 अगस्त 2025

भवदीय
केशाराम पुत्र पूराराम प्रजापत एवं
परमेश्वरी देवी पत्नी केशाराम प्रजापत,
निवासीगण ग्राम गुडावड़ी,
तहसील सुजानगढ़, जिला चूरू (राज.)

कार्यालय नगर पालिका मण्डल सांभर लेक (जयपुर)

क्रमांक/ न.पा.सा./2025-26 /1076 दिनांक 01.08.2025

आपत्ति सूचना

एतद् द्वारा हितबद्ध, व्यक्ति विशेष, आम खास को सूचित किया जाता हैं कि राजस्व ग्राम सिवानिया के खसरा नंबर 105, 107,108, 110 कुल किता 04 रकबा 2.1750 हैक्टेयर भूमि का आवासीय योजना "श्री श्याम सरोवर" का ले-आउट प्लान स्थानीय स्तर से दिनांक 09.10.2024 स्वीकृत किया गया था । वर्तमान में योजना में जारी पट्टाधारकों द्वारा पूर्व में जारी पट्टों को समर्पित कर संशोधित ले-आउट प्लान अनुमोदन हेतु प्रस्तुत किया गया हैं। भूखण्ड संख्या 03,12,17,19,10,13,16,11,14,15, ओर 18 कुल 11 पट्टों को समर्पण करने उपरान्त ले-आउट प्लान संशोधित किया जाना हैं।

अतः उक्त संशोधित ले-आउट प्लान में किसी भी हितधारक व्यक्ति को कोई एतराज हो तो नगर पालिका के कार्य दिवसों में अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष अन्दर मियाद 07 दिवस में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद गुजरने मियाद कोई उज्र मान्य नही होगा। सूचित रहें ।

प्राधिकृत अधिकारी
अधिशाषी अधिकारी
नगर पालिका सांभर लेक

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, रविवार
3 अगस्त, 2025

अब नहीं मिलेगी स्कूटी, घटाई गई पुरस्कार राशि: पद्माक्षी योजना में सरकार ने किए बड़े बदलाव

टॉपर छात्राओं को 25 हजार तक कम मिलेगा इनाम, इंदिरा प्रियदर्शिनी की जगह फिर बना पद्माक्षी योजना

जयपुर टाइम्स

बीकानेर(निसं.) राजस्थान सरकार ने राज्य के सरकारी और निजी स्कूलों में कक्षा 8वीं, 10वीं और 12वीं की टॉपर छात्राओं को मिलने वाले पुरस्कार में कटौती कर दी है। अब तक मिलने वाली स्कूटी भी योजना से हटा दी गई है। इसके साथ ही योजना का नाम बदलकर एक बार फिर पद्माक्षी पुरस्कार कर दिया गया है। शनिवार को माध्यमिक एवं प्रारंभिक शिक्षा विभाग की ओर से आदेश जारी किए गए, जिसके अनुसार अब छात्राओं को 8वीं में 40,000 की बजाय 25,000, 10वीं में 75,000 की जगह 50,000 और 12वीं में 1 लाख की बजाय 75,000 की राशि ही दी जाएगी। वहीं 12वीं की छात्राओं को पहले दी जाने वाली स्कूटी भी अब योजना में शामिल नहीं है। पुरस्कार अब हर साल बसंत पंचमी पर जिला स्तर पर वितरित किया जाएगा। योजना के तहत संस्कृत शिक्षा विभाग और विवेकानंद स्कूलों की छात्राओं को भी अलग से सम्मानित किया जाएगा। व्यवसायिक शिक्षा में टॉप करने वाली छात्राओं को भी इस योजना में शामिल किया गया है। टॉपर होने के साथ-साथ छात्राओं को न्यूनतम 60% अंक लाना अनिवार्य होगा। 12वीं विज्ञान वर्ग की छात्राओं को 9 CGPA से अधिक अंक लाना आवश्यक होगा। यह योजना 2008 में कांग्रेस सरकार द्वारा शुरू की गई थी और 2019 में इसका नाम बदलकर इंदिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार कर दिया गया था। अब भाजपा सरकार ने इसका नाम फिर बदलकर पद्माक्षी पुरस्कार कर दिया है। आयोजन तिथि भी 19 नवंबर (इंदिरा गांधी जयंती) से हटाकर बसंत पंचमी कर दी गई है। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय की उप निदेशक सुनीता चावला ने कहा कि पद्माक्षी योजना की राशि में इस बार परिवर्तन किया गया है और यह निर्णय आगामी शैक्षणिक सत्र से प्रभावी होगा।

मुख्य न्यायाधिपति कल्पथी राजेंद्रन श्रीराम ने किए बाबा श्याम के दर्शन

जयपुर टाइम्स

खाटूश्यामजी(निस)। सीकर जिले के प्रसिद्ध बाबा श्याम की नगरी खाटूश्यामजी में शनिवार को उच्च न्यायालय राजस्थान के मुख्य न्यायाधिपति कल्पथी राजेंद्रन श्रीराम ने बाबा श्याम के दर्शन करने खाटूश्यामजी पहुँचे जहा पर श्री श्याम मंदिर कमेटी के मंत्री मानवेंद्र सिंह चौहान व पूर्व अध्यक्ष प्रताप सिंह चौहान ने न्यायाधिपति को श्याम नाम का दुपट्टा ओढ़ाकर और प्रतीक चिह्न भेट किया। इस दौरान हाईकोर्ट के न्यायाधीश उमाशंकर व्यास, सीकर सेशन जज राजेंद्र टुटेजा, जिला कलेक्टर मुकुल शर्मा, पुलिस अधीक्षक, तहसीलदार दातारामगढ़ मौजूद रहे।

डाबर का बालाजी रास्ता बना दरिया, आवागमन बाधित हुआ तो ग्रामीणों का फूटा गुस्सा

जयपुर टाइम्स

श्रीमाधोपुर(निस)। इलाके के गांव मूंडरू के सरकारी अस्पताल से डाबर के बालाजी मंदिर तक जाने वाले रास्ते में जलभराव के चलते लोगों का आवागमन बाधित हो गया है। रास्ता दुरुस्तीकरण को लेकर ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन किया। सरकारी अस्पताल से आगे करीब एक किलोमीटर की लंबाई में बनी सड़क टूट कर गहरे गड्ढों में तब्दील हो गई। जिसके चलते रास्ते में जगह-जगह जलभराव के चलते विद्यार्थियों को सबसे ज्यादा परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। डाबर की बालाजी मंदिर में रोजाना सैकड़ो की संख्या में आने वाले भक्तगणों व डाबर के बालाजी परिक्षेत्र के हजारों की संख्या में निवास कर रहे लोग भी आहत है। ग्रामीणों ने बताया कि किसान बाजार में अपना कृषि उत्पाद भी नहीं ले जा पा रहे। बीमार व्यक्ति अस्पताल जाने में भी कीचड़ से होकर गुजर रहा है। रामेश्वर लाल सैनी सहित ग्रामीणों ने बताया कि स्थानीय प्रशासन से अनेक बार मूंडरू से मऊ रोड वाया डाबर के बालाजी 5 किलोमीटर सड़क निर्माण करवाने के लिए बताया चुका है, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। जगदीश प्रसाद यादव, सुरेश कुमार सैनी, लूणाराम कुमावत, महेश सैनी, शंकर लाल, सोहनलाल, राजू गिरधारी, निर्मल, बंटी, आशीष, दीपक, सुभाष, सोहन यादव सहित ग्रामीणों व स्कूली छात्रों ने विरोध प्रदर्शन किया।

विधायक हाकम खान ने किया पोस्टर का विमोचन, प्रदर्शन 5 को

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। जिले में फतेहपुर के एनएसयूआई छात्र संघ ने प्रदर्शन को लेकर शनिवार को स्थानीय विधायक हाकम अली खान को निमंत्रण के साथ पोस्टर का भी विमोचन किया। युवा नेता और एनएसयूआई के प्रदेश सचिव आकाश झाझडा के नेतृत्व में शनिवार को एनएसयूआई कार्यकर्ताओं का एक प्रतिनिधिमंडल फतेहपुर विधायक हाकम अली खान से मिला। नये सत्र में प्रदेश में बंद छात्रसंघ चुनाव को दोबारा बहाल करने की सरगर्मी अब धीरे-धीरे तेज होने लगी है। आकाश झाझडा ने जानकारी देते हुए बताया कि छात्र संघ चुनाव की बहाली की मांग सिर्फ मांग नहीं बल्कि यह लोकतंत्र की मजबूती का सवाल है आने वाले 5 अगस्त को जयपुर में छात्र संघ चुनाव की बहाली को लेकर एक बड़ा और निर्णायक विरोध प्रदर्शन एनएसयूआई की ओर से किया जा रहा है जिसमें पूरे प्रदेश के कांग्रेस और एनएसयूआई के कार्यकता लाखों के तादाद में शामिल होंगे। इस दौरान एनएसयूआई के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

जयपुर में अखबार कि प्रति प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें

मो. 84323 35638, 70142 17770

पाली में महिला स्टेनोग्राफर का सुसाइडः कॉन्स्टेबल पति सब्जी लेने गया था, लौटकर देखा तो फंदे से लटकी मिली पत्नी

लव मैरिज को एक साल भी नहीं हुआ, पुलिस ने कमरे को सील किया, पीहर पक्ष की मौजूदगी का इंतजार

जयपुर टाइम्स

पाली(निसं.) पाली जिले के औद्योगिक नगर थाना क्षेत्र में एक महिला स्टेनोग्राफर ने फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतका की पहचान 27 वर्षीय पूजा के रूप में हुई है, जो चित्तौड़गढ़ के एक सरकारी विभाग में स्टेनो के पद पर कार्यरत थी। पूजा की शादी पिछले साल दिसंबर 2024 में पाली पुलिस लाइन में कार्यरत कॉन्स्टेबल हरीश से हुई थी। दोनों की लव मैरिज थी। शनिवार सुबह हरीश सब्जी लेने गया था। करीब 9 बजे जब वह घर लौटा, तो पूजा फंदे से लटकी मिली। उसने तुरंत पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंचे एएसपी विपिन कुमार, सीओ सिटी उषा यादव, एसएचओ जसवंत सिंह और एएसआई संपत राज ने घटनास्थल का मुआयना किया और पीहर पक्ष को सूचना दी। पुलिस ने बताया कि पूजा हाल ही में पाली शिफ्ट हुई थी और कुछ ही दिन पहले अपने पति के साथ रहने आई थी। प्रारंभिक जांच में कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है और न ही कोई घरेलू कलह के संकेत मिले हैं। पीहर पक्ष (श्रीकरणपुर, श्रीगंगानगर) के आग्रह पर पुलिस ने शव को स्थानांतरित नहीं किया है और कमरे को सील कर दिया गया है। पोस्टमॉर्टम व अन्य कार्रवाई पीहर पक्ष की उपस्थिति में की जाएगी। फिलहाल पुलिस आत्महत्या के कारणों की जांच में जुटी है।

दीया कुमारी का साफ संदेशः गुणवत्ता से नहीं होगा समझौता, ठेकेदारों की हड़ताल पर सरकार सख्त

डीएलपी घटाने की मांग पर अड़े ठेकेदार, लेकिन सरकार 5 साल की गारंटी पर अडिग

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.) राजस्थान में पीडब्ल्यूडी (सार्वजनिक निर्माण विभाग) के ठेकेदारों द्वारा **डीएलपी** (डिफेक्ट लायबिलिटी पीरियड) को 5 साल से घटाकर 3 साल करने की मांग पर राज्यभर में हड़ताल जारी है। इसके चलते सड़क, पुल, ड्रेनेज जैसी हजारों परियोजनाएं ठप हो गई हैं। लेकिन सरकार इस मांग को लेकर नरम नहीं पड़ रही है। पीडब्लूडी मंत्री दीया कुमारी ने स्पष्ट किया है कि गुणवत्ता के साथ कोई समझौता नहीं होगा। उन्होंने कहा, "अगर डीएलपी घटाकर 3 साल किया गया तो ठेकेदारों की जिम्मेदारी कम हो जाएगी और निर्माण की गुणवत्ता भी प्रभावित होगी। सरकार ठेकेदारों की जायज मांगें मानने को तैयार है, लेकिन गुणवत्ता में छूट नहीं दी जाएगी।" मार्च में चलाए गए 'सगुनि' अभियान के दौरान 11202 किमी लंबाई वाली 2224 सड़कों की जांच की गई, जिनमें से कई निर्धारित मानकों पर खरी नहीं उतरीं। इसके बाद विभाग ने खराब निर्माण के लिए ठेकेदारों को जिम्मेदार ठहराते हुए डीएलपी के तहत रिपेयरिंग का जिम्मा उन्हें सौंपा। ठेकेदारों का तर्क है कि उन्हें बेहद कम दरों पर टेंडर दिए जाते हैं, जिससे निर्माण की गुणवत्ता प्रभावित होती है। ऐसे में बार-बार की मरम्मत और विभागीय कार्रवाई अनुचित है। फिलहाल, राज्य सरकार डीएलपी में कोई कटौती करने के मूड में नहीं है, और निर्माण कार्यों की गुणवत्ता को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की रणनीति पर कायम है।

नशा मुक्ति संकल्प हेतु ई-शपथ दिलवाई

कोटपूतली यहां के राजकीय एलबीएस पी.जी. महाविद्यालय में नई किरण नशा मुक्ति प्रकोष्ठ एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्वाधान में भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा चलाये जा रहे नशा मुक्त भारत अभियान के तहत महाविद्यालय के शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों, राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों, रोवर-रेंजर्स, एनसीसी कैडेट्स एवं नियमित विद्यार्थियों द्वारा नशा मुक्ति संकल्प हेतु ई-शपथ दिलवाई गई। इस अवसर पर महाविद्यालय के संरक्षक एवं प्राचार्य डॉ. आर. के. सिंह ने विद्यार्थियों को देश को नशा मुक्त करने के लिये मादक पदार्थों के सेवन से दूर रहने एवं समाज के लोगों को नशे के दुष्प्रभावों से जागरूक करने का संदेश दिया। राष्ट्रीय सेवा योजना के संयोजक प्रो. सज्जन सिंह यादव ने युवाओं पर नशे के प्रभाव विषय पर विचार प्रकट किये। महाविद्यालय के नई किरण नशा मुक्ति प्रकोष्ठ के संयोजक प्रो. हरिराम धनेटिया ने नशे के मनोवैज्ञानिक प्रभाव पर विस्तार से प्रकाश डाला एवं सभी से आग्रह किया कि नशा मुक्ति शपथ के लिंक को अन्य नागरिकों के साथ भी शेयर किया जायें और उन्हें ई-शपथ दिलवाई जायें।

विष्व स्तनपान सप्ताह का आयोजन जारी

कोटपूतली यहां के राजकीय बीडीएम जिला चिकित्सालय में विष्व स्तनपान सप्ताह 01 से 07 अगस्त तक मनाया जा रहा हैं। स्तनपान के महत्व को उजागर करने व देश भर में शिशूओं के स्वास्थ्य में सुधार लाने के उद्देश्य से स्तनपान के संरक्षण, प्रचार एवं समर्थन हेतु प्रत्येक वर्ष अगस्त माह के प्रथम सप्ताह (01 से 07 अगस्त) को विष्व स्तनपान सप्ताह के रूप में विष्व में मनाया जाता है। विष्व स्तनपान सप्ताह इस वर्ष की थीम इन्वेस्ट इन ब्रेस्टफीडिंग, इन्वेस्ट इन द फ्यूचर अर्थात प्रत्येक मॉं को स्तनपान हेतु आवश्यक समर्थन और जानकारी प्रदान करना व मॉं को इच्छानुसार स्तनपान जारी रखने हेतु सहयोग प्रदान कराना है।

रास्ता रोकने के आरोपियों को कोर्ट ने किया दोषमुक्त

जयपुर टाइम्स

सीकर(निस)। गर्ल्स कॉलेज 2019 में चुनावों में कॉलेज प्रशासन की ओर से की गई धाधली के खिलाफ और छात्राओं पर पुलिस की ओर से बर्बरतापूर्वक लाठी चार्ज के खिलाफ जिला कलेक्टर के सामने रास्ता रोकने पर जिला प्रशासन की ओर से 18 लोगो के खिलाफ रास्ता रोकने का मुकदमा दर्ज हुआ था। मुकदमे में का.सांसद अमराराम, माकपा के जिला सचिव पेमाराम, भादरा पूर्व विधायक बलवान पुनिया, राज्य सचिव किशन पारीक, हरफूल सिंह बाजिया, अब्दुल कयूम कुरैशी, सुभाष नेहरा, महावीर सिंह मुड़वारा, सत्यजीत भींचर, आबिद अली गारिंडा, उस्मान खा, सागर खाचरिया, रूड सिंह मेहला, जयप्रकाश पुनिया, सुरेश बगड़िया, सुभाष जाखड़, विजेंदर ढाका, रामप्रसाद जांगिड थे, जिसका फैसला शनिवार को एसीजेएम ने सुनाते हुए सब मुलजिमानो को दोषमुक्त कर दिया। फैसले से विद्यार्थी हितों की जीत हुई है मुकदमे की पैरवी मुलजिमानो की तरफ से एडवोकेट झाबर सिंह रॉयल, एडवोकेट रुखसार बानो, एडवोकेट सुरेंद्र फुलवारीया, एडवोकेट सत्यजीत भींचर ने की।

वार्ड 72 में भव्य पंचम कांवड़ व कलश यात्रा सम्पन्न, 3100 महिलाएं और 1100 कांवड़िये हुए शामिल

जयपुर टाइम्स

जयपुर(कासं.)। ललिता संजय जयसवाल, पार्षद वार्ड 72 नगर निगम हेरिटेज, द्वारा श्री शिव शंकर सेवा संस्थान के तत्वावधान में पंचम विशाल कांवड़ व कलश यात्रा का आयोजन भव्यता से सम्पन्न हुआ। इस धार्मिक आयोजन में 3100 महिलाओं और 1100 कांवड़ियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यात्रा का विधिवत शुभारंभ भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने किया। इस अवसर पर जयपुर शहर सांसद मंजू शर्मा, किशनपोल विधानसभा से भाजपा विधायक प्रत्याशी चंद्र मनोहर बटवारा, आदर्श नगर विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी रवि नैयर, जयपुर नगर निगम ग्रेटर महापौर सौम्या गुर्जर सहित अन्य गणमान्य भाजपा पदाधिकारीगण मौजूद रहे। यात्रा मार्ग में श्रद्धालुओं के स्वागत के लिए जगह-जगह भव्य तोरण द्वार लगाए गए थे और 10 से अधिक स्थानों पर पुष्पवर्षा, जल सेवा एवं फलाहार आदि के माध्यम से यात्रियों का आत्मीय स्वागत किया गया। धार्मिक गीतों और भजनों की ध्वनि के बीच निकली इस यात्रा ने क्षेत्र में आस्था और उत्साह का अद्भुत संचार किया। इस आयोजन को सफल बनाने में श्री शिव शंकर सेवा संस्थान एवं पार्षद ललिता जयसवाल के साथ क्षेत्रीय नागरिकों की भागीदारी भी उल्लेखनीय रही।

न्यूरोसर्जरी और इंटरनेशनल रेडियोलॉजी में नई तकनीकों की दी जानकारी

नवीनतम तकनीकों से इलाज अब आसान

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। होटल शक्ति पैलेस में द इटर्नल हॉस्पिटल जयपुर के विषेषज्ञ डॉक्टस ने चिकित्सा विज्ञान के दो अत्यंत महत्वपूर्ण क्षेत्रों न्यूरोसर्जरी और इंटरनेशनल रेडियोलॉजी में आई नवीनतम तकनीकों की जानकारी देने के लिए प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। प्रेस वार्ता में जानकारी देते हुए सीनियर न्यूरोसर्जन डॉ. हिमांशु गुप्ता और सीनियर इंटरनेशनल रेडियोलॉजिस्ट डॉ. मनीष राजपूत ने अपने-अपने क्षेत्र में हो रहे अत्याधुनिक तकनीकी नवाचारों पर विस्तार से चर्चा की। डॉ. मनीष राजपूत ने बताया कि इंटरनेशनल रेडियोलॉजी अब कई गंभीर बीमारियों का बिना ऑपरेशन इलाज देने में सक्षम हो गई है। उन्होंने बताया कि लीवर कैंसर, गर्भाशय की गांठ (फाइब्रॉइड), प्रोस्टेट की समस्या और वेरिकोज वेन्स जैसी समस्याओं का इलाज अब इमबोलाइजेशन तकनीक से संभव है, जिसमें खून की आपूर्ति रोककर ट्यूमर को छोटा किया जाता है। डीप वेन थ्रॉम्बोसिस (क्टज) में कैथेटर के माध्यम से थक्के घोलने की तकनीक अपनाई जाती है, जिससे मरीज को तुरंत राहत मिलती है। नीडल बायोप्सी, ड्रेनेज और अन्य जटिल प्रक्रियाएं अब दर्दरहित तरीके से और कम समय में की जा रही हैं। वहीं डॉ. हिमांशु गुप्ता ने न्यूरोसर्जरी के क्षेत्र में माइक्रोस्कोपिक और एंडोस्कोपिक तकनीकों के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि ब्रेन ट्यूमर की सर्जरी अब माइक्रो न्यूरोसर्जरी, ब्रेन नेविगेशन और एंडोस्कोपिक तकनीकों से अधिक सुरक्षित और सटीक हो गई है। हेड इंजरी के मामलों में इंट्राक्रेनियल प्रेशर मॉनिटरिंग, एमआर ट्रैक्टोग्राफी और सीटी-बेस्ड निर्णय प्रणाली की मदद से जीवन रक्षक फैसले लिए जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि नई तकनीकों की मदद से ऑपरेशन के बाद रिकवरी तेज हो गई है, अस्पताल में भर्ती रहने का समय घटा है और मरीज जल्दी सामान्य जीवन में लौट पा रहे हैं। विशेषज्ञों ने उम्मीद जताई कि चूरू जैसे शहरों में भी आधुनिक चिकित्सा तकनीकों की पहुंच बढ़ेगी और गंभीर रोगों के इलाज में शहरवासियों को राजधानी स्तर की सुविधाएं स्थाई रूप से मिल सकेंगी। डॉक्टरों ने कहा कि इटर्नल हॉस्पिटल की चेयरपर्सन मंजू शर्मा निरंतर चिकित्सको से परामर्श कर हॉस्पिटल में उत्तम व नवीनतम उपकरणों का इंस्टाल कर समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए सटीक उपचार पर फोकस करती है। इस अवसर पर चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े कई स्थानीय डॉक्टर, पत्रकार और नागरिक उपस्थित रहे।

स्वात्वाधिकारी, कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा कैम्ब्रिज मल्टीमीडिया प्रा.लि., सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर में मुद्रित एवं सी-565 सी, 4 सी स्कीम, न्यू लोहा मंडी रोड, सीकर रोड़ जयपुर -302013 से प्रकाशित।
सम्पादक : नीतू चौधरी, सी-588, 4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड, जयपुर-302013 मो. : 7014217770, E-Mail : jaipurtimes2007@gmail.com *पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार, समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर।

गुरु गोलवलकर आकांक्षी ब्लॉक विकास योजना को लेकर बैठक आयोजित

जयपुर टाइम्स

नांवासिटी(निस)। गुरु गोलवलकर आकांक्षी ब्लॉक विकास योजना को लेकर नांवा उपखंड अधिकारी दिव्या सोनी की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में ब्लॉक स्तर के विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। इस बैठक में रामेश्वर गढ़वाल (तहसीलदार नावां), सौरव जैन (ब्लॉक मुख्य चिकित्सा अधिकारी), शांति जाखड़ (सहायक अभियंता, पीएचईडी नावां), पवन कुमावत (सहायक प्रोग्रामर) सहित अन्य विभागों के अधिकारी मौजूद रहे। बैठक के दौरान सभी विभागों की ओर से आगामी दिनों में योजना के तहत निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति एवं कार्यान्वयन की रणनीति पर विस्तृत चर्चा की गई। उपखंड अधिकारी ने योजना का परिचय, उद्देश्य, कार्यक्षेत्र, विशेषताएँ व आगामी कार्ययोजना के संबंध में सभी विभागीय अधिकारियों को स्पष्ट दिशा-निर्देश प्रदान किए।

नेमीचंद चौथी बार बने ग्राम विकास अधिकारी संघ के अध्यक्ष

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। निर्वाचन अधिकारी रूपाराम मेघवाल ने ग्राम विकास अधिकारी संघ के चुनाव संपन्न करवाए। चुनाव में चौथी बार नेमीचंद मेघवाल संघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। निर्वाचन अधिकारी रूपाराम मेघवाल ने बताया कि अध्यक्ष नेमीचंद मेघवाल, उपाध्यक्ष माणकचंद, मंत्री जितेन्द्र सिंह राठौड़, कोषाध्यक्ष मुकेश मेघवाल, संरक्षक जुगल किशोर, सलाहकार हरि कालेर, जिला प्रतिनिधि राजेश बेरवाल निर्वाचित हुए हैं। इस दौरान नव निर्वाचित पदाधिकारियों का साफा व पुष्पहार पहनाकर स्वागत किया गया।

मोबाईल चोरी का आरोपी गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। मोबाईल चोरी के मामले में पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार किया है। कोतवाली पुलिस के अनुसार अजीज नामक व्यक्ति ने दर्ज करवाई गई रिपोर्ट पर ये कार्यवाही की गई है। पुलिस ने इमरान पुत्र इलियास, निवासी ड्रीमलाईट सिनेमा के पास सुजानगढ़ को गिरफ्तार किया है। आरोपी को गिरफ्तार करने में हैड कांस्टेबल दिलीपसिंह, कांस्टेबल रामप्रसाद डालूराम ने महती भूमिका निभाई।

भारतीय सेना से सेवानिवृत कस्वां का चूरू पहुंचने पर किया भव्य स्वागत

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। चूरू में शनिवार को भारतीय सेना के तकनीकी सूबेदार मेजर नारायण सिंह कस्वां ईएम सेन्टर सिकंदराबाद से सेवानिवृत होकर दोपहर चूरू रेलवे स्टेशन पहुंचे। जहां सैनिक लैब के संचालक राहुल कस्वां के नेतृत्व में उनका माला साफा पहनाकर व गुलदस्ता भेंट कर भव्य स्वागत किया गया। इसके बाद खुली गाड़ी में बैठाकर जुलूस के रूप में घर पहुंचे जहां पर परिवारजन इष्ट मित्रों व समाज बन्धुओं ने माला पहनाकर भव्य स्वागत किया। इस अवसर पर राहुल कस्वां ने बताया कि सुबेदार नारायण सिंह का कारगिल युद्ध में भी योगदान रहा। भारतीय सेना में उत्कृष्ट कार्य करने पर ये स्वागत समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर सूबेदार सोहन, विकास स्वामी एमएस डिफेंस संचालक, हरिराम शर्मा, सुशील स्वामी, रणजीत राहड़, सुरेंद्र बुडानिया, सुरेंद्र कस्वां, अधिवक्ता रमेश राहड़, सरपंच सुरेंद्र, श्रवण कुल्हरी, विष्णु हुड्डा, सुबेदार लक्ष्मण सिंह, सरिता कस्वां, अर्चना कस्वां, शुभम एनजीओ संचालक, प्रिया, मनीष, जय कस्वां, तनसुख सहित शहर के कई लोग उपस्थित रहे । सूबेदार मेजर नारायण सिंह कस्वां ने सभी का आभार व्यक्त किया।

निजी बस के कंडक्टर का सिर फोड़ा

सुजानगढ़(नि.सं.)। निजी बस के कंडक्टर के साथ मारपीट कर सिर फोड़ देने का मामला सामने आया है। इस बारे में पीड़ित राजेंद्र निवासी बामणिया ने पुलिस को रिपोर्ट देकर बताया है कि मैं सीकर नोहड़िया बस में कंडक्टर हूं। शनिवार को सुबह सवा दस बजे अशोक स्तंभ तिराहे पर पहुंचा तो, कुचेरा से सालासर रूट पर चलने वाली बस के चालक चतरसिंह, कंडक्टर खिराज पूनिया व तीन अन्य लोगों ने मेरे साथ लाठियों व सरियों से मारपीट की और जिससे मेरे सिर व मगरों पर चोट आई और मैं तहुलुहान हो गया। राजेंद्र ने 16 हजार 400 रूपये शर्ट की जेब से निकाल लेने का आरोप भी लगाया है। राजेंद्र ने पुलिस से आरोपियों पर सख्त कानूनी कार्यवाही करने की मांग की है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 की उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ व भविष्य की योजनाओं पर संगोष्ठी

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के पांच वर्ष पूरे होने के अवसर पर सेठ बुद्धमल दुगड़ राजकीय महाविद्यालय की अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ राजस्थान (उच्च शिक्षा) की स्थानीय इकाई के तत्वावधान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की उपलब्धियाँ, चुनौतियाँ व भविष्य की योजनाएँ विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें वर्ष 2030 तक भारत में सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन पर्यन्त शिक्षा के अवसरों को बढावा दिए जाने के लक्ष्य को पूरा करने के लिए भारत सरकार की ओर से 29 जुलाई 2020 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 लागू की गई थी। संगोष्ठी में अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के सेवा व पर्यावरण आयाम प्रमुख प्रो सुशील कुमार बिस्सु

कार्यशाला के मुख्य अतिथि व मुख्य वक्ता रहे। एबीआरएसएम उच्च शिक्षा के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य डॉ अनूप कुमार आत्रेय विशिष्ट अतिथि रहे। मुख्य अतिथि प्रो बिस्सु ने अपने उद्बोधन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की पाँच वर्षों की यात्रा का समग्र मूल्यांकन प्रस्तुत किया। उन्होंने सरल व बोधगम्य शब्दों में स्पष्ट किया कि इस नीति की आवश्यकता क्यों पड़ी और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह किस प्रकार देश के शैक्षिक परिदृश्य को दिशा दे रही है। उन्होंने कहा कि यह नीति किसी एक विचारधारा या राजनीतिक दल की नीति नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र की साझा आकांक्षा का परिणाम है। उन्होंने श्रोताओं से कहा कि वे नीति का विश्लेषण अपने व्यक्तिगत अनुभवों और विस्तृत दृष्टिकोणों के आलोक में करें जिससे उसकी वास्तविक उपयोगिता के बारे में जानकारी प्राप्त हो सके। प्रो बिस्सु ने इस तथ्य पर विशेष बल दिया कि परिवर्तन हर क्षेत्र में स्वीकार्य होना चाहिए क्योंकि उससे ही समाज और देश का समग्र विकास होता है। मुख्य अतिथि ने भारतीय शिक्षा पद्धति की 64 कलाओं की वर्तमान प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज इन कलाओं को पुनः शिक्षा जगत से जोड़ने शिक्षा का उद्देश्य केवल अंक अर्जन करना नहीं, अपितु समग्र व्यक्तित्व विकास, आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसरता और नवाचारों के प्रति संवेदनशीलता होना चाहिए। विशिष्ठ अतिथि डॉ अनूप कुमार आत्रेय ने कहा कि यह नीति विद्यार्थियों को बोझरहित, रुचिकर व स्वतंत्र निर्णय की क्षमता युक्त शिक्षा प्रणाली की ओर अग्रसर करने वाली नीति है। जो देश की प्रगति के मूल स्तंभों गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वस्थ समाज, आर्थिक विकास, डिजिटलीकरण, तकनीकी सशक्तिकरण, सृजनात्मकता व उत्पादकता जैसे नवाचारों को शिक्षा की मुख्यधारा में लाकर विकसित भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देगी। संगोष्ठी में विषय प्रवर्तन प्रो देवी शंकर शर्मा ने किया। कार्यक्रम के अंत में महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो कविता शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त कर धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन स्थानीय इकाई के सचिव भवानीशंकर ने किया। इस अवसर पर डॉ योगेश चाहर, प्रो एमए खान, शेरसिंह, जिला उपाध्यक्ष कमलेश कुमार जोशी, मुकेश कुमार प्रजापत, राजकुमार झाकल, लालचंद मीणा, डॉ सुनीता मीणा, अलका जांगिड़, लता गुर्जर, महेश कुमार, जयरतन लखेरा, सुमन आदि संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

रतनगढ़ भाजपा शहर मंडल कार्यकारिणी का परिचय सम्मेलन आयोजित

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। शहर मंडल कार्यकारिणी का परिचय सम्मेलन आयोजित हुआ। सम्मेलन का शुभारंभ भारत माता, पंडित दीनदयाल उपाध्याय और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्रों के सामने दीप प्रज्वलन करके किया गया। सम्मेलन के मुख्य अतिथि, पूर्व विधायक अभिनेश महर्षि ने सभी नए पदाधिकारियों का एक-एक करके परिचय लिया और उन्हें पार्टी का दुपट्टा पहनाकर स्वागत किया। उन्होंने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि कोई भी जिम्मेदारी छोटी या बड़ी नहीं होती है। संगठन जो भी जिम्मेदारी दे, उसे पूरी लगन और मेहनत से निभाना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक संगठन है, जहाँ एक छोटा कार्यकर्ता भी बड़े पद तक पहुँच सकता है। महर्षि ने सभी कार्यकर्ताओं से मिलकर केंद्र और राज्य सरकारों की जनकल्याणकारी योजनाओं को हर व्यक्ति तक पहुँचाने का आग्रह किया। उन्होंने यह भी कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश तेजी से प्रगति कर रहा है, जो हम सभी कार्यकर्ताओं के लिए गर्व की बात है। भाजपा जिला प्रवक्ता ओमप्रकाश महर्षि ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि सभी पदाधिकारियों को निस्वार्थ भाव से संगठन के लिए काम करना चाहिए। उन्हें अपने-अपने क्षेत्र में आम जनता के साथ गहरे संबंध बनाने चाहिए और संगठन के हर कार्यक्रम में हिस्सा लेना चाहिए, तभी शहर मंडल को देश और राज्य में एक विशेष पहचान मिल पाएगी। इस सम्मेलन को विधानसभा संयोजक अर्जुन सिंह फ्रांसा और शहर मंडल अध्यक्ष महेश सैनी ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर शहर मंडल कार्यकारिणी के सभी पदाधिकारी उपस्थित रहे।

राज्य वित्त आयोग अध्यक्ष अरुण चतुर्वेदी का नावां में भव्य स्वागत

जयपुर टाइम्स

नावांसिटी(निस)। राजस्थान भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और हाल ही में राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष नियुक्त किए गए अरुण चतुर्वेदी का शनिवार को प्रथम बार नावां सिटी आगमन पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया। चतुर्वेदी जैसे ही नावां पहुंचे, कार्यकर्ताओं ने पारंपरिक तरीके से दुपट्टा पहनाकर और माल्यार्पण कर उनका सम्मान किया। स्थानीय भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं ने ढोल-नगाड़ों और नारों के साथ जोरदार स्वागत किया। इस अवसर पर चतुर्वेदी ने अपने संबोधन में कहा कि राज्य वित्त आयोग का कार्य मिलने से जनता से सीधे जुड़ा हुआ है, और मैं पूरी निष्ठा से इस ज़िम्मेदारी का निर्वहन करूंगा। उन्होंने नावां क्षेत्र के विकास और स्थानीय समस्याओं पर

भी चर्चा की और भरोसा दिलाया कि राज्य सरकार के समन्वय से हर स्तर पर सकारात्मक पहल की जाएगी। इस मौके पर बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता, स्थानीय पदाधिकारी, समाजसेवी और नागरिक उपस्थित रहे। आयोजन को सफल बनाने में भाजपा नावां मंडल की अहम भूमिका रही। इसमें भाजपा के मंडल अध्यक्ष प्रकाश योगी, बद्री फुलवरिया, आशीष बियाणी, राधेश्याम माली, अशोक टेलर, अशोक अटल पारीक, नटवर गोड, गोपाल सोनी, तुलसीराम दादरवाल, कुमावत समाज अध्यक्ष सीताराम नागा, राधेश्याम पारीक, देवीलाल पचेरीवाल, राजेंद्र गुरिया, लोकेश गुरिया, सुल्तान सिंह भुनी, मुकेश कुमावत व यश माली सहित भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

आबसर का तालाब बना जल संरक्षण की मिसाल

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। शहर के निकटवर्ती गांव आबसर का तालाब इन दिनों बारिश के चलते सावन महीने के सुहाने मौसम में पानी से लबालब भरा हुआ है और यह जल संरक्षण की अच्छी मिशाल क्षेत्र में स्थापित कर रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि तालाब के पानी को अब तक कुछ लोग पीने के काम लेते हैं और पानी की शुद्धता का खयाल रखा जाता है, साथ ही जानवरों को इस तालाब में नहीं घुसने दिया जाता। जिसके कारण पानी की गरिमा बनी रहती है। गांव के वरिष्ठ नागरिक सीताराम स्वामी ने बताया कि गांव के लोग जल संरक्षण के प्रति काफी जागरूक हैं और इस तालाब को किसी भी प्रकार से गंदा नहीं करने दिया जाता, जिसके कारण यह तालाब पानी से लबालब है और आस-पास के क्षेत्र में इससे बड़ा तालाब देखने को नहीं मिलेगा। राष्ट्रीय जाट महासभा के प्रदेश अध्यक्ष धर्मेन्द्र कीलक ने बताया कि प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करना हमारा कर्तव्य है और गांव का प्रत्येक नागरिक जल संरक्षण को लेकर सतर्क है। कीलक ने बताया कि जिस प्रकार से आबसर गांव में जल संरक्षण की मिसाल ये तालाब बना है, उससे लगता है कि आस-पास के क्षेत्र में ये तालाब और भी पंचायतों के लिए प्रेरणा का कार्य करेगा। गांव के ठाकुरजी मंदिर के पुजारी भंवरदास पुजारी ने बताया कि तालाब की चारदीवारी होने के बाद तालाब का स्वरूप निखरकर सामने आया है। पुजारी ने बताया कि हमारे गांव में स्वामीजी पुराने समय में बच्चों को पढ़ाते थे और जो बच्चे शैतानी करते थे, उनको दंड के रूप में तालाब से मिट्टी निकालने का दंड दिया जाता था और धीरे-धीरे आगे चलकर तालाब का बड़ा रूप सामने आया। उसके बाद ग्रामीणों ने भी काफी सालों तक मिट्टी निकालने का काम किया। फिर सरकारों का ध्यान जाने के बाद तालाब आज आस-पास के क्षेत्र में जल संरक्षण की मिसाल के रूप में गिना जाने लगा है।

टूटी सड़क व पानी भराव की समस्या से परेशान लोगों ने सड़क पर जाम लगाकर किया प्रदर्शन

समस्या के जल्द समाधान का दिया आश्वासन

जयपुर टाइम्स

सरदारशहर(निस)। शहर का मुख्य मार्ग सोमनाथ मंदिर के आगे टूटी सड़क और जल भराव की स्थिति को देखते हुए सरदारशहर विकास मंच के नेतृत्व में कई सामाजिक संगठनों ने सड़क को जाम लगाकर जोरदार विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान जमकर प्रशासन के खिलाफ लोगों ने नारेबाजी कर आक्रोश जताया। वहीं कई घंटे बाद भी धरना स्थल पर जब कोई प्रशासनिक अधिकारी मौके पर नहीं पहुंचे तो धरने पर बैठे सभी लोग कृषि विज्ञान केंद्र पहुंच गए। जहां पर जिला कलेक्टर अभिषेक सुराणा सहित कई अधिकारी और जनप्रतिनिधि की मौजूदगी में धरनार्थियों ने अपनी पीड़ा जिला कलेक्टर के सामने रखी। इस दौरान सरदारशहर विकास मंच अध्यक्ष राजेंद्र राजपुरोहित ने कहा कि पिछले लंबे समय से सोमनाथ जी मंदिर के आगे सड़क क्षतिग्रस्त है। यहां पर आए दिन जल भराव की स्थिति बनी रहती है। जिसके चलते यहां से गुजरने वाले वाहन चालकों को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। यहां कई बार हादसे भी हो चुके हैं। यह मार्ग कई राजकीय कार्यालयों को जोड़ता हैं। इसके अलावा यहां कई बड़े मंदिर भी हैं। जहां हर दिन हजारों की संख्या में श्रद्धालु आते हैं। कई बार प्रशासनिक अधिकारियों को टूटी सड़क और गंदा पानी की समस्या से अवगत कराने के बावजूद भी आज तक समस्या का समाधान नहीं किया गया है। ऐसे में मजबूरन हमें आंदोलन करना पड़ रहा है। इस दौरान जिला कलेक्टर ने स्थानीय अधिकारियों को मौका निरीक्षण कर जल्द से जल्द समाधान करने का निर्देश दिया। जिसके बाद मौके में पहुंची उपखंड अधिकारी डॉ दिव्या चौधरी और नगर परिषद सभापति राजकरण चौधरी ने सड़क का मौके का निरीक्षण कर जल्द से जल्द समस्याओं का समाधान करने का धरनार्थियों को आश्वासन दिया। इसके बाद लोगों ने धरना समाप्त कर दिया गया। इस दौरान धरने पर सरदारशहर विकास मंच के अध्यक्ष राजेंद्र राजपुरोहित, आरएलपी नेता सांवरमल जाखड़, राकेश चौधरी, रामपाल चौधरी, श्योकरण पोटलिया, हंसराज सिद्ध, सीताराम भाट, कमल भाट सहित बड़ी संख्या में शहर के लोग मौजूद रहे।

जसरापुर में शहीद दीप सिंह निर्वाण की मूर्ति का अनावरण, वीरांगना सहित परिवार का हुआ सम्मान

जयपुर टाइम्स

खेतड़ी(निसं.) जसरापुर (खेतड़ी) की ढाणी रामा, ज्ञानीराम का कुआं, वार्ड 12 में शनिवार को शहीद दीप सिंह निर्वाण की प्रतिमा का अनावरण समारोह भावपूर्ण माहौल में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर्नल रामावतार सिंह शेखावत ने की। मुख्य अतिथि राजस्थान सैनिक कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष प्रेम सिंह बाजोर एवं समाजसेवी मनोज घुमरिया रहे। विशिष्ट अतिथियों में खेतड़ी पंचायत समिति प्रधान मनीष गुर्जर, करणी सेवा अध्यक्ष सुरेंद्र फौजी, समाजसेवी झंडूराम गुर्जर, इंजीनियर महावीर सिंह शेखावत, मनोहर सिंह घोड़ीवारा, गोविंद सिंह सुल्ताना, उम्मेद सिंह शेखावत करीरी,

कैप्टन सुमेर सिंह नाडा, जीपस सुमित गुर्जर, सीआरपीएफ के अनिल कुमार खैरवा, सुबेसिंह, समदर सिंह निर्वाण मेंहाड़ा, कैप्टन लक्ष्मण सिंह, राधेश्याम जांगिड़, सत्यनारायण सुरेलिया, इंद्राज सिंह डोई, मदन सिंह, सूबेदार महेंद्र सिंह शेखावत, प्रवीण भोजगड़िया, संदीप सिंह कांट, बहादुर सिंह निर्वाण, हवलदार उमराव सिंह निर्वाण, प्रहलाद सिंह निर्वाण, हवलदार राजेंद्र सिंह, हरिओम उसरिया, मनीष बन्ना, ओमप्रकाश सिराधना, हवलदार महेंद्र सिंह, मोहन सिंह निर्वाण डाडा फतेहपुरा, ओमवीर सिंह, सूबेदार महेंद्र सिंह निर्वाण सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। शहीद दीप सिंह की प्रतिमा का अनावरण प्रेम सिंह बाजोर एवं मनोज घुमरिया ने किया। सभी अतिथियों ने पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी और "शहीद दीप सिंह अमर रहें" के नारे लगाए। इस दौरान शहीद की पत्नी रेखा कंवर भावुक होकर फफक पड़ीं। मंच पर उन्हें पुष्प भेंट कर साल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। साथ ही माता रतन कंवर, पिता भरत सिंह, भाई लक्ष्मण सिंह, बेटी जिया और पुत्र रोहित को भी सम्मानित किया गया। समाजसेवी मनोज घुमरिया ने शहीद वीरांगना को 1,11,000 की सहायता राशि भेंट की। उन्होंने कहा कि शहीदों की वजह से ही हम सुखद जीवन जीते हैं और समाज को उनके परिवारों के सुख-दुख में साथ रहना चाहिए। प्रेम सिंह बाजोर ने कहा कि शहीदों को देवताओं से ऊपर मानकर पूजा जाना चाहिए। राजकुमार सिंह निर्वाण ने बताया कि दीप सिंह (34), सीआरपीएफ वजीराबाद, आरएएफ यूनिट 103, दिल्ली में तैनात थे। 31 जुलाई 2024 को ड्यूटी के दौरान तबीयत बिगड़ने पर उन्हें शालीमार बाग स्थित मैक्स अस्पताल ले जाया गया, जहां 1 अगस्त की सुबह हार्ट अटैक से उनका निधन हो गया। वे परिवार में सबसे छोटे थे। कार्यक्रम का संचालन पाल सिंह नीमकाथाना ने किया एवं सुरेश आर्य एंड पार्टी अलीपुर ने भजन व देशभक्ति रचनाएं प्रस्तुत कीं।

पुरुषोत्तम दास पुरोहित के नाम पर स्मृति डाक टिकट का विमोचन

जयपुर टाइम्स

सुमेरपुर(निस)। पुरुषोत्तम दास पुरोहित के नाम पर स्मृति डाक टिकट का विमोचन कार्यक्रम यशवंत राव सभागार मुंबई में राजस्थान के महामहिम राज्यपाल हरि भाऊ बागड़े, मुंबई विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर, पूर्व केंद्रीय वित्त राज्यमंत्री डाक्टर भागवत कराड, महाराष्ट्र के पूर्व गृह राज्य मंत्री राज के पुरोहित, कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष भंवरसिंह राजपुरोहित, सुचिता जोशी पोस्ट मास्टर जनरल मुंबई पी.एच, पुरोहित चेरिटेबल ट्रस्ट के न्यासी विनोद पुरोहित, घनश्याम पुरोहित,जगदीश पुरोहित व मनीष पुरोहित और सनम पुरोहित की उपस्थिति में संपन्न हुआ। स्मृति डाक टिकट विमोचन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने कहा कि डाक विभाग की ओर से जारी यह स्मारक डाक टिकट पुरुषोत्तम दास पुरोहित जी की सामाजिक प्रतिबद्धता, शिक्षा के प्रचार-प्रसार और

सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना में उनके योगदान को दर्शाता है। पुरुषोत्तमदास पुरोहित ने अपना संपूर्ण जीवन समाज सेवा शैक्षिक उत्थान और सांस्कृतिक जागरूकता को समर्पित किया। उनका व्यक्तित्व आज भी युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है राजस्थान के पाली जिले के सुमेरपुर तहसील के बसंत गांव के निवासी पुरुषोतमदास पुरोहित ने अपने गांव से सन 1931 में मुंबई आकर व्यवसाय प्रारम्भ किया और व्यवसाय के साथ समाज सेवा और स्वतंत्रता आंदोलन में जो योगदान दिया, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा पुंज के रूप में समाज को एक नई दिशा प्रदान करेगा। यह डाक टिकट देश के सभी युवाओ को राष्ट्रीय पुनर्निमाण के संदर्भ में समर्पित है ताकि युवा पुरुषोत्तम दास जी से प्रेरणा प्राप्त कर सके। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए विधान सभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर ने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन मे पुरुषोत्तमदास पुरोहित ने आजाद हिन्द फ़ौज को भी सहयोग प्रदान किया। इस कार्य के लिए वह लगातार चार वर्षो तक विदेश में रहकर नेताजी सुभाषचंद्र बोस को सहयोग करते हुए इस देश को आजाद करवाने में अपना अमूल्य योगदान दिया। इसके लिए कालबा देवी विधान सभा क्षेत्र के कालबादेवी मंदिर मार्ग के समीप पुरुषोत्तम दास मार्ग के रूप में राज्य सरकार ने पूर्व मे घोषित किया था, आज यह डाक टिकट विमोचन कार्य से हम सभी लोग पुरुषोत्तमदास जी के जीवन से प्रेरणा लेते हुए समाज सेवा में निरंतर आगे बढ़ने का प्रयास कर रहे है। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए पूर्व वित्त राज्य मंत्री और राज्य सभा सांसद डॉ भागवत कराड ने कहा कि समाज के विकास में जिन महा पुरुषो ने अपना योगदान दिया है उनमे एक प्रमुख नाम पुरषोत्तमदास पुरोहित जी का भी है जो कि मारवाड़ की पावन धरती सुमेरपुर बसंत से आर्थिक राजधानी मुंबई में आकर समाज सेवा को जीवन का आधार बना कर कार्य प्रारम्भ किया और समाज सेवा के साथ देश सेवा के भाव को जागृत करते हुए केवल मुंबई नहीं बल्कि देश के विभिन्न हिस्सों में गो सेवा धार्मिक प्रतिबद्धता शिक्षा व स्वास्थ्य सेवा के साथ साथ प्रवासी व्यक्तियों को रोजगार से जोड़ने में अपनी बहुत बड़ी भूमिका का निर्वाहन किया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए महाराष्ट्र के पूर्व गृह मंत्री राज के पुरोहित ने कहा कि आज मै जो भी कुछ हु वह पुरुषोत्तम दास पुरोहित के कारण हूं। क्योंकि जब मै मारवाड़ से मुंबई आकर समाज सेवा के साथ राजनीति के क्षेत्र में कार्य प्रारम्भ किया तो स्थानीय अविभावक के रूप में दाता पुरुषोत्तमदास जी ने सदैव मार्गदर्शन करते हुए जीवन के हर मोड़ पर संबल प्रदान किया। आज ऐसे महान पुरुष के स्मृति में डाक विभाग भारत सरकार की ओर से डाक टिकट जारी किया गया है, यह स्मृतिया आने वाली पीढ़ी को स्वतन्त्रता आंदोलन के साथ ही विकास में सामाजिक सरोकारिता को याद दिलाता रहेगा। सुमेरपुर पंचायत समिति के पूर्व प्रधान पृथ्वीराज पुरोहित ने कहा कि मेरे पिता पुरुषोत्तमदास जी हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है। आज भारत सरकार ने मेरे पिता जी के सामाजिक मूल्यों को स्मृति डाक टिकट के रूप में सहेज करके उनके सामाजिक कार्यों को जो स्वरुप दिया है, इस कार्य के लिए भारत सरकार का आभार जताया। कार्यक्रम में मारवाड़ के प्रमुख भामाशाह नरेश पुरोहित खींदारा गांव, दिलीप राजपुरोहित, हिम्मत सिंह चाचौड़ी, डॉक्टर शोभा पुरोहित, राधा पुरोहित, अजयराज, बाबूसिंह, राजगुरु लाभ, शंकर लादू नगर, जगदीश सिंह घेनड़ी, प्रकाश सिंह बारवा, नितेश सिंह ढोला सहित अन्य नागरिक उपस्थित रहे।

आकांक्षा हाट में डिजिटल फोटोग्राफी व वीडियोग्राफी एडिटिंग का दिया प्रशिक्षण

6 अगस्त तक चलेगा आंकाक्षा हाट

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा के निर्देशन में जिले के राजगढ़ ब्लॉक मुख्यालय पर आयोजित हो रहे आकांक्षा हाट में शनिवार को राजीविका महिलाओं को डिजीटल फोटोग्राफी व वीडियोग्राफी का प्रशिक्षण दिया गया। डीपीएम दुर्गा देवी ढाका ने बताया कि आकांक्षा हाट 06 अगस्त, 2025 तक चलेगा। आंकाक्षा हाट में आमजन से मेले को लेकर अत्यंत उत्साहजनक प्रतिक्रिया मिल रही है। स्वयं सहायता समूह की महिलाओं की ओर से बनाए गए हर्बल साबुन, सुरमा, पंखियां, आसन-दरियां, अचार, अगरबत्ती, लोहे के बर्तन, बड़ी, वुडन हैंडीक्राफ्ट आइटम्स आदि हस्तनिर्मित उत्पादों आकर्षण का केन्द्र हैं। उन्होंने बताया कि शनिवार को आर्यन की ओर से डिजिटल फोटोग्राफी व वीडियोग्राफी एडिटिंग का प्रशिक्षण दिया गया। उन्होंने यह बताया कि डिजिटल प्लेटफॉर्म्स को किस प्रकार उत्पाद की ब्रांडिंग व बिक्री के लिए प्रभावी रूप से उपयोग में लाया जा सकता है। यह प्रशिक्षण उपस्थित महिलाओं व कारीगरों के लिए उनके उत्पादों के विक्रय व मार्केटिंग में अत्यंत उपयोगी साबित होगा। इस दौरान डीटीई रमेश कुमार शर्मा, कृष्ण भाकर, सुरेन्द्र पूनिया सहित राजीविका स्टाफ एवं आमजन उपस्थित रहे।

तीन दिवसीय शिवजी के ब्यावले का समापन

जयपुर टाइम्स

झुंझुनू(निस)। महिला सत्संग मंडल झुंझुनू की ओर से तीन दिवसीय मान नगर स्थित चल रही कथा शिवजी का ब्यावला का आयोजन 31 जुलाई से शुरू हुआ। कथावाचक काजोडनाथ, मालसर के मुखारविंद की ओर से हुई। इस कथा के प्रथम दिवस पर पार्वती माता का जन्मोत्सव, द्वितीय दिवस शिव तिलकोत्सव व तृतीय दिवस शिव पार्वती विवाह संपन्न हुआ। महिला सत्संग मंडल की अध्यक्ष कंचनलता ने बताया कि कार्यक्रम में भगवान शिव को दूल्हे के रूप में सजाया, मेहंदी-हल्दी लगाई, मंडप सजाया और बारात निकाली। यह सब सजीव झांकियों से शिव पार्वती का विवाह संपन्न हुआ।

जमालपुरा में विधायक मनोज मेघवाल का फूंका पुतला

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। जमालपुरा क्षेत्र के लोगों ने पानी निकासी की समस्या के स्थायी समाधान के लिए पंप हाउस के पास धरना जारी रखा। धरने के तीसरे दिन कांग्रेस के खिलाफ नारेबाजी करते हुए विधायक मनोज मेघवाल का पुतला फूंका। इस अवसर पर लोगों ने पेट्रोल डालकर पुतले को आग लगाई और मुर्दाबाद के नारे भी लगाए। लोगों ने

बताया कि यहां की समस्या का स्थायी समाधान करने के लिए जनप्रतिनिधियों में कोई रूचि नहीं है। पार्षद प्रतिनिधि जावेद खिची ने बताया कि यहां आने वाले पानी को गैनाणी में डाईवर्ट करने की मांग हम लोग कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जमालपुरा के लिए स्वीकृत हुई पेयजल टंकी को भी कुछ लोग वार्ड नम्बर 8 में ले जाना चाहते हैं, जिससे मोहल्ले के लोगों में काफी आक्रोश है। लोगों ने कहा कि विधायक की ओर से अनदेखा किए जाने के कारण आज हमारे मोहल्लों में हालात खराब हो रहे हैं। प्रदर्शन के दौरान फारूक काजी, खलील दईया, बिलाल चौहान, जावेद दहिया, अकरम पंवार, सादिक दैया, हारून पंवार, आबाद अगवाल सहित अनेक लोग मौजूद रहे। दूसरी ओर धरने पर बड़ी संख्या में मोहल्ले के लोगों और महिलाओं ने शिरकत की।

एडवोकेट नाथूराम गुर्जर की पुण्यतिथि पर शिविर का आयोजन

पगलिया वाले बाबा धाम पर एक्यूप्रेशर शिविर का अरुण चतुर्वेदी ने किया अवलोकन

जयपुर टाइम्स

नावांसिटी(निस)। नांवा उपखंड मुख्यालय स्थित जाब्दीनगर रोड पर पगल्या वाले बाबा धाम परिसर में शनिवार को एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति पर आधारित 8 दिवसीय नि:शुल्क चिकित्सा शिविर का भव्य समापन हुआ। शिविर का आयोजन समाजसेवी नाथूराम गुर्जर एडवोकेट की पुण्यतिथि के अवसर पर समाजसेवी जगदीश प्रसाद गुर्जर व प्रधान प्रतिनिधि व भाजपा जिला उपाध्यक्ष एडवोकेट राजेश गुर्जर के सौजन्य से किया गया। कार्यक्रम में अतिथियों ने सर्वप्रथम समाजसेवी नाथूराम गुर्जर को श्रद्धासुमन अर्पित कर उनके सामाजिक योगदान को स्मरण किया। शिविर स्थल पर अरुण चतुर्वेदी वित आयोग अध्यक्ष का स्वागत आयोजक

समाजसेवी एडवोकेट राजेश गुर्जर ने माला व साफा पहनाकर किया। कस्बे के पवित्र दर्शनीय स्थल पगलिया वाले बाबा धाम पर आयोजित एक्यूप्रेशर चिकित्सा शिविर ने जनसेवा की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इस शिविर का अवलोकन करने विशेष रूप से अरुण चतुर्वेदी पूर्व भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पूर्व मंत्री व वर्तमान वित्त आयोग अध्यक्ष, नाहर सिंह जोधा भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष, सुनीता रांदड़ भाजपा जिला अध्यक्ष, देवीलाल ददरवाल सरपंच, राजश्री खांडल जिला प्रवक्ता नागौर देहात, पवन शर्मा अध्यक्ष नावां ग्रामीण मंडल भाजपा, बच्चू सिंह ,बाबूलाल कुमावत पार्षद कुचामन, संजू देवी नागा पार्षद नगर पालिका नावां पधारे। कार्यक्रम में अरुण चतुर्वेदी ने कहा कि इस तरह के चिकित्सा शिविर ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाने और बिना दवा के उपचार के प्रति लोगों में विश्वास बढ़ाने में सहायक सिद्ध होते हैं। उन्होंने आयोजक टीम को साधुवाद देते हुए भविष्य में भी ऐसे आयोजन निरंतर रखने की बात कही। शिविर में बड़ी संख्या में स्थानीय श्रद्धालुओ ने भाग लेकर एक्यूप्रेशर उपचार प्राप्त किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में राजेश गुर्जर व उनकी टीम का समर्पण सराहनीय रहा। समाजसेवी जगदीश प्रसाद गुर्जर, एडवोकेट राजेश गुर्जर व प्रधान संतोष गुर्जर की सराहना करते हुए इसे जनकल्याण की दिशा में अनुकरणीय प्रयास बताया। शिविर 26 जुलाई से 2 अगस्त तक चला, जिसमें विशेषज्ञ एक्यूप्रेशर चिकित्सकों ने विभिन्न प्रकार के रोगों की नि:शुल्क जांच व उपचार सेवाएं प्रदान की।

पीएम किसान सम्मान निधि की 20 वीं किस्त जारी

सरदारशहर केविके में जिला स्तरीय कार्यक्रम

जयपुर टाइम्स

चूरू(निस)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को वाराणसी से प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की 20 वीं किस्त किसानों को समर्पित की। कार्यक्रम में उन्होंने देश के 9.70 करोड़ पात्र किसानों के बैंक खातों में 20 हजार 500 करोड़ रुपए की राशि डीबीटी से हस्तांतरित की। इस अवसर पर जिले के सरदारशहर उपखंड मुख्यालय स्थित कृषि विज्ञान केंद्र में जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिला स्तरीय कार्यक्रम वीसी के जरिए राष्ट्रीय व प्रदेश स्तरीय कार्यक्रम से जुड़ा रहा। इसी के साथ प्रत्येक पंचायत समिति व ग्राम पंचायत में भी कार्यक्रम का प्रसारण किया गया। इस अवसर पर चूरू विधायक हरलाल सहारण ने कहा कि केन्द्र व राज्य की डबल इंजन की सरकार किसानों के हित के लिए विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाएं शुरू की है। हमारी सरकार का ध्येय किसानों की समृद्धि है। इस अवसर पर जिला कलक्टर अभिषेक सुराणा ने प्रदेश सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर जिला उप प्रमुख महेंद्र न्यौल, राजकरण चौधरी, मधुसूदन राजपुरोहित, गिरधारीलाल पारीक, श्योकरण पोटलिया, हिमांशु दूगड़, श्रीचन्द सिद्ध आदि ने भी विचार व्यक्त किए। कृषि संयुक्त निदेशक राजकुमार कुलहरी, सहायक निदेशक कुलदीप शर्मा, कृषि अधिकारी रामवतार शर्मा ने कृषि विभाग से संबंधित विभिन्न योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कॉपरेटिव एमडी मदनलाल शर्मा ने ऋण एवं बैंकिंग योजनाओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जिले के करीब 2 लाख 20 हजार किसानों को लगभग 44 करोड़ रुपए की राशि हस्तांतरित की गई है। कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी मुकेश शर्मा ने आभार व्यक्त किया। इस मौके पर उपखण्ड अधिकारी दिव्या चौधरी, तहसीलदार रतनलाल मीणा, कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक हरीश रछोया, रमेश चौधरी, ओमप्रकाश इन्दोरिया, डॉ रमन जोधा, श्याम बिहारी, कानाराम, रमेश फोगाट, प्रभुराम पूनिया सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे । संचालन हरफूल सारण ने किया।

चालान माफ करने और आरसी बहाल करने की मांग, धरना जारी

जयपुर टाइम्स

सुजानगढ़(नि.सं.)। पुराने चालान पूर्णतया माफ करने और चालान की एवज में रद्द की गई आरसी को भी बहाल करने की मांग को लेकर खनन व परिवहन विभाग के जिला परिवहन कार्यालय के सामने ट्रक यूनियन का धरना-प्रदर्शन लगातार छठे दिन शनिवार को भी जारी रहा। ट्रक यूनियन, ट्रक ऑपरेटर्स व क्रेशर एसोशिएसन के पदाधिकारियों की ओर से जिला परिवहन कार्यालय के सामने सीएम का पूतला फूंका गया। सरकार पर पुराने चालान की एवज में आरसी रद्द कर जबरन वसूली का आरोप लगाते हुए यूनियन के अध्यक्ष हेतराम खिलेरी ने कहा कि हमारी मांगों का समर्थन पूरे राजस्थान के खनन से जुड़े लोगों ने किया है। ट्रक ऑपरेटर्स के साथ अन्याय अब बर्दाश्त नहीं होगा। सरकार की ओर से त्वरित गति से बैठक करके ट्रक, खनिज से जुड़े व्यापारियों की मांगों पर निर्णय किया जाना चाहिए। मांगो को लेकर जिला परिवहन अधिकारी बजरंग लाल को सीएम के नाम ज्ञापन दिया गया। इस दौरान नेमीचंद गढ़वाल, सुभाष खटीक, महेन्द्र गोदारा, अमित माली, प्रकाश ढिढारिया, गिरधारी कालेर, वीरू कालेर, कानाराम खीचड़, सुरेश बुगालिया, भंवरलाल ढाका, कुंदनमल पूनिया, रामनिवास रणवा, गोपाल खालिया, सुरेंद्र हुड्डा, रामलाल किलका, लंकेश अग्रवाल, राजेश रूलानिया, मोहननाथ सिद्ध, चुन्नीलाल खिलेरी, ओमप्रकाश किलका, रामनिवास, रामनारायण बिजारणिया, जयचंद तेतरवाल, मनोज खटीक, विकास दहिया, नानूराम नायक सहित अनेक क्रेशर, ट्रक यूनियन के लोग मौजूद रहे।

गिव अप अभियानः अपात्र 31 अगस्त तक स्वेच्छा से हटा सकते हैं नाम

झुंझुनू(निस)। जिले में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना के अंतर्गत अपात्र लाभार्थियों की पहचान व नाम हटाने की प्रक्रिया को लेकर गिव अप अभियान तेजी से चलाया जा रहा है। जिला रसद अधिकारी डॉ निकिता राठौड़ ने बताया कि ऐसे परिवार जो निर्धारित मापदंडों में नहीं आते, वे 31 अगस्त 2025 तक स्वेच्छा से खाद्य सुरक्षा योजना से अपना नाम हटवा सकते हैं। डॉ राठौड़ ने बताया कि जिन परिवारों में कोई सदस्य आयकरदाता हो, सरकारी सेवा में कार्यरत हो, वार्षिक आय 1 लाख रुपये से अधिक हो अथवा किसी के पास चार पहिया वाहन हो, वे इस योजना के लिए अपात्र माने जाते हैं। ऐसे परिवारों से अपील की गई है कि वे सामाजिक उत्तरदायित्व निभाते हुए योजना का लाभ स्वयं छोड़ें। अब तक झुंझुनू जिले में 8922 राशन कार्डों और उनसे जुड़ी करीब 40149 यूनिट्स को खाद्य सुरक्षा योजना से हटाया जा चुका है।

एसीआई में सेमिनार, विद्यार्थियों को दिया मार्गदर्शन

जयपुर टाइम्स

झुंझुनू(निस)। स्थानीय जिला मुख्यालय स्थित एसीआई उच्च माध्यमिक विद्यालय व कोचिंग संस्थान में प्री-फाउण्डेशन, फाउण्डेशन व आगामी विद्यालय स्तरीय परीक्षाओं के सन्दर्भ में एक भव्य सेमिनार का आयोजन संस्थान की पूर्व फाउण्डेशन छात्रा डॉ नीलम व विषय विशेषज्ञों के सानिध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में डॉ नीलम व प्री-फाउण्डेशन, फाउण्डेशन में सर्वश्रेष्ठ परिणाम देने वाले विद्यार्थियों को माल्यार्पण व पौधा देकर सम्मान किया। ज्ञात रहे कि नीलम ने राजकीय मेडिकल कॉलेज केरल से एमबीबीएस पूर्ण करने के पश्चात् उसका सपना था कि मैं सर्वप्रथम मेरे

कॉचिंग परिवार से मिलकर उनका आभार व्यक्त करूं जिनके समपर्ण के कारण मुझे ये मुकाम प्राप्त हुआ है। उसने अपना अध्ययन अनुभव अपने अनुजों के साथ साझा करते हुए कहा कि आत्मविश्वास, कठोर मेहनत व सही मार्गदर्शन के साथ प्राप्त की गई शिक्षा सफलता का सौपान है । उन्होने विद्यार्थियों का आह्वान करते हुए कहा कि संयम संकल्प अनुशासन व दृढ इच्छा शक्ति से अगर आगे बढा जाए तो लक्ष्य की प्राप्ति सुनिश्चित है। संस्था निदेशक विकास शर्मा ने अपने सम्बोधन में कहा कि सभी विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य का एक भ्रम पालना चाहिए और उस भ्रम के क्रियान्वयन के साथ कठोर मेहनत व लग्न के साथ लक्ष्य की प्राप्ती सुनिश्चित करे। डॉ कलाम के दृष्तांत के माध्यम से कहा कि कई बार असफलता कुछ बेहतर करने के लिए प्रेरित करती है, अत जो विद्यार्थी आत्मविश्वास, सीखने की प्रेरणा, मेहनत, समर्पण व विषय की मार्मिकता समझता हो। निश्चित सफलता अर्जित करता है। हमारा उद्देश्य विद्यार्थी में भावनात्मक लगाव के साथ उच्च कोटि के इंजिनियर, डॉक्टर, प्रशासक, प्रबन्धक व वैज्ञानिक सोच विकसित करना है। संस्था निदेशक मनोज शर्मा, विकास शर्मा ने नीलम के उज्ज्वल भविष्य कि कामना करते हुए कहा कि डॉ नीलम जैसे विद्यार्थियों का सफल होना ही हमारे लिए उचित पारितोषिक है। हम अपेक्षा करते है कि नीलम चिकित्सा सेवा को समाज व मानव सेवा के रूप में लेगी। इस अवसर पर फाउण्डेशन हैड विजय सैनी, सुनिल कुमार, दिनेश वर्मा, अशोक जांगिड़, राधेश्याम शर्मा, धमेन्द्र नागर, दिव्या रोहिला, जयप्रकाश शर्मा, महेन्द्र सिंह, राकेश, दिनेश आचार्य, संदीप झाझड़िया, पूनम जांगिड़, दिवेंक शर्मा, नरेश कुमार, आशा शर्मा, प्रियंका शर्मा, सरोज, निशा शर्मा, सुमन चौहान, वैशाली, ऐश्वर्या स्वामी, रितिका बहुगुणा, पूनम शर्मा, मो. बिलाल, हेमन्त जांगिड़, शिवकुमार पालीवाल, रमेश मील उपस्थित रहे।

पूर्व आईएएस बुनकर का नागरिक अभिनंदन

जयपुर टाइम्स

अजीतगढ(निस)। अजीतगढ कस्बा निवासी ओपी बुनकर (आईएएस) विशिष्ट शासन सचिव गृह विभाग जयपुर का शनिवार को इंडियन रेडक्रॉस सोसायटी कार्यालय में नागरिक अभिनंदन समारोह उपसंरक्षक सदस्य विजय यादव व पीईईओ प्रधानाचार्या सुमन गोडवाल की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में सेवानिवृत्त आईएएस ओपी बुनकर को साफा बंधवाकर व माल्यार्पण कर अभिनंदन किया गया। पूर्व आईएएस बुनकर ने कहा कि समाज हित में रचानात्मक कार्यो के लिए मै हर संभव मदद करूंगा। इस अवसर पर तहसील प्रभारी कपिल मीणा, ब्लॉक संयोजक शंकर लाल शर्मा, जिला सदस्य कमलेश कांवर, विष्णु चौधरी, प्रधानाचार्य कालूराम बुनकर, कल्याण सैनी, जीवण सैंनी, महेश दीवान, हरि महाराज, धर्मा सैंन, लालचंद कासोटिया, मोहन बुनकर, छीतर वर्मा, ओमप्रकाश कुमावत, रामजीलाल मीणा, भगवान सहाय गुर्जर, पवन शर्मा उपस्थित रहे।

प्राकृतिक खेती पर पांच दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन

जयपुर टाइम्स

श्रीमाधोपुर(निस)। कृषि विज्ञान केंद्र अरनिया में पांच दिवसीय प्राकृतिक खेती पर कृषि सखियों को पांच दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में नीमकाथाना, पाटन, श्रीमाधोपुर, अजीतगढ़, खंडेला ब्लॉक की 60 कृषि सखियों ने भाग लिया। सहायक निदेशक रामचंद्र बाजिया ने प्राकृतिक खेती को अपनाते हुए रासायनिक खेती को जड़ से खत्म करने के बारे में विस्तृत चर्चा की। कृषि विज्ञान केंद्र प्रभारी डॉक्टर शंकरलाल कस्वा ने पांच दिवसीय प्रशिक्षण में ब्रह्मास्त्र, निमास्त्र व वर्मी कंपोस्ट के बारे में प्रैक्टिकल कराए। मास्टर ट्रेनर रामावतार मिश्रा ने प्राकृतिक खेती के लिए गाय का महत्व बताते हुए गाय का गोबर, गोमूत्र, बेसन, गुड़, जीवाणु युक्त मिट्टी आदि को मिलाकर जीवामृत तैयार करके प्राकृतिक खेती में काम में लेने के लिए बताया। कार्यशाला में सहायक कृषि अधिकारी गोपाली देवी, हंसराज चौधरी, बाबूलाल चौधरी, कानाराम यादव आदि ने प्राकृतिक खेती पर चर्चा करते हुए संबोधित किया। कृषि सखियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया।

आभावास में बीटीएस हॉस्पिटल ने लगाया निःशुल्क चिकित्सा शिविर

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। एनएच 52 पर होटल रघु पैलेस के पास स्थित बीटीएस हॉस्पिटल की ओर से ग्राम पंचायत आभावास में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 162 मरीज लाभान्वित हुए। शिविर का विधिवत शुभारंभ डॉ भंवर सिंह ताखर, झाबर मल बिजारणियां, डॉ. अजय सक्सेना ने दीप प्रज्वलित करके किया। शिविर संयोजक एचआर बिजारणियां ने बताया कि शिविर में फिजिशियन डॉ राकेश यादव, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ निधि शर्मा, फिजियोथैरेपिस्ट डॉ भंवर सिंह ताखर, डॉ पुष्कर सिंह, नर्सिंगकर्मी कैलाश भावरिया, कृष्णा चौधरी, ममता, आशा सामोता, सचिन, संदीप गढ़वाल, सुभाष आदि ने सेवाएं दी। शिविर सह संयोजक सरदार मान ने बताया कि परामर्श के साथ निःशुल्क दवाईयां भी मरीजों को दी गई। मेडिकल टीम की ओर से गठिया रोग, जोड़ो में दर्द, सूजन, अकड़न, बुखार, उल्टी दस्त, डायबिटीज, बीपी, स्लिप डिस्क, रेयुमेटाइड अर्थराइटिस सम्बन्धित बीमारियों का इलाज किया गया। इस दौरान रोहिताश बिजारणियां, सुनिल कुमावत, महावीर कुमावत आदि उपस्थित रहे।

महिला थाना अधिकारी रिया का किया सम्मान

जयपुर टाइम्स

अजीतगढ़(निस)। कस्बे की थानाअधिकारी रिया चौधरी का शनिवार को नागरिकों ने दुपट्टा पहना कर सम्मान किया। कस्बे के कौशल्या दास मंदिर में अजीतगढ़ की पहली महिला थाना अधिकारी रिया चौधरी का दुपट्टा पहनाकर सम्मान किया। इस अवसर पर चौधरी ने कहा कि नारी शक्ति व लोगों की सुरक्षा का जिम्मा पूर्ण रूप से निभाएंगी और उनका सुरक्षा उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि उनको आने के बाद महिला कॉलेजो, बालिका स्कूलो के सामने पुलिस बराबर गश्त लगा रही है। कस्बे में पनप रहे नशे के कारोबार को खत्म करने मे पुलिस पूर्ण रूप से जुटी हुई है। इस अवसर पर शारदा देवी, करुणा देवी, नेहा देवी, हंसा देवी, पूर्वी देवी, अंजू देवी, सुमन देवी, गौरी शंकर, नितिन शर्मा, नवनीत शर्मा, पवन कुमार, मक्खन गुर्जर, केदार, विजय पारीक समेत कई महिलाएं व ग्रामीण उपस्थित रहे।

कनिष्क चौहान का इंग्लैंड में शानदार प्रदर्शन के बाद ऑस्ट्रेलिया के लिए चयन

शाह सतनामजी बॉयज कॉलेज में भव्य स्वागत

जयपुर टाइम्स

तारानगर(निस)। इंग्लैंड के खिलाफ भारत की अंडर-19 क्रिकेट टीम में शानदार प्रदर्शन करने वाले और हाल ही में ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए अंडर-19 टीम में चयनित सिरसा के शाह सतनाम जी बॉयज कॉलेज के युवा क्रिकेटर कनिष्क चौहान का कॉलेज में भव्य स्वागत किया गया। कनिष्क के कॉलेज पहुंचने पर डेरा सच्चा सौदा के सीनियर वाइस चेयरमैन चरणजीत इन्सां, शाह सतनामजी शिक्षण संस्थान के इंचार्ज रिटायर्ड कर्नल नरेंद्र पाल सिंह तूर, आरके चौहान, कॉलेज प्रिंसिपल डॉ. दिलावर सिंह इन्सां, स्कूल प्रिंसिपल राकेश धवन इन्सां, सेंट एमएसजी ग्लोरियस इंटरनेशनल स्कूल के डायरेक्टर प्रिंसिपल अजय धमीजा इन्सां सहित अन्य स्टाफ सदस्यों ने उनका फूलों के गुलदस्ते देकर स्वागत किया। ढोल की थाप और तालियों की गड़गड़ाहट के बीच कनिष्क को मुख्य मंच तक ले जाया गया, जहां चरणजीत इन्सां और अन्य अतिथियों ने उन्हें और उनके प्रशिक्षक जसकरण सिंह सिद्धू को टोकन ऑफ़ लव देकर सम्मानित किया। इससे पहले सिरसा क्रिकेट एसोसिएशन ने शाह सतनाम जी क्रिकेट स्टेडियम में कनिष्क के लिए एक भव्य अभिनंदन समारोह आयोजित किया, जिसमें जिला क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव डॉ. वेद बेनीवाल सहित अन्य पदाधिकारियों ने उनकी उपलब्धियों की सराहना की और सम्मानित किया। कनिष्क के इस शानदार प्रदर्शन और चयन से सिरसा और हरियाणा का नाम एक बार फिर क्रिकेट जगत में गूंज रहा है। शाह सतनाम जी क्रिकेट अकादमी और डेरा सच्चा सौदा की सुविधाओं ने एक बार फिर साबित किया कि कड़ी मेहनत और सही मार्गदर्शन से अंतरराष्ट्रीय मंच पर सफलता हासिल की जा सकती है।चरणजीत इन्सां ने कहा कि पूज्य गुरु संत डॉ. गुरमीत राम रहीम सिंह जी इन्सां ने शाह सतनाम जी शिक्षण संस्थानों में पढ़ने वाले बच्चों और खिलाड़ियों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुविधाएं उपलब्ध कराई हैं। इन सुविधाओं और पूज्य गुरु जी के आशीर्वाद से कनिष्क चौहान ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर संस्थान का नाम रोशन किया है। भविष्य में भी खिलाड़ियों को प्रोत्साहन मिलता रहेगा। शाह सतनाम जी बॉयज कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. दिलावर सिंह इन्सां ने कहा कि कनिष्क का भारत की अंडर-19 क्रिकेट टीम में शामिल होना और इंग्लैंड में शानदार प्रदर्शन करना गर्व की बात है। यह सब पूज्य गुरु जी की शिक्षाओं और उनके आशीर्वाद से संभव हुआ है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर का क्रिकेट स्टेडियम और सुविधाएं उपलब्ध कराकर खिलाड़ियों को बड़ा मंच प्रदान किया है, जिसका परिणाम है कि कनिष्क जैसे खिलाड़ी देश का नाम चमका रहे हैं। वहीं कनिष्क के प्रशिक्षक जसकरण ने भी खिलाड़ी की सफलता का श्रेय डेरा सच्चा सौदा की ओर से दी जा रही खेल सुविधाओं को दिया।

निवर्तमान अध्यक्ष ने कराई शपथ ग्रहण

कुलदीप व्यास बने अणुव्रत समिति के रतनगढ़ के अध्यक्ष

जयपुर टाइम्स

रतनगढ(निस)। अणुव्रत समिति रतनगढ़ की साधारण सभा की बैठक तेजपाल सिंह गुर्जर की अध्यक्षता में तेरापंथ भवन में आयोजित की गई। बैठक में अणुव्रत समिति के अनेक पदाधिकारियों व समिति सदस्यों की उपस्थिति रही। बैठक में अणुव्रत समिति रतनगढ़ के पूर्व अध्यक्ष वैद्य बालकृष्ण गोस्वामी, भूतपूर्व नगरपालिका रतनगढ़ के पूर्व अध्यक्ष संतोष कुमार इंदोरिया, जैन विश्व भारती के न्यासी जोधराज बैद, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के न्यासी डालचन्द बैद, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मोतीलाल तातेड आदि मौजूद रहे। नवकार मंत्र के पावन उच्चारण के साथ बैठक की शुरुआत की गई। मंगलाचरण में तारा दूगड़ व कुलदीप व्यास ने क्रमशः अणुव्रत गीत का संगान किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष तेजपाल गुर्जर ने अणुव्रत व उसके उद्देश्य व नियमों की जानकारी देते हुए धन्यवाद दिया। मंत्री रामचंद्र पारीक ने अपने कार्यकाल में सम्पादित किए गए कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया। सभी ने विगत कार्यकाल व दी गई सेवाओं के प्रति आभार व धन्यवाद प्रकट किया। पूर्व अध्यक्ष ने अपना पद विसर्जन करते हुए बैठक के मुख्य बिन्दु आगामी कार्यकाल 2025-27 के लिए नए अध्यक्ष के चयन के लिए आगे की कार्यवाही के लिए मोतीलाल तातेड को आमंत्रित किया और उनकी ओर से आगामी कार्यकाल के लिए कुलदीप व्यास का नाम प्रस्तावित किया गया। वैद्य बालकृष्ण गोस्वामी व जोधराज बैद ने उनके नाम का अनुमोदन किया। सर्वसम्मति से कुलदीप व्यास को आगामी कार्यकाल 2025-27 के लिए अध्यक्षीय पद का दायित्व प्रदान किया गया। डालम चन्द बैद ने नैतिकता व मानवीय मूल्यों की महत्ता में अणुव्रत के संकल्पों का महत्त्व बताया। निवर्तमान अध्यक्ष ने नव मनोनीत अध्यक्ष कुलदीप व्यास को शपथ ग्रहण कराई। बैठक में सुरेश मुरारका, वासुदेव चाकलान, तेजकरण सिपानी, बद्रीप्रसाद पारीक, मनोज जोशी, पूनमचंद दूगड़, जुगराज हीरावत, कुलदीप चौधरी, नथमल तातेड, मांगीलाल स्वामी, ललित चौधरी, विजय सिंह भूतोडिया, ललित मोहन शास्त्री आदि उपस्थित रहे।

राधे नाम सजा बाबा भूतनाथ का दरबार

जयपुर टाइम्स

बीदासर(निस)। कस्बे के नोखा रोड स्थित भूतनाथ मंदिर में सावन माह में प्रतिदिन अलग अलग शिवलिंग का श्रृंगार किया जाता है जिसमें शुक्रवार को प्रेमानंद जी महाराज के राधे नाम में रंगा बाबा भूतनाथ का दरबार सजाया गया। महा आरती के बाद दर्शन करने के लिए मंदिर में श्रद्धालुओ की भीड़ रही। इस दौरान मंदिर पुजारी शंकर लाल शर्मा, नरेश सारस्वत, विनोद खंडेलवाल, प्रहलाद सिंह राजपुरोहित, पं देवकीनंदन व्यास, विशाल सोनी, सूर्य प्रकाश रक्षक, मदन शर्मा, निर्भय राम सैन, तरुण शर्मा, कन्हैयालाल सैनी, संदीप, कैलाश राठौड़आदि उपस्थित रहे।

डीआरयूसीसी की बैठक में रेल समस्याओं के समाधान की मांग

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। बीकानेर मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय में डीआरयूसीसी की बैठक हुई। बैठक में मंडल रेल उपभोक्ता सलाहकार समिति के सदस्य अनिरूद्ध दायमा ने बैठक में भाग लेते हुए ट्रेन विस्तार की मांग रखी और समस्याओं के समाधान की बात की। दायमा ने सरदारशहर से जयपुर, बीकानेर से मेड़ता, बीकानेर से जयपुर वाया रतनगढ़, चूरू के रास्ते नई इंटरसिटी एक्सप्रेस, हिंसार से रामेश्वरम, हिंसार-हनुमानगढ़ से बंगलुरू और हिंसार से चेन्नई वाया रतनगढ़, लाडनूं, डेगाना के लिए नई गाड़ी शुरू करने, बीकानेर-गोहाटी को नियमित चलाने, विवेक एक्सप्रेस के फेरे बढ़ाने, बीकानेर-हरिद्वार और जोधपुर-हिंसार का समय परिवर्तन करवाने सहित कई मांगे रखी। साथ ही जंक्शन पर यात्री सुविधाओं के तहत चारों प्लेटफार्म पर लिफ्ट, एक्सलेटर, क्यूडब्ल्यूएस, वॉशिंग लाइन पुन शुरू करने, जंक्शन के सभी प्लेटफार्म पर टीनशेड की फूल लेंथ उपलब्ध करवाने सहित कई प्रस्ताव रखे। बैठक में डीआरएम गौरव गोविल, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक भूपेश यादव, वरिष्ठ परिचालन जयप्रकाश, वरिष्ठ मंडल इंजीनियर अमित जैन सहित रेलवे के उच्चाधिकारी, कर्मचारी व रेलवे उपभोक्ता सलाहकार समिति के सदस्य उपस्थित रहे।

चोरी की घटना का पर्दाफाश, हो सकते हैं कई खुलासे

घर में घुसकर चोरी करने वाले चार आरोपी खाजूवाला से गिरफ्तार

जयपुर टाइम्स

सादुलपुर(निस)। पुलिस ने घर में घुसकर चोरी करने वाले चार आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। आरोपियों की पहचान करतार सिंह, हरदीप कुमार, प्रवीण सिंह और रामस्वरूप के रूप में हुई है। ये आरोपी बीकानेर के अलग- अलग इलाकों के निवासी हैं और उनके खिलाफ चोरी के अन्य मामले भी दर्ज हैं। पुलिस ने बताया कि 27 जुलाई को रतनपुरा निवासी राजूराम ने थाने में मामला दर्ज कराया था कि रात्रि को उनके घर में लोगों ने घुसकर चोरी की वारदात को अंजाम दिया है। चोर घर से सोने-चांदी के आभूषण सहित नकदी पर हाथ साफ कर गए थे। हेडकॉन्स्टेबल सुनील के नेतृत्व में टीम ने चोरों का पीछा करते हुए बीकानेर के खाजूवाला से आरोपियों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने बताया कि करतार सिंह पुत्र धर्मदास बावरी उम्र 57 साल निवासी चक 5 एमजीएम पुलिस थाना दंतोर जिला बीकानेर, हरदीप कुमार पुत्र तीर्थराज बावरी उम्र 23 साल निवासी चक 01 केएलएम पुलिस थाना रावला मंडी, प्रवीण सिंह पुत्र राम सिंह उम्र 35 साल निवासी वार्ड नंबर 05 13 डीओएल रावला मंडी पुलिस थाना रावला मंडी और रामस्वरूप पुत्र बनवारीलाल बावरी उम्र 46 साल निवासी 13 एलएनपी पुलिस थाना चुनावड हाल निवासी 1 केजेडी पुलिस थाना खाजुवाला जिला बीकानेर को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने बताया कि आरोपियों पर चोरी के अन्य मामले भी दर्ज हैं और चोरियों के खुलासे की भी संभावना है।

बाइक सवार घायल, जयपुर रैफर

जयपुर टाइम्स

अजीतगढ़(निस)। कस्बे के शाहपुरा सड़क मार्ग पर स्थित धाराजी शमशान घाट के पास शनिवार की शाम दुर्घटना में एक बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गया जिसको जयपुर रैफर किया गया। सहायक थानाअधिकारी बलवीर सिंह ने बताया कि झाड़ली की खेरवा की ढाणी निवासी हरलाल 36 सेना में कार्यरत है, वह छुट्टी पर अपने गांव आया हुआ था। शनिवार शाम वह शाहपुरा की तरफ से बाइक से अजीतगढ़ की तरफ आ रहा था तो अचानक किसी वाहन की टक्कर से वह घायल हो गया। सूचना पर पहुंची 108 एंबुलेंस ने घायल को तुरंत अजीतगढ़ के उप जिला अस्पताल में उपचार के लिए भर्ती कराया। स्थिति गंभीर होने के कारण चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार कर घायल को जयपुर रैफर कर दिया।

जिला प्रवक्ता तिवाड़ी का कार्यकर्ताओं ने किया स्वागत

जयपुर टाइम्स

बीदासर(निस)। अरुण तिवाड़ी को भाजपा जिला प्रवक्ता बनाए जाने पर कार्यकर्ताओं ने माला साफा पहनाकर स्वागत किया। इससे पूर्व तिवाड़ी पूर्व में दो बार भाजपा मंडल अध्यक्ष भी रह चुके हैं। जिला प्रवक्ता का दायित्व मिलने पर तिवाड़ी ने पार्टी के शीर्ष नेतृत्व का आभार जताया। इस मौके पर पार्षद ललित माली, सांवरमल सेन, हेमंत नाथ, शिवरतन दर्जी, सुरेंद्र सुथार, सुभाष तेजस्वी, जयप्रकाश दर्जी, कमल माली, गुलाबसिंह बिका, श्रीकृष्ण तेजस्वी, कन्हैयालाल सोनी,आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

पूर्व विधायक ने पंडितपुर में किया पौधरोपण

जयपुर टाइम्स

रतनगढ़(निस)। कस्बे के समीप महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय पंडितपुर में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्व विधायक अभिनेश महर्षि ने किया। पूर्व विधायक महर्षि ने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के 'हरियालो राजस्थान' अभियान की सराहना की। उन्होंने बताया कि इस वर्ष 10 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है और अगले 5 वर्षों में 50 करोड़ पौधे लगाकर पूरे प्रदेश को हरा-भरा बनाने का संकल्प लिया गया है। उन्होंने हीरावत परिवार के इस पुनीत कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि उनके सहयोग से पर्यावरण संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है।कार्यक्रम में मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी संदीप व्यास, एसएमसी अध्यक्ष शंकर लाल शर्मा, भामाशाह प्रेरक चतुर्भुज गोस्वामी, हीरावत परिवार के प्रतिनिधि जुगराज हीरावत, गौड़ ब्राह्मण सेवा समिति के अध्यक्ष जयप्रकाश ताम्रायत और मंत्री सुरेंद्र कुमार हारित सहित कई लोग मौजूद रहे। विद्यालय के संस्थाप्रधान नरेंद्र सांकृत्य ने सभी अतिथियों और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। अभियान में स्थानीय युवक संघ, गौड़ ब्राह्मण सेवा समिति और विद्यालय स्टाफ के सदस्यों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया।

शेखावाटी जयपुर टाइम्स

जयपुर, रविवार
3 अगस्त, 2025

नालियों के अभाव में जलभराव से दुकानों- मकानों में दरारें, जमीं में धंसा कुआं

दस माह पहले हटा अतिक्रमण हटा, नालियां अभी भी नहीं बनी

जयपुर टाइम्स

श्रीमाधोपुर(निस)। श्रीमाधोपुर- अजीतगढ़ स्टेट हाइवे स्थित मूंडरू के नागरिकों के लिए बारिश के दिनों में जीना आसान नहीं है। क्योंकि यहां चप्पे - चप्पे पर नालियां जलभराव से अवरुद्ध है। पानी निकासी के अभाव में गणगौरी चौक में कुआं जमीन में धस गया। बगल की दुकानों में दरारें आ गई। कुछ दिन ओर बारिश यूं ही जारी रही तो कई पुरानी हवेलियां व दुकानें गिर सकती है। उल्लेखनीय है कि बस स्टैंड से गणगौरी चौक तक सड़क निर्माण में आड़े आ रहे अतिक्रमण को हटा सड़क तो बना दी। लेकिन अतिक्रमण हटने के दस माह बीत जाने के बाद भी सड़क के बगल में नालियों का निर्माण नहीं हो सका। अतिक्रमण हटाने की कारवाई के दौरान तोड़ा गया मलबा आज भी सड़क के बगल में जमा पड़ा है। जिससे गंदे पानी की निकासी नहीं हो पा रही। कस्बे में बहने वाला पानी लोगों के घरों में घुस रहा है, जिससे लोगों का जीना दूभर हो रहा है। डेढ़ साल पहले श्रीमाधोपुर अजीतगढ़ स्टेट हाइवे स्थित मूंडरू बस स्टैंड से खेजरौली सड़क सीमा तक डामरीकृत सड़क स्वीकृत हुई थी। बस स्टैंड से गणगौरी चौक तक करीब डेढ़ किमी लंबाई में सीसी सड़क का निर्माण होना था। अतिक्रमण के चलते सीसी सड़क का निर्माण नहीं सका था। छह माह पहले प्रशासन ने सड़क निर्माण में आ रहे 33 फिट चौड़ाई में कच्चे व पक्के मकान तोड़कर सीसी सड़क का निर्माण तो कर दिया। लेकिन दस माह बीत जाने के बाद भी नालियों का निर्माण नहीं हो सका। जिसके चलते गंदे पानी की निकासी लोगों के लिए सरदर्द बन चुकी है। लोगों का कहना है कि सड़क बनने से गांव में आवागमन की राह तो आसान हुई है। लेकिन नालियां बने तो गंदे पानी से निजात मिले।

ग्रामीणों ने किया विरोध प्रदर्शन

गणगौरी चौक स्थित सड़क के बगल में बना एक कुआं जलभराव से धंस गया। बगल में बने मंदिर के नीचे गहरी खाई हो गई। वहीं बगल में स्थित दो दुकानों में दरारें आ गई। जिससे दुकानें कभी भी गिर सकती है। लोग भय के माहौल में जी रहे है। दुकान खाली कर लोगों को पलायन करना पड़ रहा है। ग्रामीणों ने प्रशासन के खिलाफ जमकर विरोध प्रदर्शन किया।

पुरानी हवेलियों से हादसे की आशंका

अतिक्रमण तोड़ने के दौरान करीब 70 साल पुरानी हवेलियों को प्रशासन ने तोड़ने की कारवाई की। इससे हवेलियां अब खंडहर के रूप में झूल रही है। जो कभी भी गिर सकती है। जिससे हर समय हादसे की आशंका बनी रहती है।

संक्रमण का बढ़ा खतरा

नाली निर्माण के अभाव में जगह - जगह कचरे के ढेर लगे है और गंदे पानी की निकासी नहीं हो रही। सड़क गंदे पानी का दरिया बनी हुई हैं। दूषित पानी घरों में जमा हो रहा है। जिससे संक्रमण का खतरा बना रहता है। ग्रामीणों का कहना है कि संपूर्ण गांव का पानी छाजू वाला जोहड़ में इकट्ठा होता है। अब नालियों के अभाव में पानी सड़क के बगल में नालियों में जमा हो गया है।

इनका कहना है

सार्वजनिक निर्माण विभाग ने सीसी सड़क के बगल में कई जगह इंटरलॉक नहीं लगाए। नालियों के निर्माण पंचायत के पास बजट नहीं था। वर्ष 2025- 26 के वार्षिक प्लान में नाली निर्माण के प्रस्ताव तैयार कर पंचायत समिति को भेजे गए है। बजट आवंटित होते ही नालियों का निर्माण शुरू किया जाएगा।

सुमित्रा देवी, सरपंच ग्राम पंचायत मूंडरू।

जेट और सीयूईटी के परिणाम में सीसीए का डंका

जयपुर टाइम्स

रींगस(निस)। सीसीए शिक्षण संस्थान समूह की ओर से संचालित स्वर्णिम कॅरियर इंस्टिट्यूट इकाई में कृषि विज्ञान फाउंडेशन के विद्यार्थियों ने जेट और सीयूईटी परिणाम में सफलता के नए आयाम स्थापित किये। संस्थान सचिव डॉ अजय सक्सेना ने बताया कि सीयूईटी परिणाम में संस्थान के 20 में से 16 विद्यार्थियों का भारत के विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों में चयन होना संभावित है। साथ ही जेट परिणाम में विभिन्न विश्वविद्यालयों व कृषि महाविद्यालयों में 18 विद्यार्थियों का चयन होना संभावित है। कैटेगरी परिणाम में 12 वीं के साथ राजस्थान में छात्रा रवीना पुत्री सुरेश कुमार निठारवाल ने 15 वीं रैंक, छात्र राजेश बाजिया पुत्र मोहन लाल ने 68 वीं रैंक और छात्रा अनिता कुमारी पुत्री साधुराम ने 151वीं रैंक प्राप्त कर सफलता के नए आयाम स्थापित किए। विद्यार्थियों की इस सफलता पर संस्थान परिसर में मिठाई खिलाकर व दुपट्टा पहनाकर छात्र-छात्राओं और अभिभावकों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षक झाबर निठारवाल ने किया। संस्थान संरक्षक रमेश चंद्र सक्सेना, सह निदेशक कविता सक्सेना, रसायन विज्ञान व्याख्याता अशोक कुमावत, कृषि विज्ञान व्याख्याता कमलेश कुमार धायल, अंकित चौधरी, कृषि जीव विज्ञान व्याख्याता नरेंद्र ऐचरा, महेंद्र महला, रघुवीर सिंह तंवर सहित सभी स्टाफ सदस्यों ने छात्र-छात्राओं को बधाई दी।

बरसात के बाद परिषद ने 23 भवन मकानों को माना असुरक्षित

जयपुर टाइम्स

फतेहपुर(निस)। नगर परिषद की ओर से जर्जर हवेलियों को चिन्हित कर उनके बाहर नोटिस चस्पा कर दिया है। तीन-चार दिनों में अच्छी बरसात के बाद कस्बे के कई स्थानों पर पुरानी हवेलियों और जर्जर भावनाओं को लेकर कस्बे के लोगों ने इसकी शिकायत नगर परिषद को की थी तो वही दो पुरानी हवेलियों का हिस्सा भी पिछले तीन दिनों में गिर चुका है। कई लोगों की शिकायतों के बाद नगर परिषद प्रशासन ने शहर के विभिन्न इलाकों में 23 ऐसे मकान भवन और नोहरी हवेलिया है जिनको जर्जर और असुरक्षित भावनाओं की सूची में शामिल किया गहै। जिन पर नगर परिषद की ओर से सभी असुरक्षित भवन और मकान की दीवारों पर इनसे दूर रहने के बैनर लगाए गए हैं।

छात्रसंघ चुनाव बहाली को लेकर एनएसयूआई करेगी प्रदर्शन

जयपुर टाइम्स

फतेहपुर(निस)। प्रदेश में 2 साल से बंद छात्र संघ चुनाव को दोबारा बहाल करने की सरगर्मी अब धीरे-धीरे तेज होने लगी है। युवा नेता और एनएसयूआई के प्रदेश सचिव आकाश झाझडा के नेतृत्व में शनिवार को एनएसयूआई कार्यकर्ताओं का एक प्रतिनिधिमंडल फतेहपुर विधायक हाकम अली खान से मिला। आकाश झाझडा ने बताया कि छात्र संघ चुनाव की बहाली की मांग सिर्फ मांग नहीं बल्कि यह लोकतंत्र की मजबूती का सवाल है। 5 अगस्त को जयपुर में छात्र संघ चुनाव की बहाली को लेकर एक बड़ा और निर्णायक विरोध प्रदर्शन एनएसयूआई की ओर से किया जाएगा। जिसमें पूरे प्रदेश के कांग्रेस और एनएसयूआई के कार्यकर्ता हजारों की तादाद में शामिल होंगे। इस प्रदर्शन को लेकर शनिवार को क्षेत्रीय विधायक हाकम अली खान को इस आंदोलन का निमंत्रण पत्र देकर पोस्टर का विमोचन भी करवाया गया। इस दौरान एनएसयूआई के दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

आमजन करें पुकार, नहीं सुन रही सरकार

नरोदडा, ढोलास व शिवराना का बास में विज्ञान संकाय नहीं होने से विद्यार्थी परेशान

जयपुर टाइम्स

लक्ष्मणगढ़(निस)। उपखंड के नरोदडा, ढोलास व शिवराना का बास के होनहार विद्यार्थियों का डॉक्टर व इंजीनियर बनने के सपनों को पंख नहीं लग पा रहे हैं। वजह है गांव के दोनों ही राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में विज्ञान संकाय नहीं होना। इससे होनहार विद्यार्थी या तो विज्ञान की पढ़ाई छोड़ने को मजबूर हैं या उनको पढ़ने के लिए अन्यत्र भटकना पड़ता है। ग्रामीण वर्षों से इस विषय की मांग कर रहे हैं। कांग्रेस की सरकार में विद्यालय विकास समिति ने पत्र लिखकर निवेदन किया था। इसके बाद भी न तो सरकार ने कोई ध्यान दिया और न ही विभाग इस समस्या को लेकर गंभीर हैं। ग्राम पंचायत की ओर से भी अभिशंसा प्रेषित की गई थी। इससे ग्रामीणों में सरकार और शिक्षा विभाग के प्रति रोष व्याप्त है। अभिभावकों ने बताया कि सरकार व जनप्रतिनिधियों की उपेक्षा से गांव के होनहारों के हौंसले टूट रहे हैं। गांव में संचालित दोनों ही उच्च माध्यमिक विद्यालयों की बोर्ड परीक्षाओं में शत प्रतिशत परिणाम रहता है। तत्कालीन प्राचार्य सुरेश पूनिया के कार्यकाल में पड़ी शत प्रतिशत परिणाम की परंपरा आज भी कायम है। दोनों में ही चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के अलावा पर्याप्त स्टाफ है। फिर भी विज्ञान संकाय खोलने में कंजूसी की जा रही है। सरकार यदि यहां विज्ञान व वाणिज्य संकाय खोल दे तो पंचायत सहित आसपास के छात्रों को फायदा होगा और नामांकन में भी वृद्धि होगी। बच्चों को इधर उधर चक्कर लगाने से मुक्ति मिल जाएगी एवं उनके समय व धन की बर्बादी नहीं होगी।

इनका कहना है

ग्राम पंचायत की ओर से विज्ञान संकाय खुलवाने की मांग लगातार की जा रही है। इसको लेकर पूर्व सरकार के समय भी मांग पत्र भेजा गया था। वर्तमान सरकार को पुनःमांग पत्र भेजा है। उम्मीद है इसको लेकर जिम्मेदार ध्यान देंगे और ग्रामीणों की मांग पूरी होगी।

महेंद्र सिंह ख्यालिया प्रशासक (सरपंच)।

इतने बड़े आलीशान भवनों में नामांकन कम होने से नीरसता प्रतीत होती है। ग्रामीणों की थोड़ी सी जागरूकता से स्कूलों में रौनक आ सकती है। स्टाफ सदस्य अभिभावकों से निरंतर संपर्क में रहते हैं।विभाग एवं सरकार से पुनःपत्राचार करेंगे।

प्रदीप दाधीच, ग्रामीण

2 करोड़ की लागत से बना है बालिकाओं के लिए भवन

विद्यालय विकास समिति के रामेश्वर सिंह ने बताया कि ग्रामीणों व भामाशाहों के सहयोग से मुख्यमंत्री जनसहभागिता योजना में 2 करोड़ रुपए की लागत से आलीशान भवन बन गया है लेकिन संकाय के अभाव में नामांकन नहीं हो पा रहे हैं और भवन का उचित सदुपयोग नहीं हो पा रहा है। रामकुमार थानेदार ने बताया कि यदि 500 बालिकाओं का नामांकन हो जाता है तो यहाँ गर्ल्स कॉलेज भी बन सकती है। उन्होंने गुहार लगाई है कि कम से कम हर परिवार का एक बच्चे का दाखिला एक वर्ष के लिए करवाएं और यदि सुधार महसूस न हो तो पुनः इंग्लिश मीडियम में भेज दें।

नकदी खाद और पेपर लीक पर खुलकर बोले किरोड़ी

मंत्री किरोड़ीलाल मीणा ने रामसीरिया कोठी में की पूजा अर्चना

जयपुर टाइम्स

फतेहपुर(निस)। राजस्थान सरकार में खाद्य आपूर्ति मंत्री किरोड़ी लाल मीणा ने बीती रात्रि को कस्बे के रामसीसरिया कोठी में पहुंचकर पूजा अर्चना की।आरसीए के पूर्व सचिव सुभाष जोशी के निर्देशन में पं.शंभू ढण्ड, पं.जयराम नागौरी,पं.गजानंद तिवाडी, पं.कैलाश चन्द्र इंदोरिया, पं.विकास इंदोरिया, पं.संदीप जिनडा,पं.राकेश महर्षि, पं.नंदू ढण्ड, पं.महेन्द्र शर्मा, पं.दिनेश मिश्रा आदि ने किरोड़ीलाल मीणा को रूद्राभिषेक व पूजा अर्चना करवाई। वही लोगों ने किरोड़ी लाल मीणा का स्वागत और सम्मान भी किया। इस दौरान किरोड़ी लाल मीणा ने कहा कि कभी राजनीति के माध्यम से लोग देश के जवानों की किसानों और आम लोगों की सेवा का माध्यम समझा करते थे, लेकिन आजकल कुछ मौका परस्त लोगों के राजनीतिक में आने के बाद राजनीतिक को एक धंधा कोमर्शियल बन चुका है जिससे जरूरतमंद लोगों को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है। पेपर लीक मामले में भी किरोड़ी लाल मीणा ने कहा कि पिछले राज में 18 में से 17 पेपर लीक हुए इसके बाद में खुद सड़कों पर खड़ा रहा लेकिन पिछले राज में उन्होंने हमारी नहीं सुनी। इस सरकार में आप देखे कि पेपर लीक मामले में 57 सब इंस्पेक्टर और दो आरपीएससी मेंबर जेल की हवा खा रहे हैं। अभी भी सरकार को सचेत रहना पड़ेगा क्योंकि ऐसे लोगों को सजा दिलवाने के लिए बहुत सतर्क रहने की आवश्यकता है। प्रदेश में कई जगह लोग नमक से खाद बना रहे हैं आप सोचिए जब नमक खेत में गिरेगा तो खेत की भूमि बंजर हो जाएगी। ऐसे स्थान पर लगातार छापेमारी की जा रही है, जिसके बाद 11 अधिकारियों को सस्पेंड किया जा चुका है तो वही 47 बदमाशों अधिकारी और लुटेरों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की जा चुकी है आप जानते हो ऊपर से लेकर नीचे तक यह एक बहुत बड़ा तंत्र है जिसे तोड़ने में बहुत समय लगता है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है जैसे कि मैं अकेला ही लड़ रहा हूं। आपको पता है, इसमें भी मिलने जुलने वाले राजनेताओं का प्रेशर और दबाव रहता है, इस दबाव में से निकलकर काम करना बहुत चुनौती भरा कार्य है। पूरे प्रदेश में अधिक बरसात होने के सवाल पर किरोड़ीमल मीणा ने जवाब देते हुए कहा कि इस बार प्रदेश में औसत से अधिक बरसात हो चुकी है 13 ऐसे जिले हैं, जहां पर बहुत ज्यादा बरसात हुई है जिसके कारण किसानों की फसले भी खराब हुई है, टीम को लगाकर मौका मुआयना करवाया जा रहा है जिन किसानों की फैसले खराब हुई है उन्हें मुआवजा दिलाने का भी काम करेंगे।

श्री रामचरितमानस के पाठ शुरू

रामचरित मानस पाठ सुनने से मनुष्य के सब पापों का होता है नाश

जयपुर टाइम्स

अजीतगढ़(निस)। कस्बे के कौशल्या दास मंदिर में शनिवार से 108 आसन पर सामूहिक रूप से रामचरितमानस पाठ का आयोजन शुरू हो गया है। इस आयोजन में कई विद्वान संत उपस्थित हुए। आयोजक हरिशंकर, गौरीशंकर हरितवाल ने बताया कि शनिवार से मंदिर परिसर में 108 आसन पर सामूहिक रूप से संगीतमय रामचरितमानस का आयोजन शुरू हुआ जिनका समापन रविवार को होगा। इस अवसर पर विशाल भंडारे का आयोजन भी किया जाएगा व सामूहिक सत्संग भी किया जाएगा। त्रिवेणी धाम के संत राम रिछपाल दास महाराज ने उपस्थित सैकड़ो श्रद्धालुओं को प्रवचन देते हुए कहा कि हर व्यक्ति धार्मिक कार्यक्रमों में बढ़ चढ़ कर भाग ले, साथ ही ऐसे आयोजनों में अपनी मेहनत की कमाई में से कुछ हिस्सा खर्च करे जिससे पुण्य की प्राप्ति हो सके। डाकोर धाम के संत राम रतन दास महाराज ने प्रवचन के दौरान कहा कि रामचरित मानस के पाठ सुनने से मनुष्य के सब पापों का नाश होता है साथ ही कल्याण भी होता है। उन्होंने कहा कि शास्त्रों में कहा गया है की राम नाम की महिमा अपरंपार है, साथ ही धार्मिक कार्यक्रमों की आयोजनों से ही हमारी संस्कृति पल्लवित होती है ऐसे आयोजनों से लोगों का जुडाव बढ़ता है और राम नाम सभी पापों से मुक्ति का साधन है। इस अवसर पर कौशल्या दास मंदिर के संत राम अनुग्रह दास महाराज, चिमनपुरा धाम के संत रामशरण दास महाराज, हथौरा धाम के संत प्रभु दास महाराज, वृंदावन के संत सुदर्शन दास महाराज, भीवा दास महाराज ने भी प्रवचन दिया। इस अवसर पर आयोजकों ने सभी संतों का सम्मान किया और अंत में विदाई दी गई। इस अवसर पर आयोजक हरिशंकर हरीतवाल, गौरीशंकर हरीतवाल, सीए नितिन शर्मा, मक्खनलाल गुर्जर, पवन कुमार हरीतवाल, नवनीत भारद्वाज, सांवरमल, केदार, उमेश, रामावतार समेत सैकड़ो श्रद्धालु उपस्थित रहे।

11 वर्ष पुराने हत्या के मामले में अभियुक्त बरी

जयपुर टाइम्स/तारानगर(निस)। *तारानगर के न्यायालय अपर जिला व सैशन न्यायाधीश संतोष कुमार मीणा ने 11 वर्ष पुराने हत्या के मुकदमें में अभियुक्त को बरी किया। मुल्जिमों की ओर से पैरवी कर रहे अधिवक्ता राजेन्द्रसिंह राठौड़ न्यांगली ने बताया कि परिवादी मृतक मैनपाल ने पुलिस को पर्चा बयान दिया कि 30 जनवरी 2014 को 1.30 बजे मैं खेत में गया हुआ था जहाँ पर मेरे ताउ कुरड़ाराम हरिसिंह, रणजीत, मीरा, राधा, कृष्ण कुमार आदि जो पहले से ही खेत में थे, उन्होंने मेरे साथ मारपीट की और मेरे पर केरोसिन तेल छिड़कर कर आग लगा दी, जिससे मेरा शरीर काफी जल गया। मेरी पत्नी शंकुतला ने मुझे अस्पताल में भर्ती करवाया। प्रकरण प्रथम सूचना रिपोर्ट 30/2014 दर्ज हुआ। पुलिस ने अनुसंधान किया तो मामला झूठा पाया गया, जिस पर पुलिस ने अदमवकु (झूठ) एफआर न्यायालय में प्रस्तुत की। मृतक मैनपाल की पत्नी ने न्यायालय में नाराजगी याचिका पेश की, जिस पर न्यायालय की ओर से अभियुक्त के विरूद्ध प्रसंज्ञान लेकर 21 मार्च 2018 को अभियुक्त के विरूद्ध उपरोक्त धाराओं में प्रकरण दर्ज किया गया। अभियुक्त उच्च न्यायालय से अग्रिम जमानत पर चल रहे थे।*